सत्यं वद — धर्मंचर



ऋग्वेद — यजुर्वेद

"सर्वाधिकार सुरक्षित हैं"

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो-देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

"अतिथि यज्ञ प्रसाद"

लेखक—

श्री पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

प्रकाशक—

श्री ला० हरी कृष्ण लाल CONTRACTOR

(रोपड़)

वैशाख सं० २०१२

प्रथम बार १०००

दूसरी बार १०००

सामवेद — अथर्ववेद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विषय सूची

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri



समर्पण

त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पये ।

जगन्नियन्ता जगदीश की असीम अनुकम्पा से महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती द्वारा प्रेरित पंच महायज्ञ विधि की ४१००० प्रतियां अपने प्रभु प्रेरित विचारों के रंग में रंग कर आप की सेवा में भेंट कर चुका हूँ। इस वर्ष चन्दौसी जिला मुरादाबाद में एक मास आदर्शमौन व्रत के पुण्य दिनों में उसी सच्चिदानन्द की कृपा से अतिथि-यज्ञप्रसाद लिखने की प्रेरणा मिली और यह चतुर्थ प्रसाद भी तैयार हो सका।

प्रभु की प्रेरणामयी रचना उन्हीं के पवित्र चरणों में विनम्र भाव से समर्पण है। इस पवित्र कार्य में सहयोग देने वाले विशेष रूप से श्री महात्मा सत्यभूषण जी आचार्य वानप्रस्थी तथा इस के प्रकाशकों को प्रभु आशीर्वाद दें। मेरे व्रत में मेरे प्रेमी सत्संगी श्री रामलाल जी इंजीनियर पावरहाउस चंदौसी जिला मुरादाबाद (झंग मघियाना निवासी) तथा उन के परिवार ने जो सेवा की और मेरे व्रत के निर्विघ्न समाप्त होने से जो सहायता की उस के लिये उन सब का भी धन्यवाद गाता हूँ और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह उन्हें आशीर्वाद दे शारीरिक, मानसिक, और आर्थिक उन्नती में मालामाल करे।

१—जिन सज्जनों के हाथ यह पुस्तक आवे वह इस का मूल्य अवश्य चुकावें अस्तु किस रूप में, कि वह प्रतिज्ञा करें कि न्यून से न्यून दस सभ्य भाइयों को यह पुस्तक पढ़ायें ऐसा करने पर उन्हें प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

२—प्यारे प्रेमी ! पुस्तक लेते समय मुझ से पुस्तक पर पुस्तक का मूल्य न लिखा हुआ देख कर मूल्य पूछा करते हैं उन की सेवा में निवेदन है कि अग्नि में जो वस्तु (हवि) डाली जाती है वह विश्व में बांट देती है। सन्यास अग्नि रूप होता है। मै जब पुस्तक लिख कर छपवाना चाहता हूँ प्रभु कृपा से जिन प्यारों के पास भगवत् पूंजी होती है वह सात्विक भावना से भेज देते हैं पुस्तक छप कर प्रेमियों की सेवा में भेंट कर दी जाती है। जो प्रेमी ऐसे मंगल कार्यार्थ अपनी पवित्र कमाई का भाग भेजना चाहें वह निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं:—

ब्रह्मानन्द स्वामी
C/o भारत ग्लास कम्पनी
सदर बाज़ार देहली

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्री लाला दयालदास जी खुराना



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दूसरा संस्करण

पाठक गण ! परम पिता प्रभु की अपार दया से "अतिथि यज्ञ प्रसाद" प्रथम संस्करण यज्ञ प्रेमी भक्तों ने प्रसाद रूप में ग्रहण किया, शेष कुछ प्रतियां पड़ी थीं । अकस्मात् ला० हरि कृष्ण लाल Contractor (रोपड़) मुझे मिले । बड़ी श्रद्धा और सात्त्विक भावना से मुझ को कहा, "महाराज ! आप कभी भी कोई सेवा मुझे नहीं बतलाते" मैंने उन की सद्भावना को देख कर कहा, "अतिथि-यज्ञ-प्रसाद" पुस्तक अब समाप्त है । यदि आप की इच्छा हो तो इसे अपने पिता जी के नाम पर छपवा दो ।" तो उस ने सहर्ष नम्रता से कहा "अवश्य आप छपवायें । मुझे पुस्तक का बिल भिजवा दें । मैं तत्काल सेवा में धन भेज दूँगा ।"

सज्जनो ! जिस के पास भगवत् पूंजी होती है । वह ही उस के अर्पण करता है और अपने भावी जीवन को उज्ज्वल बनाता है।

अतः यह पुस्तक श्री ला० हरिकृष्ण लाल के पिता श्री ला० दयाल दास जी खुराना Retired जिलेदार (पानीपत) के स्मरणार्थ प्रकाशित हुई है। प्रभु देव श्री ला० हरि कृष्ण लाल को आशीर्वाद दें कि ऐसे निष्काम यज्ञों में अपनी पवित्र कमाई को लगाते हुए अपना जीवन सफल करें और उन की प्रवृत्ति धर्म कार्यों में लगाए रक्खें ।

भवदीय

स्वामी ब्रह्मानन्द

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

❀ ओ३म् ❀

अतिथि-यज्ञ-प्रसाद

—:-०-:—

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ॥

॥ यजु ३० । ३ ॥

हे (देव) उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव युक्त (सवितः) उत्तम गुण कर्म स्वभाव में प्रेरणा देने वाले परमेश्वर ! आप हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुष्ट आचरण व दुःखों को (परासुव) दूर कीजिए। और (यद्भद्रं) जो कल्याणकारी धर्म युक्त आचरण व सुख हैं, (तन्न आसुव) उनको हमारे लिए अच्छे प्रकार उत्पन्न कीजिये।

प्रातः समय—राम लाल तथा सत्यपाल दोनों भाई जागे और दोनों ने मिलकर प्रभु की अमृत वेद वाणी के निम्न पांच मन्त्रों द्वारा प्रार्थना की:—

ओ३म् प्रात-रग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रात-मित्रा वरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रंहुवेम॥ १ ॥

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रम दितेर्योविधर्त्ता। आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चि द्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥ २ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः । भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ ३ ॥

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् । उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवाना ॐ सुमतौ स्याम ॥ ४ ॥

ओ३म् भग एव भगवांश अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम । तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ॥ ५ ॥

यजु० ३४—३४ से ३८ तक ॥

चारपाई से उठ कर माता-पिता को नत मस्तक हो कर नमस्कार किया । लोटा, अंगोछा और दातुन उठा घर से चल निकले । 'जय जय पिता परम आनन्द दाता' भजन गाते हुए नदी के तीर पर पहुँचे । शौच, स्नान, जाप, सन्ध्या से निवृत्त हो कर शान्ति पाठ किया । अकस्मात् मनमोहनी, मधुर सरस वाणी की ध्वनि कानों में पड़ी । चौंक कर देखा तो कुछ दूर नदी तट पर भगवे वेश में एक सन्त महात्मा बैठे हैं । दोनों भाई वहां पहुँचे, तो देखा कि सन्त महात्मा आँखें मूंदे, मस्ती में गीत गा रहे हैं । वे दोनों चुप-चाप पीछे जा वहां पर बैठ गये और आंख मूंद गीत का आनन्द लेने लगे ।

———

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ गीत ॥

तुझ को पिता बिसार कर, बैठा हूँ मैं पछता रहा ।
मिलता न कोई आसरा, बैठा हूं मै पछता रहा ॥
संकट के टूटे पहाड़ हैं, कांटों वाले मानों झाड़ हैं ।
रस्ता को आज भूल कर, जङ्गल में हूं भटका रहा ॥
करुणा की दृष्टि कीजिए, सुधि हमारी लीजिये ।
दुखिया की सुनता पुकार है, दुखड़ा हूं तुझको सुना रहा ॥
खाली तेरे दर से न गया, जो जिसने मांगा' सो मिल गया ।
दिल की सफाई चाहिये, कर्मों का फल तू चुका रहा ॥
जैसा किसी का देखे अमल, वैसा ही देता उस को फल ।
देश, पिता तेरे न्याय में, फर्क न कोई आ रहा ॥
जिसने तुझे पुकारिया, हृदय में तुझ को पा लिया ।
सन्तप्त हृदयों को शान्त कर, गुणवाद तेरे हैं गा रहा ॥

प्रार्थना

ओ३म् । इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडयो । त्वामवस्युराचके ॥

॥ य० । अ० २ । म १ ॥

हे प्रभो ! तू मेरी पुकार सुन । तूने मुझे यह अमूल्य मनुष्य जन्म दान किया, परन्तु मैंने नाना प्रकार के कुसंस्कारों के कारण इस जन्म में अनेक पाप किये होंगे, किन २ को गिनाऊं ? प्रभु तू सबकुछ जाननहार है । मै बहुत पतित हो चुका था, तूने बड़ी कृपा की, अपने प्यारे आश्रित के द्वारा मुझे सन्मार्ग दिखाया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

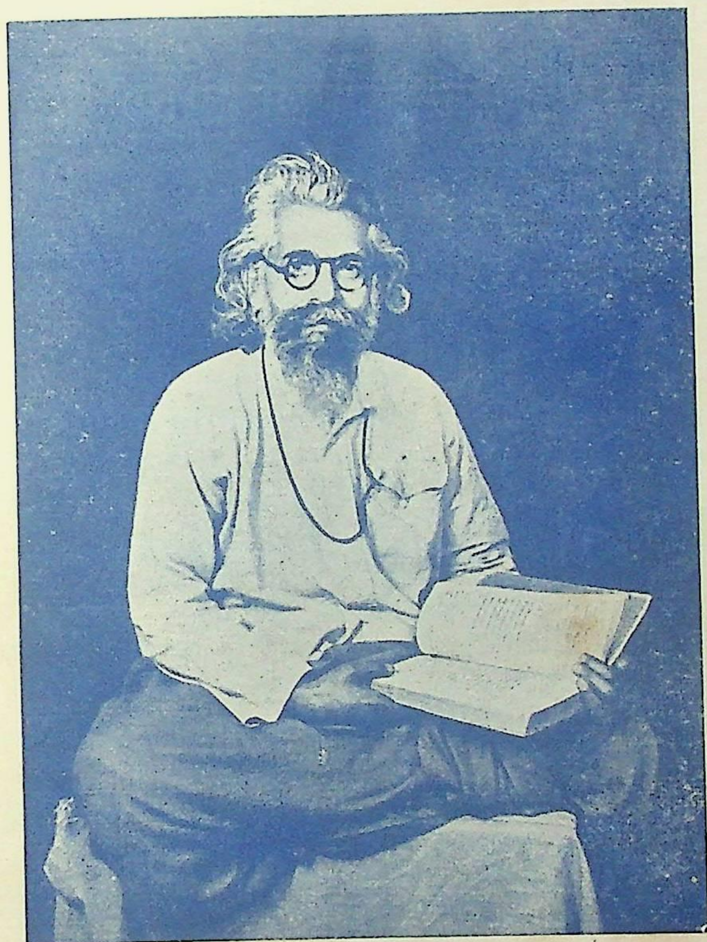
तूने अपनी प्रेरणा से इस वेश को धारण कराया । नाथ ! मैं इस पवित्र वेश के कर्त्तव्य को तेरे प्यारों द्वारा सुनता हुआ भी आचरण से कोसों दूर हूँ । अब मुझ पर कृपा कर । मुझे वह बुद्धि तथा शक्ति प्रदान कर, जिस से मैं इस वेश के कर्त्तव्य पर आचरण करूं, और तेरी अमृत गोदी का वास प्राप्त करूं ।

॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

अब राम लाल और सत्यपाल दोनों भाई खड़े हो कर सन्त महात्मा के सन्मुख आए । नतमस्तक हो कर नमस्कार किया और घुटनों के बल, बैठकर प्रार्थना की । महाराज ! हमें तो पता नहीं था, कि आप यहां पर पधारे हुए हैं, नहीं तो श्री चरणों में आते । किन्तु अब प्रभु की अपार कृपा से हमें महाराज जी के दर्शन हो गए और गीत तथा प्रार्थना सुनने का सुअवसर प्राप्त हो गया । (करबद्ध प्रार्थना की) भगवन् ! कृपया भक्ति-रस का उपदेश पान कराएँ ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ॥



श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उपदेश १

महात्मा जीः--

प्यारे ! भक्ति रस तो भक्त ही प्राप्त कर सकता है यह यथार्थ बात है और भक्ति श्रद्धा-त्याग के बिना नहीं हो सकती । जब तक मनुष्य त्याग नहीं करता, तब तक भक्त नहीं बन सकता । जो २ महान् पुरुष संसार में हुये हैं, वे भक्त ही थे । भक्त संसार से छुटकारा नहीं चाहता, वह तो सदैव भगवद्भक्ति चाहता है और साथ ही ज्ञान चाहता है, जो भगवान् की निज सम्पत्ति है। और छुटकारा ज्ञान से होता है, वह जो प्रकृति तथा परमेश्वर के भेद का ज्ञान है, सो सच्चा ज्ञान है । जब तक मनुष्य को ऐसा ज्ञान नहीं होता, विषय वासनाओं में फंसा रहता है। मनुष्य को तो परमेश्वर की भक्ति से ही ज्ञान होगा । अब ज्ञान कर्म के बिना व्यर्थ है। क्योंकि मनु भगवान् ने कहा है किः—"**विद्या तपोभ्या भूतात्मा**" अर्थात् जीवात्मा तप और ज्ञान से शुद्ध होता है, क्योंकि मनुष्य जन्म कर्म योनि है, कर्म किये बिना छुटकारा नहीं मिल सकता । प्रत्येक मनुष्य महान् बनना चाहता है अतः महान् कर्म करना चाहिये । वह कौन सा महान् कर्म है ? वह है "**यज्ञ**"

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म तस्मात् मनुष्येभियो प्रह ॥

शतपथ ब्राह्मण

अर्थात् यज्ञ ही श्रेष्ठ कर्म है अतः मनुष्यों को अवश्य करना चाहिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्यारे ! चारों वेदों ने भी 'पंच महायज्ञों के करने का आदेश किया है ।

१. ब्रह्म यज्ञ, २. देव यज्ञ, ३. पितृ यज्ञ, ४. अतिथि यज्ञ, ५. बलिवैश्वदेव यज्ञ ।

१. ब्रह्म यज्ञ--इस यज्ञ से अनेक लाभ हैं । मनुष्य को इस यज्ञ द्वारा मनुष्य योनि अवश्य मिलेगी। इस के अतिरिक्त आध्यात्मिक लाभ तो अनेक हैं । ब्रह्मयज्ञ में जप, स्तुति, प्रार्थना, उपासना, सत्सङ्ग तथा स्वाध्याय सम्मिलित हैं । मनुष्य के अन्तः करण को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार आदि कुवृत्तियों के कारण अपवित्रता और अधीनता रहती है । अतः इन सब का पृथक् २ लाभ यह है, कि उपासना से 'मन, जो मोह से अपवित्र होता है, वह पवित्र हो जाता है। स्तुति से चित्त की, प्रार्थना से अहङ्कार की, तथा जप, स्वाध्याय, सत्सङ्ग, से बुद्धि की पवित्रता होती है क्योंकि जहां बुद्धि लोभ से, मन मोह से, चित्त काम से, वाणी क्रोध से, और कान अहङ्कार से अपवित्र होते हैं ।

२. देव यज्ञ--इस से जहां बाह्य रूप से संसार के भूत प्राणियों की नीरोगता, सुख सम्पत्ति, अन्न, जल, वायु की शुद्धि होती है, वहां आध्यात्मिक रूप से सूक्ष्म शरीर की पवित्रता होने से ही आत्मिक बल बढ़ता है । विस्तार पूर्वक लेखक की "देव यज्ञ प्रसाद" पुस्तक को पढ़े ।

३. पितृ यज्ञ--इस यज्ञ से जहां उत्तम माता पिता, स्त्री, पुत्र, मित्र, तथा सेवक की प्राप्ति होती वहां आध्यात्मिक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रूप से वाणी की शुद्धि होती है। वाणी में कोमलता तथा मधुरता प्राप्त होती है ।

विस्तार पूर्वक लेखक की पितृ-यज्ञ-प्रसाद पुस्तक को पढ़ कर लाभ उठाइये। इतना उपदेश करके शान्ति पाठ किया, तो राम लाल तथा सत्यपाल ने फिर प्रार्थना की—महाराज ! कृपा करके अब हमारे घर को अपने चरणों से पवित्र कीजिये और साग दाल जो प्रभु का दिया हुआ है उसे पान करके हमारे जीवन को पवित्र बनाइये ।

सन्तमहात्मा:—प्यारे ! आज हमारे भोजन का प्रबन्ध है अभी हम यहां पर ठहरे हुए हैं फिर आप के दर्शन होंगे जब प्रभु की इच्छा होगी, भोजन पान कर लेंगे। यह उत्तर सुन कर दोनों ने नतमस्तक होकर नमस्कार किया और आज्ञा ले कर चल दिये ।

दूसरे दिन पूर्ववत् दोनों भाई प्रातः घर से चल कर शौच दातुन, स्नान, जप, सन्ध्या प्रार्थना करने के पश्चात सन्त महात्मा की शरण में पहुँचे, नमस्कार पूर्व प्रकार करके बैठ गए और प्रार्थना की कि महाराज ! कल आपने तीन यज्ञों के सम्बन्ध में उपदेश दिया था आज कृपया शेष दो यज्ञों की व्याख्या करने का कष्ट करें, और कहा महाराज ! हमने आप की पितृ यज्ञ प्रसाद पुस्तक पढ़ी, बड़ा आनन्द आया। आपने तो सोतों को जगा दिया है। सन्मार्ग दिखला दिया है।

सन्त महात्मा:—प्यारे ! आज हम आप को अतिथि यज्ञ के सम्बन्ध में कुछ बतायेंगे और कई दिन इसी पर चर्चा होगी। यदि भारतवासी इस यज्ञ को समझ लें और आचरण करें तो सब संकट दूर हो जायें ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अतिथि यज्ञ

अतिथि यज्ञ—इस यज्ञ के करने से मनुष्य को निष्कपट, गुरु मिलता है बुद्धि पवित्र होती है। पर हम अभी तक अतिथि यज्ञ को समझे नहीं हैं। अतिथि तो परमेश्वर ही है। कहावत है "मेहमान आया भगवान् आया" प्यारे! अतिथि को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है।

अतिथि कैसे हूँ

ओ३म् मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कवि प्रशस्तौ अतिथिः शिवो नः। सहस्र शृंगो वृष भस्त दोजा विश्वां अग्ने सहसा प्रास्यन्यान् ॥८॥

(ऋ० मं० ५ सू० १)

भावार्थ—वे ही अतिथि होवें जो इन्द्रियों के दमन करने और मङ्गलाचरण करने वाले धर्मेष्ठि विद्वान् जितेन्द्रिय और सब के प्रये साधन में प्रीति करने वाले और जैसे अग्नि सब को शुद्ध करने वाली है वैसे सम्पूर्ण जगत् के पवित्र करने वाले अतिथि जन हैं।

अतिथि कैसे हूं—अतिथि वह है जो परमेश्वर के वेद ज्ञान का निःस्वार्थ प्रचार,संसार के जीवों के कल्याणार्थ करता है। अर्थात् वह अपने पिता परमश्वेर का काम करने आया है। जो किसी के पुत्र की सेवा करता है तो उस के माता पिता अपने आप उस सेवा करने वाले पर प्रसन्न हो जाते हैं, उदाहरण के तौर पर यदि कोई मेरे पुत्र की सेवा सत्कार करता है, तो उसे मेरा ही पुत्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जानकर सेवा करता है। यदि कोई तिरस्कार करता है और मुझे ज्ञात हो जाय, तो मुझे उस से दुःख होना आवश्यक है। परमेश्वर तो सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी हैं उसे तो उसी समय ज्ञान हो जाता है। अथर्ववेद, कठोपनिषद् में भी आया है कि उस मनुष्य का जप, तप, दान, पुण्य आदि नष्ट हो जाते हैं कि जिस के द्वार से अतिथि खाली पेट जाता है या उस का तिरस्कार होता है।

ज्ञान परमेश्वर की निज सम्पत्ति है। धन सम्पत्ति आदि साधारण वस्तु है। जैसे पुत्र की कोई अपनी वस्तु नहीं, उस के पिता की है। जो भगवान् का काम करने आया है, उस का निरादर करने से अपना सब कुछ समाप्त हो जाता है।

शतपथ ब्राह्मण ने लिखा **"शिरो वै यज्ञस्यातिथि"** अर्थात् अतिथि ही यज्ञ का सिर है। जो विद्वानों, महात्माओं, साधु सन्तों की सेवा नहीं करता और उन की आज्ञा का पालन नहीं करता तो यज्ञ का सिर खण्डित हो जाता है।

अब सत्सङ्गी प्रेमी अधिक संख्या में आ गये । सन्त महात्मा ने अपना उपदेश आरम्भ किया।

उपदेश २

किसान जब खेत में बीज डालता है और जब बीज फूट कर अंकुर निकल आता है तो उस समय किसान कूप से जल द्वारा उसे सिञ्चित करता है तो खेती हरी भरी हो जाती है यदि कूप की कला बिगड़ जाये तो कूप के बनाने वाले कारीगर को बुलाकर उस की कला ठीक कराता है। और कारीगर अपना काम निकालने के लिये सेवा भी करता है। कूप ठीक हो जाने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पर ही वह खेती को जल दे सकता और हरा भरा कर सकता है।

२. यदि किसी बाग़ के पौधों को कीड़ा लग जाये, तो बाग़ का स्वामी किसी निपुण माली को बुलवा कर, उसका आदर सत्कार करता हुआ, प्रतिकार करता है। माली बाग़ के रुग्ण कारण को देख उपाय बताता है वैसा अनुकरण करने से बाग़ सुरक्षित हो कर उन्नति करता है।

३. यदि मशीन खराब हो जाये तो मशीन निकम्मी और बेकार हो जाती है, तब मशीन के कारीगर को बुलाकर उस को ठीक कराता है, तब मशीन चलती है और सफलता होती है।

४. यदि कारखाने का इञ्जन बिगड़ जाये, तो एक शिक्षित इञ्जीनियर को बुलवाया जाता है, वह इञ्जन के पुरज़ों को देख कर ठीक करता है तब कारखाना चलता है और स्वामी की सफलता होती हैं।

५. यदि मनुष्य स्वयं रोगी हो जाये तो वैद्यों, डाक्टरों को बुलाता है और नम्रता से प्रार्थना करता है और साथ ही धन भेंट भी करता है और विनम्र निवेदन करता है कि वैद्य महोदय! चाहे धन कितना भी व्यय हो जाय, मेरा शरीर स्वस्थ हो जाये।

प्यारे! वर्त्तमान युग में मनुष्यों का कार्य क्रम केवल यहां तक ही हो रहा है, इस से आगे नहीं। यह सब कार्य भोग विलास उत्पन्न करने के ही हैं और शरीर तक के साथ सम्बन्ध रखने वाले हैं। भला आप संसार में धनी से धनी, बलवान् से बलवान् ज्ञानी से ज्ञानी से पूछो, "क्या तू शान्त है"? उत्तर मिलेगा, नहीं। यह क्यों? कारण यह है कि ज्ञानी का ज्ञान धन कमाने के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थ, बलवान् का बल निर्बल पर शासन करने और धनी का धन निर्धन को लूटने के लिए है। कहावत है:—

१. परिवार बढ़ा, तो सत्सङ्ग छूटा।
२. व्यवहार बढ़ा, तो प्रभु छूटा।
३. बुद्धि बढ़ी, तो पर धन लूटा।
४. मान बढ़ा, तो अपना रूठा।
५. बल बढ़ा, तो निर्बल कूटा।

अन्त में यह सब कार्य शरीर के पालन पोषणार्थ हैं, केवल यहां तक मनुष्य शरीर का पुजारी है। पर वेद कहता है:—

ओ३म् वायुर निलम मृतमथेदं भस्मान्त ँ शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिवे स्मर कृतं स्मर॥
॥ य० ४० । १५ ॥

अर्थात—शरीर में आने जाने वाला जीवात्मा अमर है परन्तु शरीर का अन्त भस्म हो जाता है इस लिए हे मानव! प्रभु को याद कर सामर्थ्य प्राप्ति के लिए याद कर और अपने किये कर्मों को याद कर।

वेद ने आदेश किया कि यह तेरा शरीर अन्त को साथ जाने वाला नहीं, नाशवान् है शरीरी, जीवात्मा ने जहां तक का टिकट लिया है, वह शरीर रूपी गाड़ी को वहां तक छोड़ कर चल देगा। अतः इस नाशवान् शरीर से जब तक हो सके, ओ३म् को याद कर। शुभ कर्म कमा। गीता में लिखा है:—

अनित्यानि शरीराणि विभवोनैवशाश्वताः।
नित्यं सन्नहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्म संग्रहः॥

अर्थात्—यह शरीर सर्वदा रहने वाला नहीं, और धन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इत्यादि स्थिर रहने वाले नहीं, और मृत्यु प्रतिदिन निकट आ रही है इस लिए इन नाशवान् वस्तुओं को छोड़ कर धर्म के कार्यों में यत्न करना चाहिये ।

नीतिकार ने भी लिखा है:—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे नारि गृह-द्वारे जनः श्मशाने । देहश्चितायाँ परलोक मार्गे धर्मानुगो गच्छति जीव एकः ॥

अर्थात्-धन, भूमि, पशु, स्त्री, परिवार द्वार तक, मित्र श्मशान तक, यह शरीर चिता पर जल जायगा, आत्मा के साथ केवल धर्म ही जायगा ।

प्यारे ! वेद भगवान्, गीता, मनु महाराज और सभी ने आदेश किया है कि यह शरीर नाशवान् है, भस्म पर्यन्त है । ईश्वर जपन करो, धर्म कार्य करो । पर मनुष्य भूला हुआ है । अपने कर्त्तव्यों से कोसों दूर जा रहा है।

नाशवान् के सङ्ग से नाश हो जाना आवश्यक है । वास्तव में इस शरीर का मूल्य एक पैसा भी नहीं है जिस की पूजा के लिए दिन रात एक करके विषय विकारों का ग्रास बनता है । देखो, सुनो, सोचो:—

एक चक्रवर्ती राजा जिस के शासन से प्रजा कांपती है । जो सामने आता है भयभीत हो जाता है, निदान मनुष्यों को फांसी तक दे देता है । असंख्य प्राणियों पर राज्य करता है । यदि उस की आज मृत्यु हो जाय और उस का शव पड़ा हो और किसी निर्धन से निर्धन को बुलाओ और कहो, प्यारे ! यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चक्रवर्ती राजा की लाश है तू ले ले और चार पैसे दे दे ! क्या देगा ? नहीं, कदापि नहीं। सगे पुत्र, परिवार, स्त्री कर्मचारी आदि सब पृथक हो जाते हैं और सब कहते हैं इसे घर से निकालो, श्मशान ले चलो, यही धर्म है। वह स्त्री जो प्राणनाथ कहकर पुकारती थी वह पुत्र जो दौड़ कर पिता की गोदी में बैठ जाता था, निदान सब परिवार जो कल इसके जीवन कल्याण के लिए भगवान् से प्रार्थना कर रहे थे, अब सब एक स्वर होकर कह रहे हैं, इसे भवन से निकालो, श्मशान में ले चलो। तो क्या वह राज पाट, भवन, महल गाड़ी अटारी, पुत्र स्त्री, धन सम्पत्ति साथ ले चला है, नहीं अकेला आया था, अकेला ही चला है।

॥ कविता ॥

दुनियां यह कर्म क्षेत्र है, कोई सैर गाह नहीं।
जब तक है श्वास तन में, प्रभु को भुला नहीं॥
खुश किस्मती से है मिला, चोला मनुष्य का यह।
जीती हुई बाज़ी है यह, इस को हरा नहीं॥
चौसर बिछी है काम, क्रोध, लोभ मोह की।
खेलो अगर यह खेल, फिर तो बस फंसा नहीं॥
मत मस्त हो विषयों का मद, पी करके रात दिन।
ऐ बेखबर दम का तेरे, कुछ भी पता नहीं॥
धन माल जिस पे इस कदर, भूला हुआ है तू।
यह तो किसी के आज तक, हमरा गया नहीं॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तृष्णा न यह मिटेगी, और न भोग होंगे कम।
लेकिन तू ही मिट जाएगा, क्यों समझता नहीं॥
करना हो धर्म जो विषन, वह करले आज ही।
कल का तो कुछ पता नहीं, होगा के या नहीं॥

अकेला आना अकेला जाना न होगा हरगिज़ कोई भी साथी अब भगवान् या धर्म ही याद आता है। वस्तुतः जो आत्मा है, वह अपना रूप दिखाती है, तो प्यारे! वास्तविक आत्मा का मार्ग कौन दिखायेगा? सत्य का मार्ग तो गुरु दिखायेगा। जब तक आत्मा शरीर में विद्यमान है, मनुष्य जीवित और जागृत है और शरीर मूल्यवान समझा जाता है, पर हम आत्मिक शक्ति को छोड़ कर नाशवान् शरीर की पूजा कर रहे हैं।

कहा है, 'गुरु बिन गत नहीं, "शाह बिन पत्त नहीं"।

गुरु वह है जो अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाये, जो निष्कपट, निस्वार्थ ज्ञान दे। जैसा कि यजुर्वेद ३-४४ में बताया गया है:—

ओ३म् प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः। करम्भेण सजोषसः॥

प्यारे! वेद भगवान् गृहस्थियों को आदेश देता है कि पके हुए पदार्थों का भोजन करने वाले अतिथि लोग और यज्ञ करने वाले विद्वान् लोगों को सत्कार पूर्वक नित्य प्रति बुलाते रहें। क्यों? ताकि वह तुम को अविद्या और दुःखों से छूटने और बुराइयों और शत्रुओं के नाश करने और परमात्मा के सेवन करने वाले सदुपदेशों से सदैव जागृत करते रहें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अथर्ववेद कांड ९ सूक्त ६ मन्त्र ८

ओ३म् एष वा अतिथि र्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात् पूर्वो नाश्नीयात् ॥ ७ ॥

अर्थात्-गृहस्थी लोग अतिथि का तिरस्कार करने से महान् विपत्तियों में फंसते हैं अर्थात् जो अतिथि से पूर्व भोजन करता है। वेद ने आदेश किया है कि अतिथि को भोजन करवाओ पश्चात् यज्ञ शेष बना कर तुम खाओ और नित्य प्रति सत्कार पूर्वक बुलाते रहो।

ओ३म् श्रियं च वा एष सं किदं च गृहाणाम् श्नाति यः पूर्वो तिथेर श्नाति ॥ ६ ॥

अ० का० ९ मं० ६ सू० ६

भावार्थ गृहस्थ लोग अतिथि का तिरस्कार करने से महा विपत्तियों में फंसते हैं।

ओ३म् इष्टं च वा एष पूर्तं च ग्रहाणामश्नाति यः पूर्वे तिथेर श्नाति ॥

अ० का० ९ सू० ६ मं० १

भावार्थ—ग्रहस्थों को उचित है कि अपने सुख वृद्धि के लिए उपस्थित अतिथियों को जिमा कर आप जीमे।

अतिथि का सत्कार कैसे करें ?

ओ३म् इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रे यशसं कृधीनः। आनक्ता वर्हिः सदतामुषासो शान्ता मित्रा वरुणा यजहे ॥ ५ ॥

ऋ० मं० ७ सू० ४२

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भावार्थ—जब अतिथि आवें—तब गृहस्थ पाद्य आसन-मधु पर्क-प्रयवचन और अन्नादिकों से उस का सत्कार कर और पूछ कर सत्य असत्य का निर्णय करें और अतिथि भी प्रश्नों के समाधान देवें।

अथर्ववेद काण्ड १५, सूक्त ११, मं० १-२।

ओ३म् तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्योतिथि गृंहाना गच्छेत ॥ मं० १ ॥

ओ३म् स्वयमेन मभ्युदेत्य ब्रू याद् व्रात्यक्वा वात्सीव्रत्योदकं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथाते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति ॥

अर्थात्—जिस गृहस्थी के घर विद्वान् व्रत निष्ठ अतिथि आवे उसको चाहिये कि स्वयं उसकी सेवा में उपस्थित होकर इस प्रकार स्वागत करे 'हे व्रात्य! (सत्य व्रत धारी) आप गत रात्रि कहां ठहरे? आइये, यह जल लीजिये। यह सब वस्तुएँ आप को, तृप्त करें। हे अतिथि प्रवर! जैसा आप को प्रिय हो वह किया जाये, भगवन्! जो आप की इच्छा हो, पूरी की जाये। हे महात्मन्! आप की बड़ी से बड़ी इच्छा जो हो, वह पूरी की जाये। इस प्रकार जो अतिथि सत्कार करता है उसे अपने घर स्थान देता है और उस की सेवा शुश्रूषा करता है उसे महान् फल मिलता है। जो जो वस्तु अतिथि के लिए ला कर उपस्थित करता है, उन उन वस्तुओं की उनको न्यूनता नहीं रहती।

अथर्ववेद काण्ड १५, सूक्त १३ मं० १

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य एकां रात्रिम तिथि गृहे वसति पृथिव्याम्..................

अर्थात्—जिस गृहस्थी के यहां अतिथि (सत्य व्रत धारी) एक रात्रि आकर ठहरे और गृहस्थी श्रद्धा प्रेम से सेवा शुश्रूषा करता है, पृथ्वी के पुण्य से पुण्य लोक उसे प्राप्त होते हैं और जो जो वस्तु अतिथि सेवा में भेंट करता है, उस प्रकार के पदार्थों की उसे कमी नहीं होती।

अथर्ववेद के १५ काण्ड मं० २ से ५ तक यही प्रकरण हैं।

मं० २—दूसरी रात्रि की सेवा का फल अन्तरिक्ष के पुण्य लोक प्राप्त होते हैं।

मं० ३—तीसरी रात्रि की सेवा का फल देवलोक के पुण्यों के समान फल प्राप्त होता है।

मं० ४—चौथी रात्रि की सेवा का फल पुण्य से पुण्य लोकों को निज निवास के लिए जीत लेता है।

मं० ५—पांचवीं रात्रि की सेवा का फल असीम पुण्य लोकों को प्राप्त करता है।

ओ३म् तदयस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽपरिमिता रात्रीऽतिथि गृहे वसतिय एवा परिमिताः पुण्या लोकास्तानेव तेनावरुन्द्धो ॥

अ० का० १५ म० ५ ॥

अर्थात्—यदि वह अतिथि को परिमित रात्रियों तक अपने घर में निवास देकर मनोयोग से सेवा करता है, तो इस लम्बे सत्कार से उसे असीम पुण्य लोकों को जीत लेता है। इस प्रकार वेदार्थ वाद, अतिथि सेवा के यहां फल को पाता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्यारे ! वेद ने दो बातें बतलाईं:—

१. अतिथि को घर पर बुला कर अपने पास ठहराओ।

२. अतिथि की उत्तम २ पदार्थों से सेवा करो।

सत्यपाल—महाराज ! हमारी समाज में उपदेशक, भजनीक आते हैं, हम तो सेवक से कह देते हैं या सेवक उन का भोजन हमारे घर कह जाता है और फिर ले जाकर उसे खिला देता है।

सन्त महात्मा—अच्छा सत्यपाल ! यह बताओ कि यदि महाशय कृष्णजी अथवा महात्मा खुशहाल चन्द जी आप की समाज में आवें, तो क्या चपरासी ही इनका सत्कार, सेवा करे गा ?

सत्यपाल—नहीं २ महाराज ! किन्तु समाज के प्रधान, मन्त्री तथा अन्य मुख्य सभासद उनके स्वागत अर्थ स्टेशन पर जाते और स्वयं एक से एक सेवा करने को उद्यत होता है। और फूले नहीं समाते। जब तक वे यहां रहते हैं, उनके पास तांता बन्धा रहता है।

सन्त महात्मा—भाई यह क्यों ? उपदेशक विद्वान् है उस का असत्कार और जो न वेद जाने, न संस्कृत जाने, उन का इतना सत्कार ! इतना अन्तर।

सत्यपाल—महाराज वह सभा के प्रधान ठहरे। सर हुए

सन्त महात्मा—उनको प्रधान किस ने बनाया ? जो न संस्कृत जाने और न विद्वान् हों।

सत्यपाल—महाराज, आप ही बतलावें।

सन्त महात्मा—प्यारे ! उपदेशक, भजनीक यद्यपि विद्वान् होते हैं और प्रचार कार्य करते हैं परन्तु वह वेतन भोगी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हो कर सेवा करते हैं अर्थात् अपना उपदेश तथा भजन बेच कर धन कमा कर पेट पालते हैं और वह स्वार्थ वश सेवा करते हैं वे पण्डित कहलाते हैं और मर्यादा रूप उनकी सेवा हो ही जाती है, वे स्वामी बन कर सेवा नहीं करते। अतः उन का सत्कार कैसे हो? सम्मान कैसे हो ? भला सेवक मालिक को कैसे उपदेश दे सकता है। उसने तो पेट अर्थ अपना तन मन अर्पण कर दिया है। महाशय कृष्ण जी तथा महात्मा खुशहाल चन्द जी निष्काम भाव से सेवा, स्वामी बन कर करते हैं। स्वामी जो काम करता है इन्हें अपनी सम्पत्ति समझ कर करता है, पर सेवक जो नियत समय पर जो सेवा होगी, करेगा। चाहे स्वामी की लाखों की हानि हो जाय, उसे अपने सर में दर्द थोड़ा होगा।

फारसी के कवि ने लिखा है:—

इल्म चन्दां कि बेशतर ख़ानीं।
गर अमलदर तो नेस्त, नादानी॥

अर्थात्—बहुत ज्ञानी विद्वान् भी क्यों न हो यदि वह आचरण नहीं करता तो वह मूर्ख है।

पूजा तो त्याग, सेवा भाव जो कि निष्काम भाव से करता है, उस की होती है। दुकानदार को दाम दिया, उसने सौदा दिया, फिर दुकानदार की सेवा कैसी ? सम्मान सत्कार कैसे हो ?

———

वर्तमान उपदेशक तथा उस का सत्कार

एक उपदेशक प्रचार अर्थ किसी समाज में पहुँचा, तो मन्दिर का द्वार बन्द पाया। मन्त्री जी का पता पूछते २ उसकी दुकान पर पहुँचा। जाकर यों गोया हुआ:—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उपदेशक—मन्त्री जी महाराज, नमस्ते।

मन्त्री जी—कहो, कुछ कहना है।

उपदेशक—मै सभा से आया हूँ।

मन्त्री जी—क्या आप उपदेशक हैं या भजनीक?

उपदेशक—महाराज, उपदेशक हूं।

मन्त्री जी—अच्छा! तो यह चाबियां मन्दिर की हैं आप वहां द्वार खोल कर बैठें, सेवक अभी आता है आप के पास उसको भेजता हूँ यदि वह सीधा आप के पास पहुँचे तो उसे कहना, "राम लाल" के घर आपका भोजन कह आएगा।

उपदेशक ने चाबियां ले लीं, नमस्ते कह कर चल पड़ा। समाज मन्दिर आया, द्वार खोला, सामान अन्दर रक्खा और बैठ गए। थोड़ी सी देर बीती तो चपरासी आ गया। उसने आ कर पूछा, आप कौन होते हैं? और कहां से आए हैं? पण्डित जी ने कहा, मैं उपदेशक हूँ, सभा ने भेजा है। फिर पण्डित जी ने पूछा, आप कौन महोदय हैं?

चपरासी—समाज का सेवक हूं।

पण्डित जी—अच्छा आप समाज के सेवक हैं। देखो, प्यारे! मन्त्री जी ने कहा है कि आप महाशय राम लाल के घर जा कर मेरी रोटी का कह आओ।

सेवक म० राम लाल के घर गया, मन्त्री जी का आदेश रामलाल जी को सुनाया, तो राम लाल जी ने कहा, भाई! हमारे घर तकलीफ है, आज किसी और के घर जा कर कह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दें। अब चपरासी ने आकर मन्त्री जी से कहा उनके घर तकलीफ है तो मन्त्री जी ने कहा "अच्छा प्रेम सागर के घर चला जा"। अब चपरासी वहां गया तो उत्तर मिला, भाई ! अगले रोज़ हमने जो पण्डित आया था, भोजन करा दिया था, क्या हम रोज़ रोज़ के ठेकेदार हैं ? और समाजी थोड़े हैं। हमें समाज के निकट रहने का यही फल मिल रहा है। अब चपरासी ने आकर मन्त्री जी को सन्देश दिया तो मन्त्री जी ने चपरासी को कहा, अच्छा ऐसा करो, नानबाई की दूकान से थाली बनवा कर खिला दो, पैसे मुझ से ले जाना। अब चपरासी गया, नानबाई की दुकान से रोटी की थाली बनवाई पण्डित जी की भेंट की। पण्डित जी ने भोजन किया। विश्राम करने को बिस्तर करके सो गये, सायं होने को आई तो मन्त्रीजी समाज मन्दिर में आए।

मन्त्री जी—पण्डित जी ! नमस्ते।

पण्डित जी—आइये मन्त्री जी महाराज ! नमस्ते। बड़ी कृपा की, दर्शन दिये हैं और एक चिट्ठी उपस्थित की। मन्त्री जी ने चिट्ठी को खोलकर पढ़ा तो सभा का आदेश था, वेद प्रचारार्थ रुपया पण्डित जी को दे देवें। अब मन्त्री जी ने कहा, देखो पण्डित जी ! वास्तव में तो आज कल मन्दिर में लोग आते ही नहीं मैं अकेला हूँ, कहां कहां जाऊँ, रोज़ के चन्दे। हम लोगों का अपना निर्वाह कठिनता से होता है।

पण्डित जी—मन्त्री जी महाराज ! आप तो परोपकारी, त्यागी पवित्र आत्मा हैं। सभा भी तो आप की है। आपके नाम पर गर्व करती है। यदि आप लोग सहायता न करें तो प्रचार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कार्य कैसे चले। अब कृपा करके यह रुपया तो मुझे अवश्य दे देवें, मैं तो पहली बार सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

मन्त्री जी—पण्डित जी ! आज कल आय नहीं है, पिछली कमाई खा रहे हैं। लोग आनन्द नहीं लेते। धर्म कर्म सब छूटा हुआ है। भला बतलाइये सारा दिन आप को यहां पर ठहरे हुए हो गया है, किसी ने आकर बात तक पूछी है, सच कहना।

पण्डित जी—मन्त्री जी महाराज ! संसार में सभी त्यागी थोड़े होते हैं, भाग्य वालों को यह सेवा प्राप्त होती है। आप परोपकारी हैं, कृपा करें।

मन्त्री जी—पण्डित जी ! आप अब सायंकाल की गाड़ी से चले जायें, यहां पर प्रचार सुनने तो कोई आता नहीं, आप का समय भी यूं ही न जाए। रात को अगली समाज में आप उपदेश कर देवेंगे। वहां लोग समाज के सत्सङ्ग में काफी आयेंगे। आपकी इच्छा भी पूरी हो जायगी, पीछे मैं यहां पर यत्न करूंगा, जो कुछ हो सकेगा, फिर सभा को भेज दूँगा।

पण्डित जी—महाराज ! खाली हाथ गृहस्थी के द्वार से जाना अच्छा नहीं, कृपा करो।

मन्त्री जी—पहले जो कह दिया, क्या मैं ने झूठ बोला है। आप उपदेशक सत्य का प्रचार करने वाले ! मेरी बात पर विश्वास आप को नहीं आया ? अच्छा अब मै दुकान पर चलता हूँ, दुकान को अकेला छोड़ कर आया हूँ। आप मन्दिर का ताला लगा कर चाबियां—अमुक स्थान पर छोड़ जाना, गाड़ी का समय निकट है, ऐसा न हो, रात्रि का आपका समय व्यर्थ जाये। यह कह कर मन्त्री जी चले गये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अब आप बताओ सत्यपाल ! नौकर मालिक को उपदेश कर सकता है ? नौकर यदि मालिक की इच्छानुसार चलेगा तो ठीक वरना, बाहर कर देगा। फिर क्या ऐसे उपदेशकों से संसार का उपकार उद्धार, सुधार और वेद का प्रचार हो सकता है ? यह लोग न जप करें, न यज्ञ अग्निहोत्र करें, न वेद पाठ फिर कैसे आत्मिक बल बढ़े, जिस से आत्म अभिमान (खुद दारी) उत्पन्न हो, और ईश्वर विश्वासी बनें। प्यारे ! जो त्यागी होगा, वही संसार को त्यागी बना सकता है।

अब इनकी पूजा कैसे समाज में हो। यदि महाशय कृष्ण जी आते तो क्या मन्त्री ऐसी बातें करता, ऐसा तिरस्कार करता ? कदापि नहीं ।

फारसी के कवि ने लिखा है:—

कद्रे ज़र ज़रगर बिदानद, कद्रे जौहर जौहरी।

अर्थात्—स्वर्ण की पहचान तो सुनार ही जाने दूसरा कैसे जाने जो तप हीन हो उस का स्वागत कैसे हो ।

सन्त महात्मा—प्यारे ! कर्त्तव्य हीन की संसार में पूजा नहीं होती। साधारण लोग कहते हैं कि प्रातःकाल घर से निकलते समय यदि ब्राह्मण देवता के दर्शन हो जायें, तो लोग क्या कहते हैं ?

सत्यपाल—महाराज ! यही कहते हैं, आज का दिन मनहूस होगा। हां यदि भंगी के दर्शन हो जायें तो फूले नहीं समाते, कहते हैं, आज काम सफल होगा।

सन्त महात्मा—सत्यपाल ! यह क्यों ? ब्राह्मण विद्वान् के दर्शन से दिन मनहूस, भंगी के दर्शन से सफलता ? यह उलटा खेल कैसे ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सत्यपाल—महाराज ! ऐसा लोग कहते हैं । ऐसा क्यों कहते हैं, यह मैं नहीं जानता, आप ही बतलाइये ।

सन्त महात्मा—प्यारे ! ब्राह्मण वह जो ब्रह्म को जाने । ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ब्रह्म की पूजा करे । वेद विद्या का अध्ययन करे । अपने यजमानों के हितार्थ सुख शान्ति की प्रभु से प्रार्थना करे । आप सन्ध्योपासना, अग्निहोत्र करे । ब्राह्मण का यह काम नहीं कि ब्रह्म मुहूर्त में गली कूचों में फिरे । ऐसा करने वाला कर्म हीन होता है । कर्म हीन के दर्शन होने से असफलता होती है ।

भंगी का काम है प्रातः अन्धेरे समय आकर गली कूचों की झाड़ू देकर सफाई करना । चूंकि वह कर्त्तव्य परायण होता है इस लिए उसके दर्शन से सफलता प्राप्त होती है । यही लोकोक्ति है, कि रब्बा ! पहले पहले कोई कर्मों वाला मत्थे लावीं, कर्महीन सामने न लावीं ।

प्यारे ! विद्वानों ने अपना आत्म अभिमान खो दिया, अपने कर्त्तव्य को भूल गये । विद्या जैसा अनमोल कोष कौड़ियों के बदले खो दिया । जो विद्या का तिरस्कार करता है विद्या उस का नाश कर देती है । आपने देखा था जैसी रोटी उपदेशक को मिल गई, खा ली, नहीं सोचा कि मैं खाता किस लिए हूं । कहावत है, "जैसा अन्न, वैसा मन, जैसा विचार वैसा आचार, जैसा कर्म होगा, वैसा फल होगा ।

कणाद ऋषि

महाभारत के अन्दर एक कथा आती है, कि युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा, कि महाराज कणाद ऋषि की सेवा में जा कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निमन्त्रण दे आओ, कि यहां यज्ञ होना है कृपा करके आप चलें, आप को यज्ञ का ब्रह्मा बनाया जावेगा । अर्जुन ने युधिष्ठिर महाराज के आदेशानुसार महाराज कणाद की सेवा में पहुँच कर नतमस्तक हो कर नमस्कार किया और प्रार्थना की, कि महाराज युधिष्ठिर एक यज्ञ करना चाहते हैं, उन्होंने मुझे श्री सेवा में निमन्त्रण अर्थ भेजा है. आप कृपा करके वहां चलें, आप को यज्ञ का ब्रह्मा बनाया जायेगा । उस समय कणाद ऋषि खेत में से गेहूँ के दाने चुन रहे थे। जब अर्जुन से ऋषिवर ने युधिष्ठिर का सन्देश सुना, तो सिर नीचा करके सोचने लगे। अब अर्जुन ने फिर कहा, महाराज ! आप चलें, आप को यज्ञ का ब्रह्मा बनाया जायगा और बहुत सा धन दक्षिणा भेंट की जावेगी । जब यह शब्द कणाद ऋषि ने सुने तो फूट २ कर रोना आरम्भ कर दिया, अर्जुन यह अवस्था देख कर बड़ा चकित हो देखता रहा मन में सोचने लगा कि मैंने कोई अपशब्द तो नहीं कहा और न अपमान किया है, तो फिर तीसरी बार कर जोड़ प्रार्थना की, महाराज ! कृपा करें, आप चलें आप की सब प्रकार से सेवा होगी, बहुत सा स्वर्ण द्रव्य भेंट होगा । ऋषि यह शब्द सुन कर और अधिक वेग से रोने लगे । अर्जुन यह देख कर हक्का बक्का हो गया और वापस लौटा । युधिष्ठिर महाराज के पास आ कर बीती अवस्था प्रकट की और कहा, मैंने कोई अपशब्द नहीं कहा और बड़ी नम्रता पूर्वक प्रार्थना करता रहा। युधिष्ठिर यह समाचार सुन कर बड़ा परेशान हो गया। सोचा कि बिना कारण के ऐसा क्योंकर हो सकता है। तो अर्जुन को साथ लेकर श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज की सेवा में पहुँचे, अर्जुन ने वही सारा समाचार सुनाया। योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नीतिवान थे। बोले, चलो हम तीनों ऋषि की सेवा में पहुंच कर अपराध का कारण पूछें। क्षमा मांगें।

अब तीनों वहां पहुँचे, नमस्कार के पश्चात् करबद्ध प्रार्थना की, महाराज! अर्जुन आप की सेवा में निमन्त्रण अर्थ पहुँचा, तो आप उस की प्रार्थना पर क्यों रोने लग गये और उत्तर तक नहीं दिया। और न ही उसका अपराध दर्शाया। कृपया हमें क्षमा करें और अपराध बतलावें। कणाद ऋषि ने कहा युधिष्ठिर! यदि और कोई अज्ञ अथवा साधारण व्यक्ति ऐसा कार्य करता तो संसार का कुछ न बिगड़ता, परन्तु राजा जो प्रजा का सिर है, जब सिर बिगड़ जाये तो, प्रजा का नाश होता है। आप ने सेवक के द्वारा निमन्त्रण भेजा। राजा हो कर इतना अहङ्कार! अब श्री कृष्ण जी ने कहा, महाराज! अर्जुन सेवक तो नहीं वह तो युधिष्ठिर का भाई है।

कणाद ऋषि बोले, अर्जुन ने भाई बन कर तो निमन्त्रण नहीं दिया, उसने कहा, 'युधिष्ठिर महाराज यज्ञ करने लगे हैं, उन्होंने निमन्त्रण दिया है आप यज्ञ में चलें, ब्रह्मा बनें'। तो मैं सोच में पड़ गया, थोड़ी सी देर बाद फिर अर्जुन ने कहा आप को बहुत सा धन दक्षिणा देवेंगे, फिर कहा बहुत सा स्वर्ण देंगे, सेवा करेंगे। अब बताओ धन का लोभ देना, लोभी बनाना, नौकर रूप बन कर निमन्त्रण देना यह तो विद्वान् का निरादर करना है। जब राजा ऐसा कर्म करे तो देश का नाश होगा, मैं रोया इस लिए था। जब राजा अहङ्कारी हो गया तो प्रजा अहङ्कारी हो जायगी। विद्वानों के तिरस्कार से धर्म प्रचार का नाश होगा, राज्य नष्ट हो जायेगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण का धर्म धनोपार्जन करना नहीं है, वह तो वेद विद्या का स्वामी होता है, लक्ष्मी उस के पीछे २ चलती है। ब्राह्मण बनकर जिसने लक्ष्मी की पूजा की, वह ब्रह्मत्व से गिर गया अर्थात् उस का सिर तो पाऊँ के नीचे रौंदा गया, जड़ बुद्धि हो गया।

प्यारे! एक समय वह था, राजा लोग भेंट लेकर ब्राह्मण के द्वार पर जाकर पुकारते और प्रार्थना करते थे। भीतर से आवाज़ आती कौन हो? तो राजा कहता था, महाराज! सेवक हूँ। फिर पूछते क्यों आये हो? तो राजा कहता, महाराज! कुछ भेंट करना है। तो उत्तर मिलता, बाहर मटका रक्खा है, उस में डाल दो। तो राजा कहता, महाराज! वह तो भरा हुआ है, तो उत्तर मिलता, बस और आवश्यकता नहीं है, वापस ले जाओ।

प्यारे! उस समय ब्राह्मण को स्वर्ण के पात्रों में भोजन कराते थे। ब्राह्मण लोग टस से मस नहीं होते थे। क्यों? वह तपस्वी तथा ब्रह्म निष्ठा (भर्गः) से भरपूर होते थे। बस कर्त्तव्य हीन की संसार में पूजा कैसे हो। यदि अर्जुन अपने आप को श्री कृष्ण महाराज के समर्पण न करता तो सफलता कैसे प्राप्त करता। अर्जुन पग पग पर बैठ जाता था। उसे किसने खड़ा किया? बुद्धि ने। वह था कृष्ण महाराज। अर्जुन शरीर था, तो श्री कृष्ण जी सिर थे। सिर के बिना शरीर व्यर्थ है।

श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश द्वारा अपना कर्त्तव्य बता कर खड़ा किया।

महर्षि दयानन्द सच्चे ब्राह्मण परिवार के थे, ब्रह्म को पहचाना, जाना, उस का साक्षात् किया। आप जागा, संसार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

को जगाया, अमर हो गया। अब शोक है आज उसके नाम लेवा, दर दर पर अलख जगा कर भीख माँगते फिरते हैं।

प्यारे! ऋषि कणाद खेत से गेहूँ के दाने चुन चुन कर क्यों खाते थे, इस लिए कि किसी पापी का अन्न खा कर जन्म अपना न गंवा बैठे, क्योंकि कहावत है "जैसा अन्न वैसा मन"। परन्तु आज तो जैसा कैसा अन्न कहीं से मिल जाये, स्वीकार करने में ननुनच नहीं होता, चाहे घूस लेने वाले का भी हो, ब्लैक की कमाई वाला, चोरी असत्य की कमाई वाला, बस धन आ जाये। जब संसार के उद्धार के ठेकेदार ऐसा धन कमाने वाले के द्वार पर अलख जगाकर उन से धन लेकर लोगों में ऐसे दाता की प्रशंसा करें और सभा में बिठाकर मान सम्मान करें तो संसार से पाप कैसे दूर होगा? ऐसे धन के खाने वाले क्या धर्मात्मा बनेंगे? ऐसे धन से धर्म कार्य पवित्र होंगे? क्या ऐसे अपवित्र धन के कारण धर्म संस्थाएँ प्रफुल्लित होंगी? नहीं, किन्तु अधर्म रूप फल दे रहे हैं। अब तो समाजों में लड़ाई झगड़े, स्वार्थ भावना का राज्य है। श्रद्धा, प्रेम, त्याग कोसों दूर है। अनुचित इच्छाएँ बढ़ा कर अपने आप को पतित (परतंत्र) किया जा रहा है।

अन्न का प्रभाव

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखते हैं कि एक महात्मा नित्य प्रति ४ बजे प्रातःकाल गंगा के किनारे आ कर समाधि लगाया करते थे। पर एक दिन वहां पर मैं गया, तो क्या देखा, वह तपस्वी महात्मा समाधि लगाने की अपेक्षा पत्थर पर टक्करें मार रहे हैं तो मैं ने पूछा, महाराज! आप योगी तपस्वी हो कर यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्या कर रहें हैं, तो महात्मा ने उत्तर दिया कि आज यह (मन) पापी लगता ही नहीं। तो मैंने कहा इस का कुछ कारण होगा। महात्मा ने कहा कोई कारण नहीं मालूम होता। मैंने फिर कहा, महाराज! कारण बिना कार्य कैसे हो, कुछ आहार में न्यूनता होगी। महात्मा ने कहा, कुछ नहीं। दूध पिया करता हूँ वही पिया।

मैंने कहा आइये आश्रम में चलकर इस का कारण मालूम करें। आश्रम में पहुंच कर सेवक से पूछा, तुम ने महात्मा को रात्रि में क्या खिलाया था। सेवक ने कहा, दूध ही पिया करते हैं केवल दूध ही पिलाया था। फिर सेवक से पूछा वही दूध जो नित्य पिलाया करता था। इस पर सेवक ने उत्तर दिया, नहीं महाराज, कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ है। हमने फिर पूछा, क्या परिवर्तन हुआ है? सेवक बोला, महाराज! मैं दूध लेकर आश्रम में जब आया तो यह दूसरे साधु आश्रम में आये बैठे थे, मैंने इन से पूछा, महाराज! भोजन करेंगे? इन्हों ने उत्तर दिया, नहीं, हां दूध मिल जाय तो पान कर लूंगा। मैं फिर दूध लेने चला गया। दूध वाले के पास दूध समाप्त हो चुका था, मैंने दूकानदार से कहा, भाई! एक सन्त महात्मा आ गए हैं वे भूखे न रहें। कहीं से दूध लादे। वह प्रेमी श्रद्धालु उठा और एक वेश्या के यहां गया, उस ने गाय रक्खी हुई थी, दूध उस से लाया, पर उस वेश्या ने दाम न लिए, कहा कि मैं सन्त महात्मा को भेंट करती हूँ और बोली क्या साधु से दाम लूं? निदान उस ने दाम न लिए। जब मैं वह दूध लेकर आया तो पहला दूध इस सन्त महात्मा ने पी लिया था। वेश्या वाला दूध मैंने महात्मा जी को पिला दिया, क्योंकि यह भी गाय का था। यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सुनते ही महात्मा कहने लगा, ओहो ! इसी वास्ते तो मैं टक्करें मार रहा था। मैं जब समाधि लगाता हूं तो वेश्या का रूप बार बार सामने आ जाता है।

प्यारे ! यह होता है बुरी कमाई का प्रभाव। अब जिनके मन ऐसे पाप और अधर्म के अन्न से बनें, भला वे संसार का कल्याण और सुधार कैसे करें ?

फारसी के कवि ने लिखा है:—

खुर्दन बराए ज़ीस्तनो ज़िक्र करदन अस्त ।
तू मोतकिद कि ज़ीस्तन अज़ बहरे खुर्दन अस्त ॥

अर्थात्—खाना जीवन के लिए तथा ईश्वर भक्ति के लिए है, परन्तु तेरा मत तो यह है कि जीना खाने के लिए है।

वास्तव में ऐसी बात नहीं है।

वर्तमान अवस्था

एक ब्राह्मण के यहां निमन्त्रण आया तो उस के लड़के ने पिता से पूछाः—

"ऊर्ध्वं गच्छन्ति डक्कारः अधो वायुर्नगच्छति निमन्त्रणमगतं द्वारे किं करोमि पिता" ?

अर्थात्—खट्टी डकारें ऊपर को आ रही हैं, नीचे वायु निकलता नहीं, निमन्त्रण द्वार पर आया है। पिता जी ! क्या करूं ? पिता जी ने उत्तर दिया—

बालकं वचनं श्रुत्व निमंत्रणमन्यते ध्रुवं मृत्यु जनम पुनरेव ।

अर्थात्—बेटा ! सुनो, निमन्त्रण को निश्चय मान लो,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्योंकि मर कर तो फिर जन्म मिलेगा पर पराया अन्न संसार में दुर्लभ है।

रामलाल—महाराज! हमारी समाज का उत्सव होता है। उपदेशक, भजनीक जब आते हैं तो उन का बड़ा आदर सत्कार होता है। विशेष २ मनुष्यों की बारी उन की सेवा के लिए लगाई जाती है। प्रातः दूध, मिठाई, हलवा खिलाते हैं। दोपहर को भोजन श्रद्धायुक्त (खीर, पूड़ी, सब्ज़ी, चटनी, अचार) निदान जो वह आज्ञा करते हैं, शीघ्र ही भेंट की जाती है। चार बजे फिर दूध, मिठाई या फल उनकी इच्छानुसार लाते हैं, रात्रि को भोजन, सोते समय फिर दूध, पान इलायची इत्यादि। निदान अत्यक सेवा की जाती है। यह मेरी आँखों देखी बात है और मैं सत्य कह रहा हूँ।

सन्त महात्मा—प्यारे राम लाल! जो कुछ तुमने कहा है, सर्वतः सत्य है। मैं मानता हूँ। परन्तु यह बताओ कि उत्सव के पश्चात् तथा जब कोई उपदेशक, भजनीक आता है, तब भी ऐसी सेवा करते हैं?

राम लाल कुछ विलम्ब के बाद बोला, नहीं महाराज!

सन्त महात्मा—कारण? क्या उत्सव पर और बाद के उपदेशक में कोई अन्तर पड़ जाता है। उत्सव में तो ड्यूटियां निश्चित हो जाएँ, सेवादार नियत किये जाएँ और बाद में अवहेलना हो? यह क्यों हो?

राम लाल—महाराज! आप ही बतलावें।

सन्त महात्मा—प्यारे! उत्सव समय समाज वाले घर से थोड़ा ही खिलाते हैं। जनता से धन लाते हैं, उन को उत्सव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दिखाने के लिए उपदेशक आदि मंगवाते हैं । उत्सव पर गाना बजाना हसाना न हो तो लोग कैसे इकट्ठे हों ? यदि भजनीक उपदेशक की सेवा यथेष्ठ न हो, तो यह रूठ कर एक ओर बैठ जाएँ तो जलसा फीका पड़ जाय, और आगे के लिए जनता का विश्वास उठ जाये, फिर तो उत्सव के नाम पर धन की भी प्राप्ति न हो। वर्तमान उत्सवों में दो बात मुख्य देखी जाती हैं:—

१. जन संख्या अधिक हो। २. धन आ जावे।

यदि सेवक को सेवा का फल पेट भर और इच्छानुसार न मिले तो वह कैसे प्रसन्नता से काम करेगा और काम कैसे पूरा होगा। यह तो लेने देने का हिसाब होता है । भला जब उत्सव समाप्त हो जाये, तो चौथे दिन क्या फिर उसी प्रकार पण्डितों, भजनीकों का विशेष ध्यान रक्खा जाता है ?

राम लाल—महाराज ! नहीं।

सन्त महात्मा—प्यारे ! यह एक प्रकार का व्यापार ही है भला उत्सव के पश्चात् प्रधान मन्त्री से पूछो, आप ने और अन्य लोगों ने इस उत्सव से क्या पाठ सीखा, कौन से अवगुणों का त्याग किया, और क्या ग्रहण किया, और कितने सभासद आप के इस प्रचार से और बढ़े ? उत्तर—कुछ भी नहीं मिलेगा। भाई यह प्रश्न न करो। अपने बनने या लोगों के जीवन, आत्मा की उन्नति के अर्थ थोड़ा किया जाता है, हां, इन से यह पूछो, महाराज ! कैसे आपका उत्सव हुआ है तो उत्तर मिलेगा मंडप लोगों से भरा हुआ था, तिल धरने को स्थान न था और धन भी गत वर्ष की अपेक्षा अधिक आया। उपदेशक, भजनीक भी अच्छे आ गए थे। जनता पर प्रभाव अच्छा पड़ा, बस यही कुछ उनकी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सफलता का चिन्ह है। और यदि उनसे पूछा जाये, महाराज! कितने लोगों ने घूस का त्याग किया अथवा ब्लैक करना छोड़ा अथवा हुक्का, मद्य, मांस का परित्याग किया। प्रति दिन घर में सम्मिलित हो कर सन्ध्या, जप, स्वाध्याय वेद पाठ, अग्निहोत्र का व्रत किसी ने लिया, तो उत्तर कुछ भी नहीं होगा। तो प्रभाव क्या खाक पड़ा, बस यही "**मन तुरा हाजी बगोयम तू मरा मुल्लां बगो**" वाली बात अब रह गई। प्यारे! आत्मोन्नति, आत्मिक शक्ति तो नाम मात्र ही नहीं रहीं। संसार के उद्धार की ठेकेदार सोसाईटी अपने घर के सुधार से कोसों दूर, भला भजनीक, उपदेशकों से पूछो, तुम कितने बजे जागते हो? आप की दिन चर्य्या कैसी होती है? क्या नित्य कर्म करते हो? तुम्हारे घर में हवन होता है, क्या जिस प्रकार यहां खान पान करते हों, अपने घरों में ऐसा करते हो? तो क्रोध में आ जायेंगे।

प्यारे! आज तो ड्रामे हों, नाटकी भजन हों, हंसाने वाली बातें हों जिस से धन मिल जाय। धन जन उत्पन्न तो बाँदरी वाला भी डुगडुगी बजा कर कर लेता है, यह कोई बहादुरी है? भला कितने आर्य घराने होंगे जिन के घर में भगवान् की पूजा का स्थान होगा जहां, परिवार सहित उठकर प्रातः सायं हवन सन्ध्या वेद पाठ करते हों। समाज के रजिस्टर को देखो कितने नाम के आर्य अङ्कित होंगे, क्या वे आस्तिक हैं? अरे भाई! जिसकी दया से हीरा जन्म मिला, जिस की कृपा से स्वास्थ्य, नाना प्रकार के ईश्वरीय पदार्थ, मान सामान मिला। जिस स्वामी के दिये हुये सुन्दर रहने को अपने मकान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हों पर उन मकानों में स्वामी का निवास नहीं है। और उसको घर में घुसने तक का स्थान नहीं दिया जाता, तो क्या हम ४२० हुए या नहीं।

जब हम उस स्वामी (परमात्मा) को माता पिता के नाम से पुकारते हैं यदि उस की घर में पूजा न की, तो क्या हमारी सन्तान हमारी आज्ञाकारी और आस्तिक बनेगी। प्यारे! नास्तिकों के घर में तो नास्तिक ही सन्तान आवेगी। अन्धेरे में चोर, डाकू, सर्प, बिच्छू आया करते हैं, जहां प्रकाश होता है वहाँ तो प्रकाश की पुजारी पवित्र आत्माएँ आया करती हैं, वे देव लोक से आत्माएँ आती हैं वे अमर आत्माएँ होती हैं। भला मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी महाराज ने राजा दशरथ के घर कैसे जन्म प्राप्त किया था? प्यारे! महाराजा दशरथ तथा रानियों ने व्रत किया, ईश्वर पूजा की, पुत्रेष्टि यज्ञ किया, भगवान् की पवित्र आत्माएँ पूजा करने वाले ऋषि मुनि आये, घोर तपस्या की, तो भगवान् राम की पवित्र आत्मा आई। घर में प्रकाश था, प्रकाश लोक से आत्मा आई, जो प्रकाश की पुजारी थी, अमर आत्मा थी। अब सारा संसार राम राज्य चाहता है, छोटा, बड़ा अच्छा, बुरा राम राज्य की कामना करता है पर हमारे घरों में प्रकाश है? फिर हमारे हृदय प्रकाश युक्त कैसे हों फिर शान्ति कैसे हो और राम राज्य कैसे हो? कवि ने कहा है:—

जो कुत्ता दर दर फिरे, दर दर दुर दुर होय।
एक ही दर का हो रहे, दुर दुर करे न कोय॥

प्यारे! जिस कुत्ते के गले में स्वामी का पट्टा पड़ जाता है, उस कुत्ते को सरकार भी नहीं छू सकती और उस कुत्ते को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

खान पान इत्यादि की कोई चिन्ता नहीं रहती । वह तो स्वामी के हित के लिए जीता है, प्राण तक अर्पण किये रहता है । उसके खान पान की स्वामी को ही चिन्ता रहती है । स्वामी ही दूध पिलायेगा, खाना खिलायेगा, स्वयं सैर को ले जायेगा, निदान सारी चिन्ता स्वामी को ही होती है । अर्थात् कुत्ता स्वामी के लिये, स्वामी कुत्ते के हित के लिए, यह है एकता ।

प्यारे ! ऋषि दयानन्द महाराज उस स्वामी का पुजारी बना, अपने आप को अर्पण कर दिया, उस का बन कर उसका कार्य किया सर्व प्राणी मात्र के हितार्थ आया । सब के हृदय में वास किया । जब तक भगवान् की सृष्टि विद्यमान है, ऋषि दयानन्द जीवित है और जीवित रहेगा, क्योंकि भगवान् नित्य है, उसका पुजारी नित्य जीवित रहेगा । पर हम उस का नाम लेने वाले कहलाते हुए उसके बताए मार्ग पर न चलें और स्वामी के न बनें, परिणाम यह कि पैसा पैसा के बाहने दर दर ठोकरें खा रहे हैं । और आपस में लड़ते रहते हैं ।

प्यारे ! जब तक हम उस स्वामी को स्वयं ग्रहण नहीं करेंगे उस स्वामी के सच्चे पुजारी नहीं बनेंगे, हमारा आहार, व्यवहार, विचार आचार शुद्ध नहीं होगा और न ही हमारा शरीर मन, बुद्धि आत्मा पवित्र होगी और न ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होगी ।

कौन कौन वक्ता और कौन कौन श्रोता होते हैं

वक्ता की तीन श्रेणियां हैं:—१. प्रचारक २. उपदेशक ३. सुधारक ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१. प्रचारकः—वह जो किसी विषय अथवा वस्तु का प्रोपेगेण्डा करता है। अपनी वस्तु की प्रशंसा और दूसरों की निन्दा करना प्रचारक का काम है। उस का काम केवल जबानी है। ऐसे प्रचारकों का काम धन प्राप्ति होता है। यह प्रायः वर्त्तमान अवस्था में है। यह वाणी का कर्म है। यह वाणी जो लाखों करोड़ों रुपयों से नहीं मिलती, टके पैसे में बेच देते हैं। गूंगे से वाणी का मूल्य पूछो, तब मां याद आवेगी, जैसे हम अमृत वाणी को विष वाणी बना रहे हैं। ऐसा प्रचार प्रायः जनता सुनती है।

२. उपदेशकः—वह जो सत्य असत्य मार्ग को कथा, व्याख्यान रूप से दर्शाते हैं और सत्सङ्ग के रूप में वक्ता बनने और उसे श्रद्धालु लोग ही सत्सङ्ग में सुनने को आते हैं। वह पुस्तक और अपनी बुद्धि अनुसार उपदेश करते हैं दूसरों को सत्य मार्ग बताते हैं। स्वयं न करना, पर सुधारक गिने जाते हैं, कैसे? सुनियेः—

एक दिन एक बड़ा विद्वान्, ज्ञानी, स्वाध्याय शील उपदेशक महोदय समाज के उत्सव पर पधारे। उत्सव में "योग" विषय पर बड़ा उत्तम उपदेश, मधुर भाषण दिया। उत्सव में दो तीन जिज्ञासु आत्माएँ भी उपस्थित थीं। वे उपदेश सुनकर गद्गद् प्रसन्न हुए, और परस्पर विचार किया, और कहा कि आज हमारे भाग जाग पड़े, घर बैठे गङ्गा स्नान हो गया, यह बड़े विद्वान् अनुभवी पण्डित जी हैं। तो निश्चय किया कि पण्डित जी के यहाँ चल कर इस गुह्य मार्ग (योग) सम्बन्धी पूछताछ करें। अतः तीनों महानुभाव श्री पण्डित जी के निवास स्थान पर पहुंचे, नत मस्तक होकर नमस्कार किया। पण्डित जी ने सत्कार से बिठाया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

और पधारने का कारण पूछा। जिज्ञासुओं में से एक बोलाः— महाराज! आज आप का अमृत उपदेश हुआ, हम तो गद्गद् प्रसन्न हो गये। मानो हम ने घर बैठे ही आज तीर्थ स्नान कर लिया है। अब सेवा में उपस्थित होकर आप को कुछ कष्ट देने आए हैं। वह यह कि आप कृपा करके हमें योग के साधन बतलावें, हम अभ्यास तो करते हैं परन्तु अमुक २ बाधाएं आजाती हैं, कृपया उन बाधाओं के दूर करने के साधनों पर प्रकाश डालें। अब पण्डित जी ने जब यह सुना तो नत शीर्ष होकर हंस पड़े, और बोले, महाराज! मैंने जो उपदेश योग विषय पर दिया था, वह तो जैसा ग्रन्थों में लिखा है, वही आप लोगों के सम्मुख रख दिया मैं स्वयं न योग करता हूँ और न किसी को सिखाया है। यह तो आप किसी योगी महात्मा से पूछें वह अनुभव बतलायेंगे। जब जिज्ञासुओं ने उत्तर सुना तो रही सही श्रद्धा भी विलीन हो गई। नमस्ते करके उठ खड़े हुए। बाहर चल कर परस्पर कहने लगे कि यह लोग भी तोते ही हैं। आर्य समाज में अब ऐसे विद्वान् रह गये हैं जो तोते ही बने हुए हैं यही संसार का सुधार उपकार करने के ठेकेदार हैं। प्यारे! ऐसे ही वर्त्तमान समय में उपदेशक महोदय जब हों जो अपनी बुद्धि को टके रुपये में बेचते फिरें, भगवान् की दी हुई बुद्धि जो लाखों करोड़ों रुपयों में प्राप्त नहीं होती, इस के बिना तो मनुष्य मृत्यु समान है, यों ही जीवन व्यर्थ खो रहे हैं। इस बुद्धि के द्वारा भगवान् का साक्षात होता है यह नास्तिक लोग संसार को भोगी, रोगी और अन्धकार में डाल रहे हैं। पञ्जाबी के कवि ने खूब कहा हैः-

कहना करना दो हैं, भाई करने की है धन्य कमाई।
कहना कह कह जावे थक, करना पहुँचे मंज़ल तक॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्यारे ! उद्यान में अनेकों फूलों के पौदे, गुलाब, गेंदा, मोतिया, चमेली इत्यादि होते हैं, पर वे किसी के नाक को दूर से अपनी सुगन्धि से नहीं खींच सकते, इन फूलों को नाक के समीप लाने पर उनकी सुगन्धि आयगी, पर एक वह फूल जिस का नाम नेचर ने "करना" रक्खा है जब यह "करना" पुष्प खिलता है तो दूर २ से जाते हुए यात्रियों की नासिकाओं को अपनी सुगन्ध से अपनी ओर खींचता है, जैसा नाम, वैसा काम पर आज कल के उपदेशक तो इस पुष्प से भी गए गुज़रे हैं। जैसे आज कल के नकली फूल जिनका सौन्दर्य रूप आँखों को आकर्षण करने वाला, पर गन्ध रहित होते हैं यह उपदेशक मन्त्री, प्रधान के रहम पर पलते हैं।

३. सुधारकः—वे जो अपने संयम, तप, त्याग और अनुभव से विशेष रूप से सत्सङ्ग, वार्तालाप, मेल-जोल से जनता का कल्याण करते हैं। लोगों से दोष, पाप दूर कराते और उनके जीवन की देख भाल करते हैं। यह अपने मन, हृदय के पवित्र भावों से प्रेरित हो कर बोलते हैं और केवल मात्र परमेश्वर के भरोसे पर काम करते हैं। इन्हें मनुष्य जाति के उत्थान के लिए एक तो दर्द, लग्न होती है, उन्हें सब से प्रेम भाव से बर्ताव करना पड़ता है, ईर्ष्या, द्वेष उन के पास नहीं फटकते, न ही किसी मत मतान्तर की निन्दा करते हैं, वे केवल मनुष्य के सुधार के लिए उसे क्रिया में लाते हैं, यह लोग सुधारक होते हैं। जो दिल से काम करते हैं उन के दिलों में भगवान् वास करता है, उनकी बाग डोर भगवान् के हाथ में होती है, वे उसके आश्रित होते हैं।

प्यारे ! सोचो, वर्तमान युग में कितने सुधारक दिखाई

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देते हैं। वे योगी लोग, जिन्होंने भगवान् से योग किया हुआ होता है, निर्भय, निर्पक्ष, सत्यनिष्ठा, शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक शक्तियों से भरपूर होते हैं, जो संसार के प्राणी मात्र का हित चाहते हैं और अपने जीवन, प्राण तक उसी की पूजा के हित के लिए अर्पण करके अमर हो जाते हैं। फारसी के कवि ने लिखा है:—

यक ज़माने सोहबते, औलिया,
खुश तर अज़, सद साला तायतेरिया।
गर तू संगे ख़ार ओ, मर मर बवी,
चूं ब साहब, दिल रसी गौहर शवी॥

अर्थात्—योग्य गुरु की संगति में एक घड़ी गुज़ारना सौ वर्ष की दम्भ भक्ति से बढ़कर है। हे मनुष्य! चाहे तू नोकदार पत्थर की भान्ति है या संग मर मर की भान्ति उजड़ा हुआ है, योग्य गुरु की सङ्गति में रहने से गौहर (मोती) बन जायेगा।

प्यारे! यही सुधारक आत्माएँ ही अतिथि कहलाती हैं। यही संसार का सिर कहलाती हैं। अब इनका स्वागत क्या समाज का चपरासी करेगा?

स्वर्गीय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज कहा करते थे:—

वर्तमान समय में आर्यों का गुरु पुरोहित, पुरोहित का गुरु सन्यासी, सन्यासी का गुरु समाज का चपरासी।

अथर्ववेद काण्ड १५ सूक्त ११ मं० १-२ का आदेश है कि अतिथि की स्वयं ही सेवा करो, वह क्यों? सुनिये:—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

महात्मा—प्यारे ! एक धनी ने अपने सेवक से कहा 'अरे भोजन घर से ला कर सन्त को खिला देना । अब सेवक भोजन ले गया और सन्त से कहा, "ले बाबा, भोजन शीघ्र खा मैंने काम पर जाना है" । न प्रेम से बोला न सत्कार किया । अ सोचो, महात्मा का शाप इस तिरस्कार करने का पहले कि को मिलेगा ?

राम लाल—महाराज ! सेवक को ।

महात्मा—सेवक को क्यों मिलेगा ? सेवक अपनी ओर भोजन थोड़ा लाया है । प्यारे ! वह अपनी इच्छा से से करने नहीं आया । वह तो स्वामी का सेवक है, चाहे स्वामी बिगड़े या बने, उसे न कोई प्रसन्नता है, न अप्रसन्नता ।

राम लाल—महाराज ! अब समझ आ गई, शाप मिलेगा स्वामी को । (खाने भेजने वाले को)

सन्त महात्मा—अच्छा, यदि सेवक ने श्रद्धा भाव औ प्रेम से भोजन करा दिया, तो सन्त का आशीर्वाद पहले किस मिलेगा ?

राम लाल—सेवक को । स्वामी को पीछे मिलेगा ।

सन्त महात्मा—अब सोचो, सेवक के तिरस्कार का श तो पावे स्वामी, और आशीर्वाद प्राप्त करे पहले सेवक, यह क्यों अतः जिस ने कर्म किया ही नहीं, वह फल क्या पावेगा ? ज स्वामी अहङ्कारी हो, तो सेवक कैसे दया भाव वाले होंगे ।

(Sir Henry Ford) सर हेनरी फोर्ड अमेरिका निवा करोड़ों अरबों की सम्पत्ति का स्वामी था, परन्तु आधी छ अन्न नहीं पचा सकता था, कारण, पूर्व जन्म में धन का द किया था, धन मिल गया । पका अन्न किसी को नहीं खिला

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

था, तो अन्न कैसे मिलता। क्या धन उसके लिए सुखकारी है ? वेद ने कहा है:—

स्वयं वाजिं स्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्वस्वयं जुषस्व। महिमा ते अन्येन न सन्नशे ॥

॥ यजु० २३-१५ ॥

अर्थात्—हे मनुष्य! ज्ञान की इच्छा रखने वाले ! तू आप अपने शरीर को बलवान् बना, आप अच्छे विद्वानों से मिल और आप ही उनकी सेवा कर, जिससे तेरी बड़ाई, तेरा प्रताप दूसरी के हाथों मत नष्ट हो। अर्थात् जैसे अग्नि आप से आप प्रकाशित होता, आप मिलता तथा आप सेवा को प्राप्त है ऐसे जो बोध चाहने वाले जन आप पुरुषार्थ युक्त होते हैं, उन का प्रताप बड़ाई कभी नष्ट नहीं होती।

सत्य पाल—महाराज! अब मुझे शैशव काल की बात याद आ गई। आहा! कितने रहस्य की बात वेद भगवान् ने बताई है वह आज समझ में आई।

सन्त महात्मा—वह क्या बात है ?

सत्य पाल—महाराज! मैं छोटा था, श्राद्ध के दिनों में मेरे पिता जी ने जब ब्राह्मण को निमन्त्रित किया, तो मेरी माता उसी दिन चौके में गोबर का लेप कर, स्वयं स्नान कर, शुद्ध वस्त्र, केवल एक साढ़ी पहन कर चौके का द्वार बन्द करके एकान्त में हो कर ब्राह्मण का भोजन बनाती, बड़ी श्रद्धा और प्रेम से, और जब तक ब्राह्मण देवता घर में न पधारते और भोजन करके चले न जाते हमें भी रसोई तक आने नहीं दिया जाता था और न खाने को मिलता था। जब ब्राह्मण देवता आते तो हमारे पिता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जी चरणों में झुक कर नमस्कार कर, जल से उनके पाओं को धोते, अपने हाथों से भोजन देते, पंखा करते, अन्त में दक्षिणा भेंट करके साथ हो कर उन्हें घर तक पहुँचा आते, तब हमें भोजन मिलता था, तो हम आर्य समाजी होने के कारण इस बात पर हंसी उड़ाते थे, पर आज यह जान कर कि वेद भगवान् का आदेश है "विद्वान् की सेवा आप ही अपने हाथों से करनी चाहिये" और इस से पूर्व आपने बतलाया कि विद्वान् का तिरस्कार करने वाले विपत्तियों में फंसते हैं। महाराज ! आज तक हम लोगों ने न वेद को पढ़ा, न देखा, बस हम तो जिव्हा से वैदिक धर्म की जय पुकारते रहे।

सन्त महात्मा—प्यारे ! आज भी धनी लोग अपने आप अपने हाथों सेवा करते हैं, पर किन महात्माओं की ? सुनो, मैं बतलाऊँ।

कल्पना करो, कि आज एक तहसीलदार जो सेठ जी का मित्र है वह एक पत्र भेजता है कि मैं परसों आपके पास आ रहा हूं, तो पत्र पढ़ते ही सेठ जी फूले नहीं समाते। वे घर की बैठक का कमरा साफ़ करेंगे, उसे सजायेंगे, मेज़ कुर्सी लगायेंगे, स्टेशन पर तहसीलदार का स्वागत स्वयं करेंगे, फिर तांगा, फिटन अथवा मोटर पर लाकर तहसीलदार साहिब को बैठक में ठहरायेंगे। चाय, दूध, मिठाई स्वयं मेज़ पर धर कर भेंट करेंगे, तेल, साबुन, तौलिया लेकर हाथ पांव धुलवायेंगे, अथवा स्नान करायेंगे। स्वयं भोजन परोसेंगे और जब तक तहसीलदार साहब ठहरेंगे, सेठ जी को अपना कार व्यवहार भी भूल जायेगा, अब तहसीलदार साहब का चरित्र भी सुन लीजिये। वह चोरों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दुष्टों को जो अन्धेरे में पाप करते हैं, दण्ड देते हैं परन्तु प्रभु के प्रकाश में न्याय की कुरसी पर बैठ कर ही अन्धेर मचाते हैं, खुली कोर्ट में वादी, प्रतिवादी से घूस ले ले कर अपनी जेबें भरते और लोगों की खाली करते हैं। प्यारे! ऐसे तहसीलदार साहब की सेवा करने वाले तो हैं।

फारसी के कवि ने लिखा है:—

कुनद हम जिन्स, बा हम जिन्स परवाज़ ।
कबूतर बा कबूतर, बाज़ बा बाज़ ॥

प्यारे! चोर डाकू की सेवा तो चोर डाकू ही करता है। चोर को अच्छा कब भाता है; चोर तो अन्धेरा चाहता है। उल्लू कब प्रकाश चाहता है।

राम लाल—यह ठीक है। आप ने जैसा कहा है, सोलह आने सत्य कहा है। हम यदि ऐसे मनुष्यों को नमस्कार या नमस्ते करें तो ऐसे मनुष्य आंखें फेर कर भी हमें नहीं देखते।

ऋषि विश्वामित्रजी महाराज

सन्त महात्मा—प्यारे! आप ने रामायण को पढ़ा, सुना होगा कि ऋषि विश्वामित्र जी महाराज जब महाराजा दशरथ के दरबार में पहुँचे तो राजा दशरथ को सूचना मिली, तो वे नंगे पांव गले में कपड़ा डाल कर दूर से दौड़ते हुए आए, नत मस्तक हो चरणों में नमस्कार किया, दरबार में सम्मान पूर्वक ले गए। सिंहासन पर महाराज विश्वामित्र को बिठाया, स्वयं नीचे चरणों में बैठे और कर जोड़ कर प्रार्थना की, महाराज ! आपने बड़ी कृपा की कि अपने चरण कमलों से इस आसन को पवित्र किया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है। जो सेवा और आदेश हो, आज्ञा कीजिये। ऋषि विश्वामित्र ने उस समय कहा, राजन् ! हम एक बृहद् यज्ञ कर रहे हैं, यज्ञ रक्षा के लिए सहायता चाहते हैं जिस से कि राक्षस लोग विघ्न न डाल सकें, तो राजा ने पुनः निवेदन किया कि महाराज ! आप वहां से ही सन्देश भेज देते, जिस प्रकार की सेना रक्षा के लिए चाहते, चरणों में पहुँच जाती, अब भी जितनी चाहें भेजदूँ, ऋषि बोले, राजन् ! मुझे सेना की कोई आवश्यकता नहीं, तो राजा ने कहा, महाराज ! फिर जैसी आज्ञा करें वैसा करूं, ऋषि ने कहा, "मुझे केवल राम और लक्ष्मण को साथ कर दें, यही काफी हैं। यह सुन कर राजा बोले, भगवन् ! राम, लक्ष्मण अभी बालक है, यह यज्ञ की कैसे रक्षा करेंगे ? आप जितनी सेना चाहें उपस्थित है । रक्षा के लिये तो सेना काम करेगी। ऋषि पुनः बोले कि नहीं, राम, लक्ष्मण ही पर्याप्त हैं। सेना की ज़रूरत नहीं। तो प्यारे ! सोचो, बुढ़ापे की सन्तान, जिगर के टुकड़े, आँखों के तारे, जो क्षण के लिए भी आंखों से ओझल हो जाते तो राजा चिन्तातुर और व्याकुल हो जाता, पर अब अपने प्रिय पुत्रों को ननुनच किये बिना ऋषि की भेंट कर दिया, यह था अतिथि सत्कार।

अब ऋषि विश्वामित्र ने उन को लेजाकर सर्व प्रथम शस्त्र विद्या-विशारद बनाया। निदान आप सब कुछ जानते हैं । यदि राजा दशरथ अपते बच्चों राम लक्ष्मण को भेंट न करता तो क्या राम लक्ष्मण ऐसे बनते ? ऋषि आत्मा तो त्यागी, तपस्वी अग्नि का रूप होते हैं। जो सङ्ग में जाए, वही पवित्र बन कर कुन्दन बन जाए।

सत्य पाल—महाराज ! वेद ने आदेश किया है कि पहले

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अतिथि को खिलाकर तत्पश्चात आप खावे, यह क्यों ?

सन्त महात्मा—प्यारे ! मनुष्य जाति के चार भाग हैं, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र। मनुष्य के शरीर के चार भाग हैं, १–मुख-ब्राह्मण, २–भुजाएँ-क्षत्री, ३–पेट-वैश्य, ४–पैर-शूद्र, अब जब भोजन तैयार होगा तो हाथ ही तैयार करेंगे, थाली में परोस कर रोटी का ग्रास पहले किस की भेंट होगा ?

सत्य पाल—महाराज ! मुख की।

सन्त महात्मा—जब ग्रास हाथ में आयेगा तो क्या मुख तत्काल ले लेगा ?

सत्य पाल—विलम्ब के पश्चात्—हां महाराज !

सन्त महात्मा—नहीं, बिल्कुल नहीं, सर्व प्रथम इस को आंख देवता जो ऋषि नाम से पुकारी जाती है, वह निरीक्षण करेगी कि कोई हानिकारक वस्तु अथवा तिनका आदि तो नहीं, नाक देवता सूंघेगा कि दुर्गन्ध युक्त तो नहीं, जिव्हा देवता चखेगी कि कटु तथा कठिन तो नहीं, जब यह परीक्षा हो जायेगी तब ग्रास मुख में प्रविष्ट होगा वहां ग्रास की तलाशी होगी कि इसमें कोई सख्त वस्तु तो नहीं है यदि है तो जबान दांतों को पीसने तथा चीर फाड़ के लिये दे देगी और जो सख्त टुकड़ा होगा, जबान बाहर फेंक देगी। अपने गुण समान करके अर्थात् टुकड़ा लचकीला जल की भांति करके भीतर कोषाध्यक्ष के पास भेज देगी, वह है पेट देवता वैश्य, अब वैश्य देवता अपने पास नहीं रखता, वह शरीर के प्रत्येक अङ्ग अङ्ग में गुप्त यथा योग्य रूप से कफ, पित्त, टट्टी, पेशाब आदि बना कर स्व स्व विभागों में बांट देता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यदि वैश्य (कोषाध्यक्ष) स्वार्थ वश अपने पास बन्द कर रख ले तो पेट में दर्द हो जायगा। त्राहिमाम्। त्राहिमाम् पुकारेगा। उस समय एनिमा करना पड़ेगा, वमन कराना होगा जब तक स्वार्थ त्याग न करेगा, शान्ति नहीं आवेगी।

प्यारे। यह कारखाना भगवान की रचना का देखा। हाथ पांव से कमाया गया, भोजन तैयार किया गया, यदि हाथ इस भोजन को मुट्ठी में बन्द रखता तो क्या इस में शक्ति बढ़ती। यदि मुख ग्रास को लेकर अपने अन्दर बन्द रखता तो मुख में दुर्गन्ध हो कर कीड़े पड़ जाते फिर यन्त्रों से चीर फाड़ करानी पड़ती, दण्ड मिलता। निदान एक २ अंग शरीर का परस्पर मिला हुआ, एक दूसरे के हित के लिये बना हुआ है। इस प्रकार विद्वान् अतिथि गृहस्थी का अन्न सेवन करता है उस की नेकी बदी अन्न द्वारा पड़ताल करता है और उसे नित्य प्रति कुमार्ग से सन्मार्ग पर चलाये रखता है।

प्यारे! सर का भाग ज्ञान का भाग है, बिना ज्ञान के सारा शरीर निकम्मा है, बेकार है, ज्ञान बुद्धि में है। निन्दा तथा स्तुति की पहचान बुद्धि से होती है, कुमार्ग से सन्मार्ग पर बुद्धि ले जाती है।

भोजन सर्व प्रथम विद्वान, सन्त महात्मा जनों की भेंट कर के यज्ञ शेष बना कर बाद में खाना चाहिये। अतिथि को अग्नि कहा गया है। अग्नि खोटे को खरे से पृथक् कर देती है। इस लिये अतिथि को यदि गृहस्थी दूषित अन्न खिलायगा तो अतिथि गृहस्थी को ताड़ना करेगा कि दुष्ट! यह अन्न कहां से लाया है? प्यारे! अन्न से मन बनता है। अफीम, धतूरा खाने से घण्टा, दो घण्टा बाद उसका प्रभाव मालूम पड़ता है। पर अन्न का प्रभाव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तत्काल पड़ता है। पर कौन ऐसा भान करता है । जो ब्रह्मनिष्ठ, भक्त विद्वान् जो अग्नि रूप हो, स्वार्थ रहित हो ।

प्राचीन प्रथा—आजकल भी चली आती है। देवियाँ सर्व प्रथम कौवे, कुत्ते, गौ के लिए ग्रास निकालती हैं, फिर ब्राह्मण का फुल्का पकाती हैं। अपने खाने से पहले ब्राह्मण को खिलाती थीं ताकि गुरुदेव सदैव हमें पाप मार्ग से ताड़ना करके सन्मार्ग पर चलाते रहें। अग्नि तो जो कुछ लेती है सारे विश्व में बांट देती है इसी प्रकार अतिथि जो कुछ खाता है वह खिलाने वाले की कमाई को संसार में धर्म प्रचार द्वारा फैला देता है और अपने यजमानों का सदैव रक्षक बन कर रहता है ।

विवाह समय मधुपर्क सेवन करने से पूर्व वर अनामिका तथा अंगूठे से ९ दिशाओं में छींटे देता है।

राम लाल—महाराज! अंगूठा और अनामिका से क्यों छींटे दिये जाते हैं ?

सन्त महात्मा—अनामिका उंगली वैश्य कहलाती है, अंगूठा धर्म, अर्थात् वैश्य धर्म से कमाए और धर्म में लगाए।

प्यारे! सर्व प्रथम पूर्व दिशा में मधुपर्क के छींटे वर डालता है वह इस लिए कि पूर्व दिशा प्रकाश की है। मैं पहले बता चुका हूं कि भोजन तैयार किया हुआ सर्व प्रथम मुख की भेंट किया जाता है। मुख गुरु है इसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है । सन्मार्ग दिखाने वाला गुरु होता है इस लिए सर्व प्रथम गुरु की भेंट करता है आंख, नाक, कान, मन, बुद्धि इत्यादि ये ऋषि कहलाते हैं जो स्वार्थ रहित अग्नि रूप होते हैं। सदैव प्रकाश देते हैं। पूर्व दिशा प्रकाश की है। दूसरी दिशा दक्षिण प्रकृति की है। यह दिशा पितृ लोक की है अर्थात् पितरों की सेवा करे ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पश्चिम दिशा अपने परिवार की सेवा, चौथी दिशा विद्वा (ज्ञानी) पुरुषों की सेवा, नीचे की दिशा जल चर, थल चर जी जन्तु, छटी दिशा आकाश में उड़ने वाले पक्षी इत्यादि । निदा प्रत्येक प्राणी की सेवा करके पश्चात् में गृहस्थी यज्ञ शेष बनाक खावे । यह गृहस्थ में प्रवेश करते समय वर प्रतिज्ञा करता है ऐसा न करने वाला पापी है । देखो ऋग्वेद में लिखा है:—

ऋग्वेद १०-११७-

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि बध इत् स तस्य । नार्यमणं पुष्यति नो सखायो केवलाघो भवति केवलादी ॥

ऋ० १०-११७-५

अर्थात्—दुर्बुद्धि मनुष्य व्यर्थ ही भोग सामग्री को पात है, सच कहता हूँ कि वह भोग सामग्री उस मनुष्य के लिए मृत् रूप ही होती है । ऐसा दुर्बुद्धि न तो यज्ञ द्वारा पुष्टि करता है और न ही मनुष्य साथियों की । सच मुच वह अकेला खाने भो करने वाला मनुष्य पाप को ही भोग करता है । सुना ! वेद भगवा का आदेश ? अब वेद को कौन पढ़े ? आज कल पण्डितों उपदेशकों ने तो पढ़ना नहीं, वह बेचारे पढ़ें कैसे ? उनके पास समय कहां ? प्रातः से रात्रि के १२,१२ बजे तक उत्सव भुगताए, तीन दिन जलसे के गुजरे चौथे दिन का आर्डर कूच, सफर, यात्रा फिर कोल्हू के बैल की भांति वही चक्कर, भला संसार को मार्ग दिखाने वाले आप भी १२ बजे रात्रि तक जागें लोगों को गाना बजाना सुनाना, उपदेश करना और उन को भी बेदार किये रखना ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अब भगवान् की पूजा पण्डित जी कैसे करें। यदि ऐसा न करें तो रुपया कहां से मिले, निर्वाह कैसे हो ? निदान परिणाम यह कि लोगों को गुमराह किया, और आप भी डूबा। जब समय का सोना नहीं तो फिर जागना कैसे हो ? वेदी पर खड़े हो कर ललकार कर उपदेश करते हैं पाँच घड़ी रात्रि रहे जागो, भगवान् की अमृत वर्षा अमृत दात मिलती है। जीवन शुद्ध पवित्र होता है इत्यादि। पर कहने वाले ने कह दिया, सुनने वाले ने सुन लिया, ताली बजाई पल्ला झाड़ कर घर लौट आए। फिर ढाक के वही तीन पात, फिर इनका सत्कार कैसे हो ?

अथर्व वेद में आया है—

"अशितावत्यतिथौ अश्नीयात्" अ० ९ म० ८८

अर्थात्—अतिथि को अपने घर में आए हुए को खिला कर ही स्वयं खाये। जो अतिथि के साथ ही बैठ कर भोजन करता है और अतिथि को अतिथि न जान कर अपने जैसा जान कर भोजन करता है, ऐसा करने से अहङ्कार उत्पन्न होता है, वह अतिथि से लाभ नहीं उठा सकता, किन्तु निरादर करके पाप का भागी बनता है। स्वयं सेवा न की, अभिमानी हो कर सेवक द्वारा सेवा कराई।

कठोपनिषद् में आया है:—

आशा प्रतीक्षे संगतꣳसूनृताञ्चेष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्। एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो——यस्यानश्नन वसति ब्राह्मणो गृहे॥

अर्थात्—जिस गृहस्थी के घर से अतिथि निराश जाता है, उसका जप, तप, यज्ञ, दान आदि सभी शुभ कर्म निष्फल जाते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शिलानप्युञ्छतो नित्यं पञ्चाग्नीनपि जुह्वतः ॥
सर्वं सुकृतमादत्ते ब्राह्मणोऽनर्चितोवसन् ॥

॥ १०० ॥ मनु० अ० ३

भावार्थ—जो ब्राह्मण—अतिथि बिना पूजा पाये घर में रहता है तो उस गृहस्थ का—चाहे वह कितना ही नित्य पञ्च महा यज्ञ और तप व जप का करने वाला हो, तथा नित्य जंगल से चावल चुन कर निर्वाह करता हो सब धर्म नाश हो जाता है।

नोट—वर्त्तमान काल के ब्राह्मण-पुरोहित तो प्रायः खाना जानते हैं—उन्हें सावधान हो जाना चाहिये—

अथर्व वेद काण्ड ९; वाक ३, सूक्त १-२-३ मं० १४।

भावार्थ—जो गृहस्थी सन्यासी से पहले भोजन करता है, वह जानो, गृहस्थों के सुख और उस की सामग्री तथा ईश्वर आदि की (पूर्णता) और उसके साधन का निश्चय करके नाश करता है।

अतः जिस गृहस्थी के समीप अतिथि उपस्थित होवे, उस को पूर्व खिला कर पश्चात् भोग करना उचित है। धर्म शास्त्रों में लिखा है सब का गुरु अतिथि है:—

अग्नि देवो द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः।
पतिरेव गुरु स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ॥

अथर्व वेद काण्ड १५, सूक्त १२—मं० ८ से ११।

अथ य एवं विदुषा व्रात्येनाति सृष्टो जुहोति। न पितृयाणं पन्थां जानाति न देवयानम्। आ देवेषु वृश्चते अहुतमस्य भवति। नास्यास्मिल्लोक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आयतनं शिष्यते य एवं विदुषा व्रात्येनाति सृष्टो जुहोति ॥

अर्थात्—द्विजातियों का अग्नि देवता है, वर्णों का गुरु ब्राह्मण स्त्रियों का गुरु पति और सब का गुरु अतिथि है।

अथर्ववेद कांड १५, सूक्त १२, मं० ८ से ११ तक

भावार्थ—घर में अतिथि के आने पर घर के सब आवश्यक कार्य छोड़ कर सब से पहला कर्तव्य अतिथि का स्वागत करना है मनुष्य को सब से आवश्यक कार्य नित्य कर्म करना होता है जिसके सन्मुख शेष सब कार्य गौण है। वेद अतिथि यज्ञ को सन्ध्या हवन से भी ऊँची पदवी देता है और कहता है कि यदि गृहस्थी, अग्नि होत्र की सब तय्यारी कर चुका हो, यहां तक कि अग्नि भी ला चुका हो उस समय यदि उस के घर कोई अतिथि आ जाये तो उस का यह कर्तव्य नहीं कि वह अतिथि को द्वार पर खड़ा रहने दे और पहले अग्नि होत्र कर ले, नहीं उस को चाहिये कि अग्नि होत्र को छोड़ कर अतिथि की सेवा में पहुँचे। अतिथि का अतिथ्य सत्कार करके उस से यूं आज्ञा ले, भगवन्! मेरा अग्नि होत्र का समय है, यदि आज्ञा हो तो अग्नि होत्रादि से निवृत्त हो जाऊँ। अतिथि की आज्ञा मिल जाने पर ही वह अग्निहोत्रादि कर सकता है इस से पूर्व नहीं।

अब हम वेद के प्रमाणों से अतिथि यज्ञ के लाभ बतलाते हैं, फिर बतलायेंगे कि कैसे अतिथि यज्ञ करने वालों को लाभ हुआ।

चारों वेदों द्वारा अतिथि यज्ञ करने से लाभ

अथर्व वेद कांड ९ सूक्त ६ मं० ८

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् सर्वो वा एष जग्ध पाप्मा यस्यान्नं मश्नन्ति।

अर्थात्—वे सब लोग अपना पाप नष्ट कर लेते हैं जिसके अन्न को अतिथि लोग खा लेते हैं

अथर्व वेद का० ५, सू० मं० ८-९-१०

अतिथीन् प्रति पश्यति हिङ् कृणो त्याभि वदति प्रस्तौत्युदकं याचत्युद गायति ॥ ८ ॥

उप हरति प्रति हरत्युच्छिष्टं विधनम् ॥९॥

निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद ॥१०॥

अर्थात्—जो पुरुष अतिथियों का दर्शन करता है मानो साम गान हिंकार को करता है जब वह अभिवादन करता है तो वह मानो प्रस्ताव करता है जब जल लेकर स्वीकार करने की प्रार्थना करता है तब मानो वह उद्‌ग्रान करता है जब स्वादु पदार्थ इस के सामने रखता है मानो प्रति हार करता है। और उस के भोजन कर चुकने पर शेष बचता है। वह (निधन) है इस का उप भोग करता हुआ गृह मेधी जो इस अतिथि यज्ञ को साम गान के तुल्य बनाता है। वह सम्पत्ति, प्रजाओं, पशुओं का परम आश्रय हो जाता है।

अथर्व वेद कां० ९, सू० ६; म० १०

ओ३म् सर्वदा वा एष युक्त ग्रावार्द्र पवित्रो वितता ध्वर आहृत यज्ञ क्रतुयं उप हरति ॥१०॥

अर्थात्—अतिथि को भोजन देने और उन से शिक्षा ग्रहण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करने से ग्रहस्थी का भण्डार आवश्यक पदार्थों से भरा रहता है ।

सामवेद अ० १ म० ८७

ओ३म् विशो विशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरु प्रियम् । अग्निं वो दुर्यं वचः स्तूषे शूषस्य मन्मभिः

अर्थात्—यदि अन्न धान्य आदि चाहते हो तो मनुष्य मात्र के हितार्थ निरन्तर गतिशील अतिथि को बुला कर सेवा किया करो ।

अथर्व वेद का० ४ सू० ६ म० ९

ओ३म् एतद् वाउ स्वदीयो यदधिगवं क्षीरं वा मांसं वा तदेव नाश्नीयात् ।

अर्थात्—गृहस्थ के लिये यह सुखदाई है कि अच्छे २ रोचक बुद्धि वर्धक पदार्थ फल, बादाम, अखरोट, दूध आदि पहिले अतिथि को खिला कर पीछे आप खावे जिस से वह सत्कृत विद्वान् यथावत् उपदेश करे ।

अ० का० १८ सू० ४ मं० १६ ॥

औ३म् अपूपवान् क्षीरवांश्चरूरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुत भागा इहस्थ ॥ १६॥

भावार्थ—यजमान को योग्य है कि विद्वानों को सत्कार पूर्वक बुला कर शुद्ध, सुगन्धित, मोहन भोग, मालपूड़े आदि पदार्थों से स्थालीपाक से यज्ञ करें ॥ १६ ॥

ओ३म् यां ते धेनु निपृणामि यमु ते क्षीर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओदनम्। तेना जनस्यासो भर्ता योऽन्नास: जीवनम् ॥ अ० का० १८ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य दुग्ध अन्न आदि से विद्वान महात्माओं की सेवा करते हैं वे पुरुषार्थी अपना जीवन निश्चि बिताते हैं।

ऋषि दयानन्द जी महाराज यजुर्वेद के २७-२८वें मन्त्र का भावार्थ लिखते हैं कि जो मनुष्य वेद पाठी ब्रह्म निष्ठ योगी पुरुषों का सेवन करते हैं वे सब अभीष्ट सुखों को प्राप्त होते हैं।

अथर्व-का० ९, सू० ६, म० ६

ओ३म् ए ते वै प्रियाश्चा प्रियाश्च ऋर्त्विजा स्वर्ग लोकं गमयन्ति यदातिथयः।

अर्थात्—अतिथि के शुभागमन से जिनका अतिथि मान पुरोहित है, जो कि यजमान को स्वर्ग लोक में ले जाता है:—

मनु भगवान् कहते हैं:—

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यक्तिक्रमः त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं व्यथा ॥

अर्थात्—जहां गुण वालों का असत्कार और गुणहीनों का सत्कार होता है वहां दुर्भिक्ष होता है, महामारी (प्लेगादि) पड़ती है और व्यथा आती है ।

अतिथि से पहिले नहीं खाना

इष्टञ्च वा एष पूर्तञ्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति। (मन्त्र १)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वह अभीष्ट और शुभकर्मों का (अश्नाति) नाश करता है जो अतिथि से पहिले खाता है।

पयश्च वा एष रसञ्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति । (मन्त्र २)

वह घर के दूध और रस को (अश्नाति) नष्ट करता है जो अतिथि से पहिले खाता है।

ऊर्जां च वा एष स्फातिञ्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति । (मन्त्र ३)

वह घर के प्राक्रम और वृद्धि को नष्ट करता है जो अतिथि से पहिले खाता है।

प्रजाञ्च वा एष पशूंश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (मन्त्र ४)

वह घर की सन्तति और पशुओं को नष्ट करता है जो अतिथि से पहिले खाता है।

कीर्तिञ्च वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (मन्त्र ५)

वह घर की परम्परागत कीति और यश को नष्ट करता है जो अतिथि से पहिले खाता है।

श्रियं च वा एष संविदं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (मन्त्र ६)

वह घर की सम्पत्ति और संविज्ञान को नष्ट करता है जो अतिथि से पहिले खाता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियः तस्मात्पूर्वो ना-
श्नीयात्। (मन्त्र ७)

यह मन्त्रवित् ही अतिथि है इस लिये इस से पहिले
खावे।

तीसरा उपदेश

सत्य पाल—महाराज! यह कैसे जानें कि यह यो
अतिथि है। आज कल तो जो गेरु वस्त्र धारण किये गुजरता
तो उस को प्रायः ५८ लाख साधु कह कर उस से व्यंग (ठ
करते हैं।

सन्त महात्मा—बेटा! ऐसा कहने वालों की यह भूल है
यह उनकी अहङ्कार वृति है जो मनुष्य का नाश कर देती है
सुनो! जिस रंग वाला चश्मा तुम्हारी आंखों पर होगा,
संसार उसी रंग का ही प्रतीत होगा, लाल चश्मे से लाल, नी
से नीला, पीत से पीत, और यदि चश्मा सफेद होगा तो व
लाल, काले, पीले की जांच कर सकेगा जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि
हम जैसों को तो ऐसा करना चाहियेः—

कवि ने लिखा :—

हर कि रा जामाय पारसा बीनी।
पारसा दानो नेक मर्द अंगार॥

अर्थात्—जिस किसी को भक्त के वेष में देखे, उसे भ
समझ और धर्मात्मा जान। हां, जब उसके अवगुण मालूम हो
जाएँ तो उसका परित्याग कर दो। पर हमारी पहचान कैसी है!

यदि धनी का लड़का पीतल की अंगूठी पहन कर तो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सामने आए, तो तू उसे सोने की मानेगा। यदि निर्धन का लड़का सोने की अँगूठी पहन कर आवे तो तू पीतल की समझेगा। यही हमारी पहचान है।

प्यारे! टट्ठा, मखोल करने वाले ऐसे होते हैं। पिछली कमाई खाई, जो मुख में आया वह कह सुनाई वाली बात है।

फ़ारसी के एक कवि ने लिखा है:—

दिल चूं आलूदस्त अज़ हिरसो हवा।
कै शवद मकशूफ़ इसरारे खुदा॥

सद दर तमन्ना दूलत, ऐ बू उलफ़ज़ूल।
कै कुनद नूरे खुदा, दर दिले मनज़ूल॥

अर्थात्—जब तेरा मन साँसारिक विषय वासनाओं में लिप्त है, तो उस में प्रभु के रहस्य कैसे प्रकट होते हैं।

ऐ मूर्ख! जब तक तेरे मन में सैकड़ों इच्छाएँ विद्यमान हैं, तब तक प्रभु की ज्योति उसमें कैसे प्रवेश कर सकती है।

प्यारे! भले बुरे की पहचान करना बड़ी कठिन बात है। हम लोगों की दृष्टि वर्त्तमान युग में दुर्योधन जैसी बनी हुई है।

कवि ने लिखा है:—

तू भला, सब जग भला, भला भला कर देखे।
तू बुरा, सब जग बुरा, बुरा बुरा कर देखे॥
इतनी हो दुश्वार अपनी बुराई की पहचान है।
जिस प्रकार करनी मलामत और को आसान है॥

प्यारे! मैं तुम्हें एक घटना सुनाऊँ। आदरणीय पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को तुम जानते होगे, उन का जैसा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नाम था वैसा काम था,सब को आनन्द देने वाले थे। श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री जो आज कल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिपति हैं श्री पूज्य स्वामी जी महाराज के योग्य शिष्य हैं। जैसा नाम वैसा काम करने वाले हैं। धुरेन्द्र जी राजगुरु क्यों कर बन गये। क्या आप लोगों ने वोट देकर उन्हें अधिकार दिया ? नहीं ! उन्हों ने गुरु भक्ति, गुरु सेवा, एक सच्चे तपस्वी गुरु की की, और उनकी आशीर्वाद से अब सारा देश उन्हें राज-गुरु पद से याद करता है, वह शास्त्री पास होने के कारण नहीं बने। समाज में अनेकों शास्त्री पैसे २ के लिए दर दर पर फिरते हैं। यह है तप और त्याग। और देखो ला० खुशहाल चन्द जी खुरसंद थे फिर महात्मा कहलाए, फिर आनन्द बन गये, अब महात्मा आनन्द स्वामी बन गये। क्या आप लोगों ने उनको यह पदवियां दीं ? नहीं ! किन्तु उनका गुरु महात्मा था। महात्मा हंसराज जी महाराज, उन की वह सेवा की जिस की सीमा नहीं, उन को जूता भी स्वयं उठा कर पहनाते थे गुरु सेवा करते फूले नहीं समाते थे। अब आनन्द स्वामी नाम से पुकारे जाते हैं। अपने गुरु के चरण चिन्हों पर चल कर अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं। जहां भी जाएँ, अपने मुस्कान मुख से सब को हंसा देंगे। वेद के सच्चे पुजारी, ईश्वर के पक्के भक्त हैं।

अब स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के कुछ गुणगान करता हूँ, कि जिसने अपने मधुर भाषण, सरल स्वभाव और तपस्वी, त्यागी और आदर्श जीवन से मनुष्य मात्र को, बिना भेद भाव किसी मत के, प्रभावित कर रखा था।



CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी महाराज और हमारी दृष्टि

श्री स्वामी जी ने लाहौर समाज के उत्सव पर जाना था। जब गाड़ी का समय हुआ तो लंगोटा, सोटा, कमण्डल, कमली उठाई और चल पड़े। मार्ग में एक नवयुवक मिला, उसे स्वामी जी ने कहा, प्यारे! भूख लगी है दो पैसे के छोले ले दो, तो नवयुवक माथे पर तेवड़ी भर कर क्रोध से बोला, "अपने को देख, कितना वड़ा कद, छः फुट का है, जा जीविका कमा और खा। तू लंगड़ा, अन्धा थोड़ा है जो तुझे दूँ। यह कहते हुए वेग से चला गया, और स्वामी जी हंसते रहे। स्टेशन पर पहुँचे, लाहौर का टिकट लिया, गाड़ी में बैठ गये, वह नवयुवक जिसने छः फुटा कहा था, वह भी लाहौर उत्सव पर जा रहा था। वह क्यों? इस लिये कि श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का उपदेश कालिज विभाग में होगा उन के उपदेशों को सुनने और दर्शन करने जारहा था। जब गाड़ी लाहौर स्टेशन पर पहुँची तो नवयुवक ने जेब से घड़ी निकाल कर समय देखा, तो स्वामी जी के उपदेश का समय था। तुरन्त गाड़ी से निकल टांगा पर सवार हो कर समाज पहुंचा और वेदी के पास जाकर बैठा ताकि दर्शन और श्रवण दोनों सुभीता से कर सके।

प्यारे! स्वामी जी के पास द्रव्य इतना था कि टिकट में ही पूरा हो गया। गाड़ी से उतर सीधे पैदल समाज मन्दिर को चल दिये। शेष पांच मिनट रहते थे कि वह चुपके से जा कर पण्डाल में बैठ गये। उस समय वहां एक विद्वान् का उपदेश हो रहा था, वह उपदेश सुनते रहे। जब उपदेश समाप्त हुआ, तो श्री महात्मा हंसराज जी महाराज ने खड़े हो कर कहा कि इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समय पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का उपदेश होना था परन्तु वह अभी तक नहीं पधारे। जब श्री स्वामी जी ने यह सुना तो शीघ्र कोने से खड़े हो कर बोले नहीं, नहीं ! मैं तो आ गया हूँ। अब पण्डाल तालियों से गूंज उठा, मानो श्रोताओं की जान में जान आ गई। सब के हृदय प्रसन्नता से फूल उठे। अब श्री महात्मा हंसराज जी ने कहा, "श्री स्वामी जी महाराज यात्रा से थके हुए आये हैं, मैं उनको कष्ट नहीं देना चाहता"। स्वामीजी ने कहा, नहीं, नहीं इसी लिए तो मैं समय पर पहुँचा हूँ, तो लोग हंस पड़े, अब श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज वेदी पर पधारे तो वह नवयुवक जिसने छः फुटा कहा था और दो पैसा के छोले मांगने पर ठुकराया था जब उस की दृष्टि स्वामी जी पर पड़ी तो लज्जा के मारे मुख नीचे कर लिया और रोना आरम्भ कर दिया मानो अपने मन में कह रहा है, "अरे दुष्ट। जिसके दर्शन के लिए कुछ काल से मन में इच्छा थी, भगवान् ने तेरे पर कृपा की सेवा का अवसर दिया, दो पैसे के छोले मांगने पर इतना निरादर किया, बजाए अपना भाग्य बढ़ाने के अपने सौभाग्य का विनाश कर दिया। निदान जब तक उपदेश होता रहा, उस ने लज्जा से मुख ऊपर न किया। अब जब श्री स्वामी जी महाराज उपदेश समाप्त करके बैठ गये तो वह नवयुवक चरणों में नत मस्तक हो कर रोने लगा, और क्षमा प्रार्थी हुआ। स्वामी जी ने कहा, कोई बात नहीं बेटा ! केवल तू नहीं, बल्कि आज कल का वायु मण्डल ही ऐसा बना हुआ है, पर तू ने अच्छा किया, प्रायश्चित्त कर लिया है, बस सदा के लिए सम्भल कर रहना। किसी को अपशब्द न कहना चाहिए, चाहे किसी को कुछ भी न दो।

प्यारे ! बताओ आज-कल कैसी विद्या और कैसी क्रिया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है। है दुर्योधन वाली दृष्टि वर्त्तमान समय में, या नहीं। प्यारे, जिसके हृदय में संसार के कल्याण और भलाई की लग्न होती है, वह संसार से मान नहीं चाहते, वह अपने लक्ष्य के पुजारी होते हैं। इञ्जन बन कर अपना काम करते हैं। मस्त हो कर चलते हैं, वह किसी के अधीन नहीं होते, वे स्वामी के आश्रय रहते हैं। स्वामी का काम समझ कर करते हुए अपने आप को उस का सुपुत्र समझते हैं। वे कर्त्तव्य परायण होते हैं। वे केवल आर्य समाज मन्दिर की चार दीवारी के प्रचार के लिए नहीं होते, वे विश्वव्यापी के पुजारी हो कर विश्व भर में काम करते हैं। सत्य के पुजारी सत्य का प्रचार करते हैं।

आत्माभिमानी-प्रचारक, सुधारक

एक सन्यासी महात्मा का कथन

एक उपदेशक ने उपदेशक विद्यालय से विद्या समाप्त की, वे प्रचार के लिए एक समाज में गए तो मन्त्री जी ने पण्डित जी पर अपना शासन जमाना चाहा। पण्डित जी से कहा, "मैं आप के विरुद्ध सभा को रिपोर्ट करता हूँ" जब पण्डित जी ने यह शब्द सुने तो मन में विचार किया, कि यह विचित्र लीला देखी, मैं ने संसार के और सारे धन्धे छोड़े, तीन चार वर्ष वेद विद्या पढ़ी, इस लिए कि संसार में धर्म प्रचार करूं, सब कामनाएं छोड़ कर इस भावना से कि दो रोटियाँ पेट में डालनी हैं, तन के लिए वस्त्र चाहिए, पर यहां आ कर खूब देखा। यह मन्त्री जी जो दिन भर दुकान पर बैठ कर टेढ़ी तराजू चलावें, वाणी, हाथों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

से असत्य व्यवहार करें, पैसे २ के लिए सिर पटकें, असत्य बोलें असत्य करें, और, फिर मुझे धमकी देते हैं कि तेरी रिपोर्ट करता हूं। मन में चकित हो कर कहा मानो यही हमारी दासता है। वह शीघ्र वहां से चल पड़ा और साधुओं के गेरुवे वस्त्र पहिन लिए और सनातन धर्म सभा में चला आया। जब सभा में पहुँचा तो गेरुवे वेष में साधु को देख कर सभा अधिकारी ने सत्कार किया और आसन जल इत्यादि भेंट किया और ठहरने की प्रार्थना की तो स्वामी जी ने ठहरना स्वीकार कर लिया, अधिकारी ने स्वामी जी की भोजन इत्यादि से श्रद्धा पूर्वक सेवा की। वार्त्तालाप करने पर सभा को ज्ञात हो गया कि यह विद्वान् साधु है, खूब सेवा की। २-४ दिन इस प्रकार सेवा करते रहे। एक दिन सभा के मन्त्री ने कर जोड़ प्रार्थना की, कि महाराज! क्या सत्संग में कथा करने का कुछ समय प्रदान कर सकते हैं, भक्त प्रेमी याचना कर रहे हैं तो स्वामी जी ने कहा, हां, जब चाहें। तो मन्त्री जी ने कहा, महाराज अमुक मंडी में सत्संग के लिए प्रार्थना पत्र आया है कब के वास्ते उन्हें स्वीकृति दूं। तो स्वामी जी ने कहा, जब आप चाहें, मुझे कोई आपत्ति नहीं। अब मन्त्री जी ने मण्डी में तार कर दी कि स्वामी जी कल की गाड़ी में आप के यहां पधार रहे हैं, बड़े त्यागी तपस्वी विद्वान् महात्मा हैं, श्रद्धा पूर्वक स्वागत सत्कार करें और उनके अमृत वचनों से लाभ उठावें। अब जब स्वामी जी गाड़ी पर से उतरे, तो क्या देखा कि बड़ी संख्या में नर नारी पुष्प मालाएँ लिये स्टेशन पर स्वागत के लिए उपस्थित हैं। सब ने नतमस्तक हो कर प्रणाम किया, पुष्प मालाएँ पहनाईँ। फूलों से सजे हुये तांगे पर स्वामी जी को सवार किया। बैंड बाजा आगे है। प्रेमी सनातन धर्म की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जय, स्वामी जी महाराज की जय पुकारते हुवे इस जुलूस को नगर में गुंजार कर ले गए। बड़ी श्रद्धा प्रेम से सेवा शुश्रुषा की। रात्रि को स्वामी जी के व्याख्यान होने की घोषणा कर दी गई। बड़ी जन संख्या उपस्थित हुई नियत समय पर स्वामी जी वेदी पर पधारे, उपदेश किया, पर आर्य समाज के विरुद्ध। अब आर्य समाजी भी बैठे हुए सुन रहे थे, सभी सुन कर आग बबूला हो गए। समाज मन्दिर में जा कर सभा की और निश्चय किया कि कल सभा को तार देकर उपदेशक भजनीक मंगवाए जाएँ जिस से सनातनियों का खण्डन किया जाय प्रातः को मन्त्री जी दुकान पर पहुँचे, तो दो आर्य सज्जन आए और बोले, क्यों मन्त्री जी, सभा को तार दी है या नहीं? मन्त्री जी ने कहा, अभी देकर आया हूं।

नवयुवक—क्या तार डबल दी है?

मन्त्री—नहीं महाराज।

नवयुवक—वाह मन्त्री जी। आप भी कुछ नहीं। हमें रात भर चैन नहीं आया अब आप डबल तार और दें। इस समय पैसे को थोड़ा देखना है। अब मन्त्री जी फिर डाकखाने गए और डबल तार जाकर दी दोपहर को गाड़ी लाहौर से आ गई तो दौड़ते हुए आर्य प्रेमी स्टेशन पर गये, देखा पण्डित जी नहीं आए। बड़े दुःखी होकर सभा को कोसते हुए कहने लगे कि सभा परवाह नहीं करती, योंही उसे रुपया देते हैं। तारें दीं, परवाह तक नहीं की। अब मन्त्री जी के यहां पहुंचे और कहाः—

नवयुवक—मन्त्री जी, गाड़ी खाली आई है, पण्डित आदि कोई नहीं आया। कृपा करके एक डबल तार और दो। देर करना अच्छा नहीं, और तार जाने पर सभा को मालूम होगा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कि अब अवश्य भेजना चाहिए। तो सायं की गाड़ी उपदेशक आदि अवश्य आ जायेंगे। अब मन्त्री जी ने जाकर एक डबल तार और दी।

प्यारे! सोचो। यदि अपना कमाया हुआ धन होता, तो ऐसे पैसे व्यय करते? अब किस बेदर्दी से पैसे व्यय किया जा रहा है। हम तुम कहने को तो सभी शेर हैं, यदि मैदान में कूदना पड़े तो पण्डित जी सिर मुँडावें, उपदेश हों तो उन का परयश लेने के यह अधिकारी। प्यारे! सायं की गाड़ी में पण्डित जी उतरे तो पण्डित जी को ले कर समाज मन्दिर में पहुँचे, तो कहते लगे, कि पण्डित जी! आज रात को सनातन धर्म का खूब खण्डन करो। मुंह तोड़ उत्तर दो, आनन्द आए। आप के आ जाने पर हमारी जान में जान आ गई है।

पण्डित जी—महाशय! मुझे आज स्वामी जी का व्याख्यान सुनने दो, कल उसका पूरा उत्तर दूँगा।

एक महाशय—वाह! पण्डित जी, वाह! आप भी विचित्र मनुष्य हैं, स्वामी जी ने तो कल उपदेश देकर हमारा दिल जला दिया है। हमें सारी रात चैन नहीं आया।

पण्डित जी—देखो, महाशय जी! जब तक विषय का ज्ञान न हो, कैसे उत्तर दिया जावे? क्या कोई अपने ऊपर हंसी करानी है?

दूसरा महाशय—लो जी! पण्डित जी की भी सुनें। हम ने कितना खर्च किया है, दिन भर का काम छोड़ दिया है, हमें आराम नहीं। पण्डित जी कहते हैं विषय का ज्ञान नहीं, इस लिए कल बोलेंगे। क्या हमने नहीं सुना था। हम आप को सुना देते हैं। स्वामी जी ने अमुक २ बातें कहीं थीं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तीसरा—अरे भाई! यह बात भी स्वामी जी ने कही थी।

चौथा—महाशय जी—यह बात भी कही थी।

पण्डित जी—देखो प्यारे! कोई सिर कहता है, कोई टांग, कोई काम बिना पूरी प्रकार जाने अच्छा नहीं होता। इस में क्या आपत्ति है, उपदेश आज नहीं कल प्रातः हो जायगा। घबराते क्यों हो?

पाचवां—लो जी और सुनो। कहते हैं आज न सही, कल उपदेश हो जायगा, इनके सिर में दर्द हो तो दवा करें, इस लिए सभा को हम रुपया देते हैं? इतना व्यय करके आप को मंगवाया है। क्या आप उपदेश सुनने आए हैं या सुनाने? बस आप मूर्ति, श्राद्ध इत्यादि का खण्डन करें।

पण्डित जी—अच्छा भाई बताओ! यदि मैं आज न आता तो आप कैसे गुजारते?

छटा—और सुनो! अरे, जब तुम आ गये तो आने और न आने की बात ही क्या रही? उत्तर देने की शक्ति न थी तो आए क्यों? मुफ्त में बहाने बनाते हो।

अब पण्डित जी ने प्रेम से कहा, देखो भाई! आज मैं नहीं बोलूंगा, जब तक उस का उपदेश न सुन लूं। अब सब आर्य जल भुन गये परस्पर कहने लगे, हमारा किया कराया सब व्यर्थ गया, फिर भी सभा से सम्बन्ध रखो! रुपया दो। समय पर काम न आए तो सभा किस काम की? निदान सब रुष्ट हो गये। रात्रि को स्वामी जी का उपदेश हुआ, वह भी समाज के विरुद्ध, पहले से भी बढ़ चढ़ कर। पण्डित जी ने भी सारा उपदेश सुना।

अब पण्डित जी ने स्वामी जी को उपदेश उच्चारण से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पहचान लिया कि यह मेरे सहपाठी हैं। अब पूरे सन्तुष्ट होकर समाज मन्दिर में लौट आए। आर्य पुरुषों ने जब यह दूसरा उपदेश सुना तो और दुःखी हुये, मानो उस ने जलती पर तेल का काम किया। पर अब क्या हो सकता था। अपने बस की बात न थी। चुप हो कर अपने घरों को चले गये। प्रातः काल पण्डित जी उठे, शौच, स्नानादि से निवृत्त हो कागज, कलम, दवात उठाई और स्वामी जी के नाम पत्र लिखा कि मैं आपके दर्शन करना चाहता हूं, कृपया समय दीजिये। स्वामी जी ने पत्र पढ़ा और बड़ी प्रसन्नता से उत्तर दिया कि आप अवश्य दर्शन दीजिये। किसी भी समय आप पधार सकते हैं। अब पण्डित जी स्वामी जी के स्थान पर पहुँचे, बाहर से देखा कि स्वामी जी कमरे में विराजमान हैं, सुन्दर गलीचे बिछे हुए हैं और तकिये लगे हुवे हैं और अनेकों नर नारी इधर उधर बैठे हुए हैं। स्वामी जी के चारों ओर फल, मेवा रखा हुआ है। पण्डित जी ने अपने आने की सूचना दी। तो स्वामी जी ने उपस्थित नर नारियों को कहा कि इस समय एक विद्वान् महात्मा मिलने के लिए बाहर खड़े हुए हैं, आप कृपया अब जायें, सायं काल को फिर सत्संग चर्चा करेंगे। प्रेमी तत्काल उठकर नतमस्तक नमस्कार कर बाहर चले गये। अब पण्डित जी को स्वामी जी हंसते हुए ऐसे गले लग गये, मानो कृष्ण सुदामा का मेल हो। स्वामी जी ने पण्डित जी को साथ ले जाकर आसन दिया, जल पान कराया, और निम्न प्रकार परस्पर वार्तालाप करने लगे:—

पण्डित जी—भाई! यह क्या बात है? जिस स्थान पर विद्या पाई और पले पोसे, उसके विरुद्ध प्रचार?

स्वामी जी—पण्डित जी! आप का कथन सत्य है, शीश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

झुकाता हूँ, पर यह दो दिन जो मेरे प्रचार में गुज़ारे हैं, मैंने जान बूझ कर समाज के विरुद्ध किया है। वह क्यों ? आप लोगों को बुलाने के वास्ते। अब मेरी इच्छा पूरी हो गई है। अब मैं आप से पूछता हूँ कि आप देख रहे हैं कि अब मैं किस अवस्था में बैठा हूँ कोई मुझे कमी है ? कितने नर नारी बैठे थे। धर्म चर्चा हो रही थी। इन में जिज्ञासा थी, तो आये थे और हमारा खाया भी सफल हुआ। आर्य समाज मन्दिर में तो सारा दिन कमरे के अन्दर बैठे रहते हैं, न कोई आये, न कोई जाये। बस कमरा और हम, मन्दिर का रूप भी नहीं। मसजिद, गिरजा, गुरुद्वारा, सनातन धर्म के मन्दिर देखो, क्या सफाई और क्या आदर सत्कार, जहां जाते ही माथा झुक जाता है। श्रद्धा के परमाणु भरे हुवे हैं। पूजा का स्थान, पूजा अर्थ। पर वहां तो यह हाल है गंगा गए तो गंगा दास, जमना गए तो जमना दास, वाली बात है। हम जो दूसरों को सुनाते थे, अपनी क्रिया में ला रहे हैं। अपनी कही अपने सन्मुख आई, कैसे ? लो सुनो।

सप्ताह में एक ही बार सत्संग हुआ, दरिया बिछ गईं दो घण्टे सत्संग के बाद वही अवस्था, जहां तहां पाठशालाएँ लगी हुई थीं, उन्होंने तो भगवान् को मन्दिर से निकाल दिया है। मन्दिर व्यापार घर बना रक्खे हैं। क्या पण्डित जी मैं असत्य कह रहा हूँ ? भला, मैं आपके स्थान पर आऊँ, आप का कितनी सफाई इत्यादि का स्थान होगा। अब मैं यहां किसी धन के लोभ से नहीं आया, अपनी मान प्रतिष्ठा के कारण नहीं आया। मान भावना संसार के सुधारक के लिए ज़हर हुआ करती हैं अब आप देखें, प्रचार क्षेत्र का स्थान यहां है या वहां। जहां मन्त्री कहता था, तेरी रिपोर्ट सभा को दूंगा अथवा करता हूँ। भाई टीले पर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वर्षा हो वहां कुछ बोया जाय, क्या उगेगा ? बताओ, बस मैंने आप लोगों को यह दिखाना था कि बीज वहां बोओ, जो योग्य भूमि हो। अब आप यह विश्वास करें आज से फिर मैं ऐसा प्रचार कभी नहीं करूंगा काम वही करूंगा जो वेद का आदेश होगा पर रहूंगा यहाँ पर, आप निश्चिन्तरहें। अब पण्डित जी आज्ञा लेकर मन्दिर में चले गये। रात्रि को स्वामी जी ने फिर उपदेश किया, जो भक्ति रस से भरपूर। इस ढंग से भाषण दिया कि सारी जनता गद्‌गद् प्रसन्न हो गई। अब आर्य पुरुष शान्त चित्त हो कर पण्डित जी के गिर्द हो गये, और कहने लगे, पण्डित जी ! आपने कमाल कर दिया है। सांप भी मर गया, लाठी भी बच गई। अब सभी क्षमा याचक थे।

प्यारे ! आज कल के लोग ऐसे हैं, पहले फल चाहेंगे और फिर बीज बोयेंगे। न स्वयं कुछ करेंगे न किसी को करने देंगे, प्यारे ! जब पण्डित जी गाड़ी पर से उतरे थे और उन्हें मन्दिर में लाये थे, किसी ने पानी तक न पूछा था, हम तुम करते रुष्ठ हो गये थे, अब क्षमा मांग रहे हैं।

———

मेरी आंखों देखी घटना

—:)❀(:—

तपस्वी त्यागी पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का आदर सत्कार

मैं मुल्तान में था। तो मुझे एक दिन किसी प्रेमी ने सहर्ष सूचना दी कि आज पूज्यपाद स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज आर्य समाज मन्दिर बोहड़ दरवाजा गुरुकुल विभाग में पधार रहे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हैं। मैं सुनते ही खुशी से उठ खड़ा हुआ और सीधा श्री स्वामी जी के दर्शनार्थ चरणों में उपस्थित हुआ। श्री स्वामी जी चारपाई पर लेटे हुये थे और अपने हाथ से पंखा कर रहे थे। मैंने नत-मस्तक हो कर नमस्कार किया, महाराज जी के हाथ से पंखा ले कर उन्हें पंखा करना शुरू किया। उस समय में एक प्रेमी महाशय जो अन्तरंग के सदस्य थे, आर्य समाज मन्दिर के द्वार से प्रवेश करते ही जिस प्रकार एक लंगोटिया अपने लंगोटिया साथी से बात करता है, उसी प्रकार दूर से ही ललकार कर कहा, स्वामी जी नमस्ते। अन्दर आते ही फिर ज़ोर से बोला, स्वामी जी नमस्ते। इतने में स्वामी जी के निकट पहुँच गये तो स्वामी जी ने कहा नमस्ते। फिर महाशय बोला, स्वामी जी आपको कल का भोजन किसी ने कहा है ? स्वामी जी चुप रहे तो फिर दूसरी बार महाशय उच्च स्वर से बोला, क्यों स्वामी जी ! कल का भोजन आप को किसी ने कहा है ? तो स्वामी जी ने धीमी स्वर से कहा, कोई कह देगा। अब उस महाशय ने ज़ोर से समाज के सेवक को पुकारा, ओ जगन्नाथ।

जगन्नाथ ने ऊपर की खिड़की से सिर निकाल कर बोला कहिये महाराज क्या आज्ञा है ? तो महाशय जी ने कहा, देखो, कल स्वामी जी का भोजन हमारे घर से ले आना। सेवक ने कहा, बहुत अच्छा महाराज ! अब वह महाशय स्वामी जी से नमस्ते कर के चला गया। प्यारे ! जब मैंने, यह सारी अवस्था देखी तो मेरे मन को अति दुःख हुआ। दिल में विचार आया कि अब संसार का कल्याण कैसे होगा। ऐसे महान् त्यागी तपस्वी वीतराग महात्मा सन्यासी जो वर्त्तमान काल में सत्य का प्रकाश करने वाले केवल यही आत्मा हैं, पर दुर्भाग्य हमारे कि अभी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तक इन का आदर सत्कार करना हम नहीं सीखे । फिर हमारा भविष्य क्या बनेगा ? पर स्वामी जी महाराज मस्त मतवाले सोये रहे । ज़रा भी मन में मान अपमान का भाव न लाये जैसे पहले लेटे हुये थे, वैसे एक रस ही रहे । पर मैं देर तक आश्चर्य में रह गया और दिल में कहा, धन्य हो—महान् आत्मा ! आप की सहन शक्ति ।

प्यारे--स्वामी जी का ९ बजे रात्रि को उपदेश जब हुआ तो प्रारम्भ में स्वामी जी ने गीता के चतुर्थ अध्याय का श्लोक पढ़ाः—

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्ति मचिरेणाधि गच्छति ॥

अर्थात्—जितेन्द्रिय श्रद्धावान् पुरुष ज्ञान को प्राप्त होता है । ज्ञान को प्राप्त हो कर तत्क्षण भगवत् प्राप्ति रूप परम शान्ति को प्राप्त होता है ।

यह श्लोक सुना कर कहा, देखो भाई ! आज हम आपको २०-२५ वर्ष की बीती बात सुनाते हैं, वह क्या ? कि जब हम इस मन्दिर में आते थे तो न जाने, गृहस्थ परिवारों के घरों में टैलीफोन लगा होता था कि स्वल्प चिर विश्राम के पश्चात् ही सब नरनारी मन्दिर पहुँच जाते, नम्रता प्रेम से नमस्ते करते और यों मुझ से कहते, स्वामी जी महाराज ! आज भोजन की कृपा मुझ पर करें, दूसरा कहता, मुझे गतवार भी सेवा का अवसर नहीं दिया गया था, अब अवश्य कृपा करें । तीसरा कहता, महाराज ! आपने गत वर्ष मेरे से वचन दिया था कि जब फिर आयेंगे तो तेरे घर पर भोजन करेंगे दूसरी ओर देवियां कहतीं. नहीं, अब तो हमारे ऊपर कृपा करें । क्योंकि हम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इन सब से पहले सेवा में पहुंची हैं। और छोटे बच्चे जो साथ होते थे, वे खुशी से उठ कर मेरे गले से लिपट जाते थे और कहते थे, नहीं नहीं, भोजन मेरे घर करो। तो प्यारे ! ऐसी श्रद्धा भावना देख कर हम फूले न समाते थे। तो हम यह कहते थे, भाई हम ने दो रोटी खानी हैं भले राम लाल खिलाये अथवा सत्यवती या कोई और, यह तुम आपस में निर्णय कर लो। पर आज इस समय का वहीं मन्दिर और वही वेदी है जहां पर अब बैठा हूँ और उस समय के सज्जन भी यहां पर उपस्थित हैं। मुझे २०-२५ वर्ष आप लोगों को उपदेश करते करते हो गये, आज उन उपदेशों का फल मुझे वह मिला है, कि मेरे से पूंछा जाता है कि स्वामी जी ! कल का भोजन आप को किसी ने कहा है ? भाई देखो ! हमारे उपदेश करने और आप के सुनने से कुछ बनता तो है नहीं, पर हम इतना जानते हुए भी बाज नहीं आते, क्यों ?

प्यारे ! इस से एक लाभ यह होता है कि आपने सुना कि समाज में साधु आ गया है, आज चल कर उपदेश सुनें, तो आप आये। आज किसी ने सिनेमा जाना था, वह वहां न गया, हुक्का सिगरेट पीने वाले ने एक घण्टा उस का सेवन न किया, और निन्दा चुगली (पिष्ठ पेषण) से बच गये, बस भाई। इतना ही लाभ हुआ। बाबा ! अब कोई ऐसी शक्ति आये जो ऐसी बिगड़ी को बना दे।

प्यारे ! यह उपदेश स्वामी जी के अन्तिम समय का है, यहां से सीधे अजमेर पहुँच कर परलोक सिधार गये। अब तो प्रभु ही आर्य जाति के उत्थान और कल्याण के लिए किसी महान् आत्मा को भेजें।

सत्यपाल—महात्मा जी महाराज ! सचमुच हमारी मत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मारी गई है, आपके अमृत उपदेशों ने तो सचमुच हमारे मृत प्राय: जीवन के अन्दर एक नये जीवन का बीज बो दिया है। जहां वेद भगवान् स्वयं अतिथि की महिमा गाता है, हम तो केवल वैदिक धर्म की जय बुलाने वाले ही बने रहे, "न कुछ करेंगे, न करने देंगे" वाला उदाहरण बने हुये हैं। हम तो महाराज! वेदादि ने जो अतिथि की महिमा गाई है, उसके आगे सिर झुकाते हैं, पर कृपया वर्तमान काल में वेदानुसार सेवा करने में किसी को लाभ भी हुआ, यह बताइये, कैसे अतिथि सेवा से स्वर्ग प्राप्ति, धन धान्य से भरपूर होता है ?

सन्त महात्मा—सुनो ! सफलता की पहली बात है श्रद्धा।

वेद ने कहा:—

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः ।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ॥

ऋ० १०-१५१-१॥

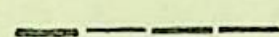
अर्थात्—श्रद्धा से अग्नि प्रदीप्त होती है और श्रद्धा से आहुति दी जाती है, आत्म बलिदान किया जाता है। सब भजनीय वस्तु के (भागधेय) धर्म के ऐश्वर्य मूर्धा स्थान में श्रद्धा का हम लोग वाणी द्वारा (वेद वाणी द्वारा) प्रगट करते हैं। प्यारे! सब करना धरना बेकार है। जब जीवन ही मृतक समान है। श्रद्धा जब तक उसके अन्दर न हो, जीवन मृत प्राय: जीवन है।

———

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निर्धन से धनी
कंगाल से खुशहाल

महाराजा भोज के समय का दृष्टान्त



एक दिन राजा भोज मन्त्री सहित मृगाखेट को बन में गये, दोनों ने मृग के पीछे घोड़े दौड़ाये, सायं हो गई, मृग न पकड़ा गया और घोड़े दोड़ते २ थक कर चूर हो गये। अब बन में रात्रि कैसे बितायें, तो राजा ने मन्त्री से कहा कि कोई घौंसला ढूंढो तो रात बितायें, घोड़े तो चलते नहीं। मन्त्री ने कुछ दूर से धुआं देखा मन में विचार लिया कि यहां कोई आवादी अवश्य होगी। राजा को लेकर वहां पहुँचे तो क्या देखा कि एक फूस का झोंपड़ा है। मन्त्री ने आवाज़ दी, भाई ! कोई भीतर है ? आवाज़ सुनते ही एक बूढ़ा बाहर निकला, नतमस्तक हो कर घोड़ों की बाग लेकर एक ओर बांध दिये । एक साधारण सी चादर जो उस बेचारे के पास थी, फूंस पर बिछा दी। यह दोनों लेट गये। बूढ़े ने दबाना शुरू किया। अल्पकाल के पश्चात् बुढ़िया ने जबार की ४ रोटियां पकाईं। चारों रोटियां उन अतिथियों के आगे धर कर कहा, यह रूखा सूखा अन्न भगवान् का है, कृपया इसे स्वीकार करें। राजा मन्त्री दोनों भूखे थे। एक २ रोटी उठाई। एक ग्रास मुख में डालें और आपस में कहें, यह रोटी बड़ी स्वादी हैं, ऐसी रोटी आज तक नहीं खाई। एक २ रोटी खाने पर पेट भर गया। शेष दो रोटियां बूढ़े को लौटा दीं । बाद में बूढ़े और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बुढ़िया ने खाईं फिर आकर राजा और मन्त्री को जो लेट रहे थे, दबाना शुरू किया। यों समझो, राजा की जान में जान आ गई। राजा ने प्रसन्नता पूर्वक दोनों को कहा, बस बाबा ! जा कर आराम करो। आप लोगों का धन्यवाद ! दोनों ने नमस्कार किया और अपने स्थान पर सो गये। प्रातः को राजा ने बूढ़े का नाम व पता पूछ लिया और नोट कर चल पड़े। जब दरबार में पहुंचे तो राजा ने मन्त्री को आदेश किया कि किसी पुलिसमैन को भेज कर उस बूढ़े बुढ़िया को बुलवायें। सिपाही आज्ञा ले कर बूढ़े के द्वार पर गया और कहा ओ बूढ़े और बुढ़िया ! चलो। थाने में तुम्हें बुलाया है। अब दोनों कांपने लगे और हाथ जोड़ पांव पकड़ बोले, माई बाप ! हम ने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा। हम लकड़ियां जंगल से चुन कर शहर में बेचते और आटा लाकर खाते, पकाते हैं और देख लो हमारे अन्दर, कुछ भी नहीं। हम पर दया करो। सिपाही ने कहा, हमें बहुत बातें मत सुनाओ, बस आज्ञा है आगे चलो, नहीं तो दो थप्पड़ लगेंगे। अब बेचारे राम राम पुकारते हुये सिपाही के साथ हो लिए। थाना पर पहुँचे तो बूढ़ा और बुढ़िया दौड़ कर थानेदार से यूं क्षमा याचना करने लगे। भगवन् ! हम निरपराध हैं, हम पर दया करो। अब हमारी जान में जान नहीं है। थानेदार ने कहा, भाई मैं क्या करूं, दरबार की आज्ञा है, जाओ दरबार में पुकार करो। यह जब सुना कि दरबार में उपस्थित होना है, तो दिल धड़कने लगा। बूढ़ा और बुढ़िया ने आपस में कहा कि हम ने ऐसा कौन सा अपराध किया है कि दरबार में हाज़िर होना है। बेचारे कांपते २ दरबार में पहुँचे। जब राजा के सामने हुये तो दोनों गिड़गिड़ा कर बोले, "माई बाप ! हम निरपराध हैं, निर्दोष

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हैं। हम लकड़ियां चुनकर लाते हैं, वही बेचकर अपना निर्वाह करते हैं" राजा ने हंस कर कहा, "प्यारे ! तुम निस्सन्देह निर्दोष हो पर, तुम तो पूजा के योग्य हो, डरो नहीं" । अब राजा ने मन्त्री को आज्ञा दी कि २० सहस्र रुपया खजाने से दिलवा दो और राजा ने दोनों को सम्मान पूर्वक विदा करते हुये कहा कि तुम दोनों धन्यवाद के पात्र हो यह रुपया तुम्हारी सेवा में भेंट है । तुम दोनों ने हमारी सेवा की थी । जाओ अपना मकान बनाओ और आराम से रह कर अपना शेष जीवन सुख से बिताओ। जब भी कभी मेरी सेवा की आवश्यकता हो तो मुझ से मिलो।

प्यारे परमात्मा का नाम गरीब नवाज़ है, अमीर नवाज़ नहीं। वर्त्तमान में यदि निर्धन किसी धनी के द्वार पर जाए, तो क्या धनी निर्धन का सत्कार करेगा ? कदापि नहीं, बल्कि दूर २ करेगा। प्यारे—जहां भगवान् है वहाँ उदारता है, त्याग भावना होती है। धनी को धन का गर्व होता है परन्तु निर्धन प्रभु के आश्रय होता है, सदैव उसका नाम लेकर खाता पीता है।

बूढ़ा बूढ़ी ने रुपया लिया, और जान में जान आ गई । अब फूले नहीं समाते । अब सब राजा को नमस्कार कर उसके लिये शुभ कामनाएँ करते हुए झोंपड़े में पहुँचे। झोंपड़े के स्थान पर भवन बनाया और आनन्द से जीवन बिताने लगे।

एक दिन स्त्री ने पति से कहा, यह तो राजा और मन्त्री को ज्वार की रोटी खिलाने का फल है कि इतना धन मिला यदि राजा के पास अच्छी से अच्छी वस्तु भेंट की जाती तो अधिक धन मिलता। अब यदि राजा के पास उत्तम वस्तु भेंट की जाएँ तो पुष्कल धन मिलेगा, पति ने विचार के पश्चात् मन में पत्नी की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बुद्धि की सराहना की और दूसरे दिन प्रातः उठते ही नगर से उत्तम पदार्थ, एक परात, और एक सुन्दर रूमाल खरीद कर मज़दूर से उठवा घर पर लाया। पत्नी ने वस्तुओं को सजा कर रूमाल से ढक कर नौकर से उठवा राजा की भेंट के लिए पति को भेजा। जब बूढ़ा राजद्वार पर पहुंचा द्वार पाल से कहा कि राजा को सूचना कर दो कि मैं कुछ भेंट करना चाहता हूं। द्वार पाल से सूचना पा कर राजा ने कहा कि उस बूढ़े से कह दो, "हमें जरूरत नहीं है, वापस ले जाओ"। बूढ़ा उत्तर सुन कर निराश हो घर को लौटा और दिल में कहने लगा कि रुपया भी खर्च किया पर काम न बना, घर पहुंचा तो पत्नी को समाचार सुनाया तो पत्नी ने कहा कि वास्तविक बात यह है कि राजा एक साधारण व्यक्ति तो नहीं, यह उपहार राजा के योग्य भी न था। और अत्युत्तम वस्तुएँ लेकर जाएँ। अब बेचारा दूसरी बार नगर में गया और बहुत उत्तम चमकीली वस्तुएँ खरीद लाया। पत्नी देख कर प्रसन्न हो गई और पुनः देवी ने सब वस्तुओं को सजा कर सेवक के सिर पर रखा और पति को साथ कर दिया। राज द्वार पर पहुंच कर बूढ़े ने पूर्ववत राजा के पास सूचना भेजी। राजा ने कहला भेजा कि मैं अभी आता हूं तनिक ठहर जायें। अब बूढ़ा मन ही मन बड़ा प्रसन्न होने लगा और पत्नी की बुद्धिमत्ता की सराहना करने लगा। इस अवान्तर में राजा ने एक साधु का भेष बदल कर एक हाथ में कमण्डल और दूसरे में सोटा लेकर अन्य द्वार से बाहर निकले और बूढ़े के सम्मुख जा कर भिक्षा याचना की और कहा कि भाई, परमात्मा के नाम पर कुछ दो। तो बूढ़े ने कहा कि जा जा दूर होजा। उसे साधु ने फिर दीनता से कहा बाबा! भगवान् के नाम पर कुछ दे दो,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कई दिनों का भूखा हूँ, यह कह कर दुआएँ देने लगा परन्तु बूढ़े ने फिर कहा, जा बाबा ! क्षमा कर। दूर हो जा, यह तेरे लिए थोड़ा ही लाया हूँ ? अब राजा ने साधु का भेष दूर कर अपना वास्तविक रूप राजन् का दिखाया और बूढ़े से कहा, अरे ! जो धन तुझे मिला था वह राजा की सेवा के प्रतिकार में मिला था । क्या तू उस समय जानता था कि मैं राजा हूँ अथवा उस समय तेरी कोई कामना थी ? बूढ़ा लज्जित हुआ और सिर नीचे कर के वापिस आया।

प्यारे ! सुनो। अब वह कैसे धनी बना था, अतिथि सेवा किस श्रद्धा भाव से की थी, लोकोक्ति है "मेहमान आया भगवान् आया"। भगवान् ने बूढ़े को भाग्यवान् बना दिया। एक दाना भूमि में डालो, बदले में हज़ार लो। भगवान् इतना भोला भाला है, परन्तु हम इतने बुद्धिमान हैं कि हज़ार लेकर एक भी नहीं देंगे, कितने ईमानदार बने अथवा चार सौ बीस बने ?

ओ३म् शत हस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर ।
कृतस्य कार्यस्य चह स्फातिं समावह ॥

अथर्व ३-२४-५ ॥

अर्थात्—सौ हाथों से इकट्ठा कर, हजार हाथों से दान कर। देख ! इस प्रकार अपने किये हुये और किये जाने वाले की वृद्धि को। धन को तू इस संसार में ठीक प्रकार से प्राप्त कर । ऐ मानव ! धन संग्रह करने में यदि तू सौ हाथों वाला हुआ है तो धन को दूर दूर बाँटने के लिए, दान के लिए हज़ारों हाथों वाला बन जा, इस प्रकार निस्सन्देह तेरी उन्नति होगी, तेरा बड़ा भारी कल्याण होगा। प्यारे ! भगवान् ने जैसा वेद में आदेश किया है वैसा स्वयं करता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ऋषि दयानन्द जी महाराज

श्रद्धा—त्याग

अतिथि सेवा से निर्धन, धनी कैसे बना

स्वर्गीय ला० कृपाराम साहनी रावलपिण्डी के रहने वाले थे। मज़दूरी करते थे। उनका व्रत था जो साधु पहले मिले उस को दो रोटियां खिला देनी, रोटियां पकवा कर बाहर निकले, तो चलते चलते एक साधु सामने आया, तो उससे पूछा क्यों सन्त जी! भोजन करोगे? सन्त ने कहा, करादो, तो कृपा राम ने जल से हस्त पग प्रक्षालन कर दो रोटियां भेंट कीं। सन्त से फिर पूछा, और रोटी चाहिए, सन्त ने कहा, देदो। सन्त ने वह भी खाली। फिर पूछा क्यों सन्त जी अब तृप्ति हुई। सन्त ने कहा नहीं। तो कृपा राम ने चौथी रोटी भी खिला दी। जलपान करा श्रद्धा पूर्वक नमस्कार किया और फूला न समाया। प्रभु का धन्यवाद करता हुआ बोला, वाह प्रभु! तूने बड़ी कृपा की, सन्त महात्मा जल्दी से मिला दिये। अब रोटी भी खालूंगा और काम पर भी पहुँच जाऊँगा। सन्त ने देखा कि खाया तो भोजन मैंने है, प्रसन्नता तो मुझे होनी चाहिये, पर खिलाने में यह फूला नहीं समाता। यह श्रद्धालु भक्त है। तो साधु ने आशीर्वाद दी, कि "जाओ बेटा! तुम्हें किसी चीज़ की कमी न रहेगी!" बस उस दिन से समय ने पासा पलटा। श्री कृपा राम जी की कोठियां रावलपिण्डी, मरी, लाहौर, पेशावर आदि नगरों में हैं। स्वर्गीय श्री हरी राम जी श्री कृपारामजी के भ्राता ने श्रद्धा से कहा था कि यह सब बरकत चार रोटियां खिलाने की है। आज वह लाखों रुपये दान कर रहे हैं। परन्तु इस दान की तुलना कहां? आशु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पर्यन्त श्री हरीराम जी तथा उनकी धर्म पत्नी सेवकों को भोजन कराकर बाद में स्वयं खाया करती थीं। उनके सुपुत्र ला० राम लाल जी व ला० सीता राम जी साहनी का भी यही नियम था। प्यारे ! यह आशीर्वाद देने वाले साधु सन्त कौन थे ? यह थे ऋषि दयानन्द जी महाराज। पर कृपाराम नहीं जानता था कि यह वर्त्तमान युग के प्रख्यात महर्षि हैं।

देखा। यह होती है श्रद्धा ! श्रद्धा की आंखें अन्दर की ओर होती हैं। इस लिए इस को अन्धी श्रद्धा कहते हैं। हम अपने गिरेबान में झांक कर देखें कि अन्धी श्रद्धा अन्धी श्रद्धा कहते २ स्वयं श्रद्धा से रहित हो गए। क्यों राम लाल ? अब विश्वास हुआ या न ?

रामलाल सुनकर लज्जित होकर बोला, महाराज ! हम तो कोरे रह गए, योंही अपना समय गंवाया है। भक्त ने क्या अच्छा कहा है।

भूखा भीखा कोई न, सब की गठड़ी लाल।
आंख मून्द न देखते, इस विध हुये कंगाल ॥

ऋषि दयानन्द जी महाराज

नरक..................से..................स्वर्ग

ऋषि दयानन्द जी महाराज फर्रुखाबाद पधारे। सेठ पन्ना लाल का लड़का वेश्यागामी था। प्रेमियों ने सेठ जी को कहा कि एक तपस्वी महात्मा यहां पधारे हुए हैं, अपने लड़के को उनकी सेवा में ले जायें, वह उसको उपदेश देंगे, यह अपनी बुराई छोड़ देगा। सेठ पन्नालाल ने कहा कि मैं अपने पुत्र की निन्दा स्वयं करूँ मुझे लज्जा आती है, अन्त में सेठ जी ऋषि के चरणों में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गये और उनको भोजन का निमन्त्रण दिया, स्वामी जी ने स्वीकार किया। सेठ जी ने नम्रता पूर्वक करबद्ध प्रार्थना की, कि महाराज! मुझ पर एक और कृपा करें, ऋषि ने पूछा क्या बात है? सेठ ने कहा, मेरा लड़का वेश्या गमन करता है वह समझाने पर भी बाज नहीं आता, मुझे यह कलङ्कित करता है? इसे सुधार दें। ऋषि ने कहा, आप हमारा भोजन उसके हाथ भिजवा देना, स्वयं मत आना, अब जब भोजन तैयार हुआ तो सेठ जी ने अपने लड़के को कहा, सन्त महात्मा का भोजन आज हमारे यहां है, क्या तू भोजन लेकर सन्त जी को करा आवेगा? लड़के ने कहा, जो आज्ञा हो। यह सुनकर सेठ जी बड़े प्रसन्न हुए, अब भोजन परोस कर लड़के को दिया और कहा, जाकर पहले सन्त जी को सिर झुका कर श्रद्धापूर्वक नमस्कार करना और फिर श्रद्धा से भोजन खिलाना, उनसे आशीर्वाद लेकर आना। वह बड़े तपस्वी महात्मा हैं, सब के हृदय का भेद जान लेते हैं। लड़का भोजन लेकर ऋषि के चरणों में पहुँचा। श्रद्धा पूर्वक नमस्कार कर जल लेकर ऋषि की भेंट किया। फिर भोजन आगे धर कर पंखा करने लगा। ऋषि ने पूछा, सुनाओ प्यारे! तुम्हारा समय कैसे गुजरता है। अब लड़का यह शब्द सुनते ही चुप हो रहा। ऋषि ने फिर पूछा, क्यों प्यारे! चुप क्यों हो गये, बोलो, समय कैसे गुजरता है। अब लड़का सिर नीचे कर बोला, महाराज! एक दोष मेरे में है। ऋषि ने पूछा, वह क्या? लड़के ने कहा महाराज! वेश्या गमन करता हूँ। ऋषि ने पूछा, अच्छा प्यारे! एक बात बताओ। जिस वेश्या से तुम संग करते हो, यदि तुम्हारे वीर्य से इस वेश्या को गर्भ ठहर जाय और उस को लड़की पैदा हो, तो वह लड़की किस की होगी। लड़का यह शब्द सुनते ही चरणों में गिर पड़ा और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रतिज्ञा की कि महाराज ! ऐसा मन्द कर्म मैं फिर कभी न करूँगा। वह सर्वदा के लिए पवित्र हो गया।

प्यारे ! अब सोचो, लड़का नरक से स्वर्ग में आ गया, या न। अपने माता, पिता, मित्रों के समझाने पर बाज न आया, दो शब्द ऋषि से सुने, पवित्र हो गया और साथ ही अपना दोष बिन पूछे प्रगट किया। यह क्यों ?

प्यारे-जब सभा मण्डप में बैठ कर तुम प्रभु से प्रार्थना करते हो, हे सर्व शक्तिमान दयालु, मैं तेरी शरण में हूँ। मैं पापी, पतित, कामी, क्रोधी और लोभी हूँ, तू पवित्र, शुद्ध और पतित पावन है। मुझे अपनी शरण में लो, अपने पतित पावन नाम के नाते से पवित्र बनाओ, इत्यादि कहते हो, ऐसा कहते हो या न।

रामलाल—जी हां, कहते हैं।

सन्त महात्मा—अब भरी सभा में सैंकड़ों के सामने आप ने, अपने आप को भगवान् से ऐसा सम्बोधन करके कहा, कि मैं पापी हूँ, अपराधी हूँ। अब इस प्रार्थना के बाद कोई तुम्हें कहे, 'ओ पापी' ! तो क्या सहन करोगे ? या अपना अपमान जान कर उस पर लट्ठ मारने के लिए तय्यार हो जाओगे ?

राम लाल—महाराज ! बड़ा क्रोध आवेगा कि उसने मुझे पापी कह दिया।

सन्त महात्मा—क्या दस मिनट पहले तुम अपने मुंह से भरी सभा में कह नहीं रहे थे कि मैं पापी हूँ, कि न, यह क्यों ? प्यारे ! भगवान् अन्तर्यामी है, सर्वज्ञ है। जब उस परमात्मा को मनुष्य अपने सामने लाता है तो मनुष्य अपने आप अपने दोष, अवगुण आदि प्रकट करके रोता है। वही मुंह से बकवाता है,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बल्कि वह बुराइयां जो माता पिता के सामने पूछने पर भी प्रगट नहीं करता था अपने आप कहता है ! ऐसे ही भगवान् के अमृत पुत्रों के सामने मनुष्य जब जाता है तो अपने दोषों को प्रगट कर देता है और मुंह पर ताला सा लग जाता है। महात्मा पुरुष सर्व हितैषी अग्नि का रूप धारण किये हुए होते हैं, उनकी वाणी अपनी वाणी नहीं होती, उनकी वाणी में प्रभु होता है। आंख, नाक, कान, मस्तक और मुख और रोम २ में विराजमान होता है। महान पुरुष अपने आप को उस का यन्त्र समझते हैं, स्वयं शुद्ध पवित्र हो कर संसार को कल्याण का मार्ग दिखाते हैं, भोग उनके पीछे भागा आता है।

फारसी के कवि ने लिखा है:—

कार साज़ मा ब फ़िकरे कारे मा।
फ़िकरे मा दर कारे मा आज़ारे मा॥

अर्थात्—प्रभु देव जो हमारे कार्यों को संवारता है, स्वयं हमारे हितकार्य के लिए चिन्तित है। हमारी चिन्ता की, काम की और कष्ट की उसे ही चिन्ता है।

प्यारे ! बच्चा जब तक मां की गोद में होता है, तो हर बात से वह निश्चिन्त होता है, माता को ही उसकी सर्व प्रकार से चिन्ता रहती है और वह ईर्ष्या द्वेष से रहित होता है। जब बच्चा मां से जुदा हो जाता है तो मां कहती है, टक्कर मारे। आयेगा तो पायेगा। प्यारे ! हम तो प्रभु से विमुख हैं। स्वार्थ और ग़ैरत से भरे हुये हैं। नेकी बदी की क्या तमीज़ करें। न आँख अन्दर गई, न कान, न ज़बान, बल्कि भोग पदार्थ पर दृष्टि पड़ी रहती है। भोग पदार्थ नाशवान हैं, हम भी नाश हो रहे हैं। जब आत्मा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

परमात्मा के अर्पण हो जाती है तो फिर एक हो जाती है, दुई गई। एकता आई।

चाह मिटी चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कुछ न चाहिये, वही शाहनशाह॥

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज

रोगी से निरोगी—दुख से सुख

एक ओवरसीयर ने स्वामी जी महाराज को भोजन का निमन्त्रण दिया। जब भोजन तैयार हुआ तो स्वामी जी को साथ लेकर घर पहुँचा। श्रद्धा पूर्वक भोजन कराया। जब स्वामी जी भोजन कर चुके तो ओवरसीयर ने कर जोड़ प्रार्थना की, महाराज! मुझे अर्श रोग है, बहुत औषधियां सेवन की पर आराम नहीं आता। महाराज! आप कोई दवाई बतला दें ताकि यह रोग दूर हो जाय। श्री स्वामी जी ने कहा, अच्छा लो बतलाये देता हूँ। लिख लो और प्रभु देव कृपा करेंगे। ओवरसीयर ने कागज, लेखनी तथा मसि उठाई और नुसखा (प्रयोग) नोट कर लिया। दवाई मोल लेकर सेवन करने से सदा के लिये रोग जाता रहा। कुछ समय पश्चात ओवरसीयर को एक मित्र मिला। उसने पूछा आप को बवासीर थी अब क्या हाल है, तो ओवरसीयर ने कहा, भाई! प्रभु की कृपा से श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने मेरी प्रार्थना स्वीकार की मेरे घर को अपने चरण कमलों से पवित्र किया मेरे रोग प्रकट करने और प्रार्थना करने पर नुस्खा बतलाया, वही प्रयोग किया तो नितांत आराम आ गया, अब मित्र ने ओवरसीयर को कहा कि वह नुस्खा मुझे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बताओ। ओवरसीयर ने कहा, नुस्खा गुम हो गया है, जब उस की जरूरत न रही तो संभाल कर नहीं रखा, अब वह मित्र श्री स्वामी जी की सेवा में उपस्थित हुआ और नुस्खे के लिये याचना की, तो स्वामी जी ने कहा, अब स्मरण नहीं, क्या बतलाया था। प्रभु प्रेरणा पर जो आया, कह दिया होगा।

प्यारे ! अब सोचो, स्वामी जी को एक समय रोटी खिलाई, तो सदा के लिए रोग से मुक्त हो गया। क्या स्वामी जी ने वह प्रयोग अपनी बुद्धि द्वारा बतलाया था ? नहीं, वो तो भगवत् आश्रय रहते थे। भगवान् ने प्रेरणा कर दी, साधन बता दिया जैसे एक गृहस्थी धन कमाता है मकान बनवाता है, परन्तु मकान पर पुत्र का नाम लिखाता है, यदि पुत्र का नाम राम चन्द्र है तो राम निवास, यदि एक ही पुत्री हो और नाम वेद प्रभा हो। तो मकान का नाम वेद भवन लिखवाता है, पिता अपना नाम नहीं लिखवाता है। यह क्यों ? क्या पुत्र की कमाई से यह मकान बनाया गया है ? नहीं। तो पुत्र का नाम क्यों लिखते हैं ?

प्यारे ! इस लिये कि पुत्र, आज्ञाकारी, सदाचारी है। पिता उसके सद्गुणों से सन्तुष्ट है, इस लिए वह पुत्र का नाम उज्ज्वल करता है अपना नाम छिपा लेता है। इसी प्रकार भगवान् सब कुछ आप करता है पर नाम अपने पुत्र का प्रसिद्ध करता है। जो भगवान् के पुत्र से प्यार करेगा, भगवान् उस से प्रसन्न होगा या न ? किसी के पुत्र की सेवा का फल उसके माता पिता ही चुकाते हैं बालक असमर्थ होता है।

पतित पावन ऋषि दयानन्द जी महाराज

प्यारे ! मैं चन्दौसी जिला मुरादाबाद गया अतिथि यज्ञ पर उपदेश किया। मैंने ऋषि दयानन्द महाराज के जीवन चरित्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

में से साहू श्याम सुन्दर जी की घटना जो ऋषि दयानन्द के उपदेश से पवित्र हो गये थे सुनाई, तो उनके पुत्र साहू शान्ति स्वरूप जो ऋषि भक्त हैं और समाज के अधिकारी हैं, उन्होंने कहा कि साहू श्याम सुन्दर जी मेरे पिता थे। तो मैंने उन से कहा कि मुझे वह घटना लिख दें। उन्होंने अपनी लेखनी से लिख भेजी जो नीचे दी जा रही है। साहू शान्ति स्वरूप जी इस समय विद्यमान है। आर्यसमाज चन्दौसी जिला मुरादाबाद के सदस्य हैं।

घटना का वृतान्त

नरक···से···स्वर्ग

पहले पहल श्री राजा जय कृष्ण दास जी C. I. E. ऋषि दयानन्द जी महाराज को मुरादाबाद ले आये। अपनी ही कोठी पर उन का आसन लगाया और सत्संग भी वहां पर ही हुआ करता था। साहू श्याम सुन्दर जी मुरादाबाद के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, उन का राजा जय कृष्णदास जी के साथ घनिष्ट सम्बन्ध था। साहू श्याम सुन्दर जी उदार विचार और प्रत्येक कार्य में अग्रणी ही बने रहते थे। त्रुटि उन में यह थी कि वेश्या रखी हुई थी। मदिरा पान करते और मूर्ति पूजक भी थे। साहूजी ऋषि दयानन्दजी को मिलने गये और भोजन का निमन्त्रण दिया। ऋषि ने तत्काल इनकार कर दिया। साहू जी नमस्कार करके चले गये, बाद में एक और व्यक्ति ने आकर ऋषि को भोजन का निमन्त्रण दिया जो ऋषि ने स्वीकार कर लिया। अब जब साहू जी को ज्ञान हुआ कि अमुक व्यक्ति का भोजन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ऋषि ने स्वीकार कर लिया है, तो मन को बड़ा खेद हुआ और उसी समय लौट कर ऋषि चरणों में उपस्थित हो निवेदन किया, कि भगवन् । सन्यासी महात्मा को जो पहले निमन्त्रण दे, वही स्वीकार कर लेते हैं आप ने मेरा निमन्त्रण अस्वीकार किया और मेरे बाद श्री सेवा में पहुंचने वाले का स्वीकार कर लिया । यह क्यों ? ऋषि ने मुस्कराते हुये उत्तर दिया कि साहू जी हम को आप से बहुत कुछ आशा है जब तक तुम अपनी बुरी आदतों का परित्याग न करोगे, हम तुम्हारे यहां भोजन नहीं करेंगे । यह शब्द सुनते ही साहूजी ने प्रतिज्ञा की और घर पहुँचते ही वेश्या को विदा कर दिया । उस का सारा सामान निकलवा दिया और मदिरा सेवन, मूर्ति पूजा का भी सर्वदा के लिये परित्याग कर दिया, बल्कि यहां तक नहीं, वह वेश्या भी अपने कुकर्म को छोड़ कर पवित्र देवी बन गई ।

प्यारे ! क्या ऋषि दयानन्द जी महाराज से किसी ने साहू जी की बुराइयां प्रगट की थीं ? नहीं, कदापि नहीं । महात्मा पुरुषों के सम्मुख जाने पर महात्मा पुरुष तत्काल जान लेते हैं कि उस का आन्तरिक भाव क्या है । वे अन्दर बाहर दोनों के स्वामी होते हैं । वह अपने मुंह से किसी रोगी को कह दें, जा बेटा ! तेरा कल्याण है तो वास्तव में उसे आराम आ जायेगा । क्योंकि वे भगवान् के अमृत पुत्र होते हैं । महान् आत्माओं का उपदेश विश्व का कल्याण करना, वेद का प्रचार करना जिसके घर जाना, पहले उस को शुद्ध पवित्र करना, पश्चात शुद्ध पवित्र भोजन करना । वे भोजन के पीछे नहीं होते, किन्तु भोजन उनके पीछे होता है । अथर्व वेद सन्यासी के लिए भी आज्ञा देता है कि पहले सेवा करो, बाद में खाओ ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अथर्व—काण्ड ९, सूक्त ६, मन्त्र ७।

ओं स य एवं विद्वान् न द्विषन्न श्नीयान्न द्विषतोऽन्नमश्नीयान्न मीमांसितस्य न मीमां समानस्य ॥

अर्थात्—अतिथि सन्यासी राग द्वेष छोड़ कर निर्पक्ष और निर्भय हो कर सब का उपकार करता हुआ भोजन करे और बिना उपकार किये कभी किसी का अन्न वृथा न खाये।

आदर्श अतिथि सेवा का फल

एक श्रद्धालु सद्-गृहस्थी के निमन्त्रण पर एक सन्यासी, महात्मा उसके घर समय २ पर जाया करता था। गृहस्थी की एक छोटी बालिका जिस का नाम ज्ञान देवी था। छोटे बच्चे द्वेष से रहित होते हैं। वह स्वामी जी से मीठी २ बातें किया करती थी। और स्वामी जी भी उस से स्नेह करते थे। ज्ञान देवी अब युवा अवस्था में हुई। माता पिता ने अच्छी शिक्षा दिलाई और उसका नाता कर दिया। यह नाता कहां किया ? जितने आप दृढ़ ऋषि भक्त थे नित्य कर्म करने वाले आर्य सज्जन थे, उतने ही कट्टर मूर्ति पूजक के घर नाता कर दिया। थोड़े समय के पश्चात् ज्ञान देवी का पिता स्वर्गवास हो गया। अब ज्ञान देवी के विवाह की तिथि निश्चित की गई। ज्ञान देवी ने सन्यासी महात्मा की सेवा में प्रार्थना पत्र लिखा कि कृपा करके मुझे दर्शन दें, क्योंकि मेरा अब विवाह होने वाला है। मुझे गृहस्थ का उपदेश देने की कृपा करें ताकि मैं अपना गृहस्थ सुखधाम बना सकूं। और मेरा नाता ऐसे परिवार में हुआ है जो सोलह आने मेरे विचारों के प्रतिकूल हैं और आप मुझे आशीर्वाद भी देंगे। सन्यासी महात्मा वहां पहुँचे। ज्ञान देवी को गृहस्थ का उपदेश किया, साथ ही वह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

साधन बतलाये, कि जिन के प्रयोग करने पर सुसराल परिवार अपने विचारों के अनुकूल हो जावे जिन को सुन कर वह गद् २ प्रसन्न हुई अब सन्यासी महात्मा ने कहा, बेटी आप ने उपदेश शिक्षा हम से ली है तो अब आप का कर्तव्य है कि मुझे दक्षिणा दें। ताकि उपदेश और शिक्षा तुम्हारे भविष्य के लिये कल्याण-कारी हो। क्या तू अब दक्षिणा देगी ?

ज्ञान देवी—हां महाराज ! जरूर दूँगी । झट पट उठ खड़ी हुई। और जाने लगी।

संन्यासी—बेटी ! कहां जाती है ?

ज्ञान देवी—महाराज, दक्षिणा लेने को, ताकि चरणों में भेंट कर सकूं।

संन्यासी—कहां से लावेगी ?

ज्ञान देवी—माता जी से ।

संन्यासी—पुत्री ! जो कुछ तू लावेगी, क्या वह तेरा अपना है या माता जी का ?

ज्ञान देवी—महाराज ! माता और पुत्री का कोई भेद होता है। माता पुत्री की, पुत्री माता की ।

संन्यासी—बेटी ! तू असत्य कह रही है । भला, यह बताओ, कि यह मकान किसका है और दक्षिणा के लिए जो कुछ तू लावेगी, क्या वह तेरा अपना होगा ? यदि भिखारी द्वार पर आ जाये, तो क्या तू उसे अपनी इच्छानुसार भिक्षा दे सकेगी ?

ज्ञान देवी—मकान माता जी का है। जो कुछ दूँगी, माता जी से लाकर भेंट करूंगी । द्वार पर आए भिखारी को भी माता जी से पूछ कर दूँगी । मैं तो महाराज ! घर की कोई भी वस्तु अपनी इच्छानुसार नहीं दे सकती ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

संन्यासी—जो उपदेश और शिक्षा तुमने ली है अपने लिए या माता के लिए ?

ज्ञान देवी—अपने भविष्य के कल्याणार्थ ली है । माता तो माता है, उसका अब क्या जरूरत है ।

संन्यासी—दक्षिणा में अपनी वस्तु भेंट करनी चाहिये ।

ज्ञान देवी—महाराज, मेरा अपना क्या कुछ है जो मैं भेंट करूं ।

संन्यासी—जो कुछ मैं मांगूं क्या वह तू देगी ?

ज्ञान देवी—अवश्य दूँगी महाराज ।

संन्यासी—तुम आज से प्रतिज्ञा करो कि मैं अपने घर पर बिना सन्ध्या अग्निहोत्र किये भोजन नहीं करूंगी ।

ज्ञान देवी—महाराज, सन्ध्या हवन तो रोज़ करती हूँ ।

संन्यासी—कहां पर करती है ।

ज्ञान देवी—यहां घर पर ।

संन्यासी—यह घर क्या तुम्हारा है ?

ज्ञान देवी—नहीं, मेरी माता जी का है ।

संन्यासी—मैंने तो आप से जो प्रतिज्ञा करने को कहा है वह अपने घर पर नित्य सन्ध्या हवन करने के लिए कहा है । अच्छा बताओ बेटी ! तेरा अपनी माता के घर में क्या अधिकार है, मालिका का या सेविका का ?

ज्ञान देवी—सोच में पड़ कर बोली । माता पिता की जो सम्पत्ति होती है वही उसकी सन्तान की होती है ।

संन्यासी—तेरे विवाह हो जाने पर जब ससुराल के घर चली जायेगी तो क्या फिर कहेगी कि माता का घर मेरा घर है और माता का धन मेरा धन है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ज्ञान देवी—सिर नीचा करके मुस्कराने लगी और चुप हो गई।

संन्यासी—पति के घर जाने पर यदि तुम्हारा पति तहसीलदार होगा तो तुम्हें तहसीलदारनी, मास्टर होगा तो मास्टरनी, डाक्टर होगा तो डाक्टरानी नाम से पुकारेंगे, या नहीं, और जो धन सम्पति घर में पति की होगी उस पर तेरा सर्व अधिकार होगा। अब अपनी इच्छा से खाये, पीये, दान करे तू क्या किसी से पूछेगी ? फिर अब तेरे से पूछा जाय कि वह किस का मकान है, गौरव से कहेगी, मेरा है। क्या आप ने स्वयं बनाया या, कमाया था, क्या मां से लेकर साथ लाई थी ? क्या माता पिता की सम्पति को अब अपना कह सकेगी ? दूसरे पिता के घर में रहते हुये तू कहीं अकेले नहीं जा सकती। माता, पिता, भाई, चाचा, नाना, और मामी सब तेरे रक्षक बने हुये हैं। किसी के घर यदि तू चली जाये और कारण वश देर हो जाये तो तत्काल तुझे लेने को आ जायेंगे। परन्तु जब विवाह हो जायगा, तो क्या माता पिता आदि फिर तेरी रक्षा करेंगे ? कदापि नहीं। फिर तू स्वतन्त्र है जहाँ पर आओ, जाओ। यह क्यों ? इस लिए कि अब तुम एक की हो गई हो। माता पिता के घर तेरा अधिकार न मालिका का था न सेविका का था, किन्तु वह शिक्षणालय था तुम्हारा अब अधिकार स्वामिन का हो गया और स्वतन्त्रता की प्राप्ति हो गई अब जो मार्ग तेरे स्वामी का होगा वही मार्ग तेरा होगा। शरीर दो और आत्मा एक होगी, पति रूर, पत्नी धड़। पति प्राण, पत्नी शरीर, पति दिमाग, पत्नी हृदय, पति सूर्य, पत्नी भूमि, पत्नी का नाम धर्म पत्नी है जो पति को धर्म मार्ग पर चलाने वाली है और पत्नी के लिए पति ईश्वर है। यदि पति पत्नी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का अपमान करता है तो वह धर्म का अपमान करता है धर्म उस का नाश कर देता है। यह अधिकार पत्नी को कब प्राप्त होता है जब पत्नी अपने माता, पिता परिवार इत्यादि का त्याग कर अपने पति के समर्पण हो जाती है। यहां तक कि अपना सर्वस्व मान पति के अर्पण कर देती है तो फिर अपने पति के सर्वाधिकार, सम्पत्ति आदि की भी सर्वाधिकारिणी हो जाती है। इस प्रकार भक्त भगवान के समर्पण हो कर भगवान के अधिकार को प्राप्त हो कर अमर हो जाता है। अब जो पति की जात है वही पत्नी की है। भाव यह है कि गृहस्थ आश्रम ही सब आश्रमों से श्रेष्ठ और ज्येष्ठ आश्रम है।

ज्ञान देवी—महाराज! आपने बड़ी कृपा की मुझे बहु मूल्य उपदेश दिया है जो आज तक माता पिता, विद्यालय से नाममात्र भी प्राप्त नहीं हुआ था। आपने मुझे भविष्य के बनाने का मार्ग दिखा कर कृतकृत्य कर दिया है। मैं आप की आभारी हूं। आप मुझे आशीर्वाद दें, और मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि नित्य प्रति सन्ध्या हवन किये बिना अन्न नहीं खाऊँगी और आप के अमूल्य उपदेश पर पूरा २ आचरण करूंगी। और प्रभुदेव से प्रार्थना करती हूं कि वह मुझे बल, बुद्धि प्रदान करें ताकि मैं वेदानुकूल अपना भविष्य बना सकूं और दूसरी बहिनों को भी सन्मार्ग दिखला सकूं।

प्यारे! अब स्वामी जी उपदेश देकर चले गये, पुत्री का विवाह हो गया और जब माता से विदाई का समय आया तो माता ने पुत्री को दहेज में खाट, खटोले, रेशमी सूट इत्यादि तैयार कर के नहीं दिये, किन्तु उसने यज्ञ कुण्ड, यज्ञ पात्र, आसन, घृत, सामग्री, संस्कार विधि, यजुर्वेद भाषा, और ऋषि कृत ग्रन्थ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भेंट करते हुये पुत्री के श्वसुर से कर जोड़ कहा, महाराज ! यह पुत्री की भगवत् पूजन की सामग्री और साधन हैं, कृपया इसे स्वीकार कीजिये और कहा, यह मुझ अबला की पुत्री आप को समर्पण है, यह भोली भाली अब मेरी लाज आप के हाथ में है। जैसे अपनी पुत्री की त्रुटियों पर कृपा दृष्टि करते होंगे, वैसे इस पर भी कृपादृष्टि रखेंगे। यह तिल फूल मेरी श्रद्धा का स्वीकार करें। अब अपनी पुत्री को आदेश किया, बेटी ! तू बड़ी भाग्य वान् है अब भगवान तेरे भाग्य बढ़ा देगा। बेटी ! जब तक तू मेरे पास रही तो तेरी मैं एक ही माता थी अब तेरी दो माताएँ हो गई। यहां आयगी तो तेरी माता मैं, और सुसराल में तेरी माता सास। जैसे तू मेरी कड़ी, उचितानुचित बात को सहन करके सदा एक रस हो कर प्रसन्न रही थो वैसे सास माता के साथ व्यवहार करना और श्वसुर को पिता, देवर को भाई, पड़ोस वाले परिवारों को अपना परिवार जान कर सेवा करना और पतिदेव को परमेश्वर रूप समझना और सास, श्वसुर, पति और अन्य घर के सब बड़ों को नमस्कार करना खिला पिला कर बाद में तुम भोजन करना और उन के जूठे बरतन उठाना और साफ करना। अपने झूठे बरतन साफ करने के लिये किसी बड़े को मत देना और सदैव अपने स्वामी के मार्ग पर चलना और उन्हें सन्तुष्ट रखना और जैसे अपने माता पिता की गिला, निन्दा करना अथवा सुनना सहन नहीं कर सकती थी, वैसे सास, श्वसुर पति और परिवार की गिला निन्दा करना अथवा सुनना अपने लिए मृत्यु समान समझना इत्यादि। पाठक गण, लेना आसान, देना कठिन, खाना सुगम, खिलाना कठिन, किसी को दुःख देना सुगम, परन्तु दुःख लेना कठिन। अच्छा अन्त तो उसी का है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जो दूसरे के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देते हैं।

प्यारे ! वह समय था जब दाता लोगों का मान और पूजा होती थी पर आज डाकू पूजे जाते हैं, असुर वृति का राज्य है, कहां वह समय कि एक कन्या के लिये बीसियों लड़के वाले, कन्या परिवार के महीनों पांव चूमते थे और भिखारी बनकर याचना करते थे कि अपनी कन्या का दान हम भिखारियों को दो, परन्तु आज जो प्रकाश का युग पुकारा जाता है अब कन्या वाले को बीसियों लड़के वाले से याचना करनी पड़ती है, वह वर्तमान प्रकाश के पुजारी अकड़े हुए डाकू बने हुए हैं और कन्या वाले को कंगाल, बे हाल करके लूटना चाहते हैं, धिक्कार है, ऐसे अत्याचारी, निर्दयी मनुष्यों पर। एक भेड़ बकरी लेने पर तो रुपये भेंट करेगा परन्तु एक देवी जो देवियों की माता, राम कृष्ण की जननी का इस प्रकार अनादर। वह राक्षस, कन्या भी बिना दामों ले और साथ ही कन्या के माता पिता को कंगाल कर उस की सम्पत्ति भी लूटें। यह है मित्रता। एक आदमी किसी के यहां केवल पानी पी जाता है तो जब वह पानी पिलाने वाला उस के सामने आता है, तो धन्यवाद पूर्वक उस की आंखें झुक जाती हैं। पर आज नित्य प्रति खाते पीते आँखें ऐसी निलज्ज हो गई हैं कि धन माल लेते हलवा पूरी खाते हुये भी उल्लू बने हुए हैं। उल्लू तो लूटें अन्धेरे में पर यह लूटें प्रकाश में।

कवि ने लिखा है:—

दिल के फ़फोले जल उठे, सीने के दाग़ से।
इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से ॥

आज कल गोबध के विरुद्ध प्रस्ताव पास किये जाते हैंपर कन्या जो गौ के नाम से पुकारी जाती है, निर्दयता से खुले

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मैदान, भरे जलूसों उस का रक्त चूसा जाता है। बीस २, तीस २, वर्ष की कन्यायें पिता माता के घरों में बैठी हुई आहो पुकार भगवान से कर रही हैं । ओ कृष्ण के पुजारियो ! मुरली वाले को पुकारने वालो, दयानन्द की जय बुलाने वालो, भगवान राम के नाम लेवाओ ! इन महान् आत्माओं के नाम के वास्ते अपने आप पर अपनी जाति पर तरस करो, दया करो, अधःपतन से बचाओ। वैदिक मर्यादाओं का पालन करो, पशु और भेड़िये की वृति छोड़ कर श्रेष्ठ मानव बनो।

प्यारे ! अब वर-वधु को लेकर बरात घर वापस पहुँची, तो नर-नारियों ने वर-वधु का स्वागत किया । प्रातः ज्ञान देवी उठी सास श्वसुर पति को नतमस्तक हो कर नमस्कार किया । शौच, दातन स्नान, करने के पश्चात् हवनकुण्ड, यज्ञ पात्र इत्यादि निकाल कर अग्नि होत्र नित्य कर्म करना आरम्भ किया ! अब सुसराल के परिवार तथा अन्य देवियों ने जो देखा तो आपस में कहने लगीं कि यह समाजिन कहाँ से आ गई है । अब जमती पर पाला डालो, नहीं तो यह बिगड़ जायगी। अब श्वसुर ने जब यह आवाज सुनी तो बाहर आकर मुख मोड़ कर धीरे २ कहा, कि इसे अब कुछ न कहो, करने दो जो कुछ करती है। और कहा यह है एक और हम हैं निनानवे । अन्त में यह हमारे पीछे चलेगी। अब सभी कुढ़ती हुई देवियां चुप हो गईं । इसी प्रकार १०-१५ दिन बीत गये। ज्ञान देवी निश्चिन्त आनंद से कार्य करती रही। अब परिवार की सब देवियों ने मिल कर उसके पति को बुला कर कहा, कि तेरा गाड़ी का पहिया टेढ़ा जा रहा है । अब तू इसे संभाल, वरन हमारा दोष नहीं होगा। पति ने जब सुना तो माथे पर बल पड़ गये। क्रोध से लाल पीला होकर सीधा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अपने कमरे में गया तो क्या देखा कि ज्ञान देवी ने हवन कुण्ड व अन्य सामग्री अपने सामने रखी हुई और आंखें मूंद कर प्रार्थना मन्त्र "ओ३म् विश्वानि देव" इत्यादि का पाठ कर रही है। पति ने आ कर सब सामान उठा कर आलमारी में बन्द कर दिया और ताला लगा कर चारपाई पर बैठ गया। जब देवी ने प्रार्थना के बाद आंखें खोलीं, तो यज्ञ सामग्री न पाकर अपने सामने पतिदेव को चारपाई पर बैठे देखा, झट उठकर नत मस्तक होकर प्रणाम किया और कर जोड़ प्रार्थना की, आज्ञा कीजिये। पति ने कहा, शीघ्र भोजन तय्यार करो, मैंने बाहर जाना है। अब देवी ने यह नहीं पूछा कि मेरा यज्ञ का सामान कहां है? किसने उठाया है? किन्तु बड़ी शान्ति और श्रद्धा से भोजन तैयार कर पति और सास-श्वसुर को खिलाया और झूठे बरतन साफ करके क्रमवार चौके की आलमारी में सजा रखे और चुप होकर बैठ गई। अब सास ने कहा, बेटी ज्ञान! अब तू भोजन कर ले, सब खा चुके हैं। ज्ञान देवी ने कहा 'माता जी आज भोजन नहीं करना'।

सास—क्यों पुत्री? क्या कारण है, कोई कष्ट तो नहीं?

ज्ञान देवी—माता जी! मुझे कोई कष्ट नहीं है, प्रभु कृपा से सब प्रकार कुशल से हूँ।

सास—तो फिर भोजन क्यों नहीं करती?

ज्ञान देवी—माता जी, मेरी प्रतिज्ञा है, कि जब तक मैं सन्ध्या हवन न कर लूं, भोजन नहीं करूंगी।

सास—तो पुत्री हवन करले।

ज्ञान देवी—अब तो हवन नहीं करती।

सास—क्यों? हवन क्यों नहीं करती।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ज्ञान देवी—माता जी मेरे पतिदेव को मेरा हवन करना नहीं भाता। जिस कार्य में मेरे पतिदेव को कष्ट हो, वह मैं कैसे करूँ ?

सास—तो क्या फिर तू भूखी मर जायगी।

ज्ञान देवी—माता जी। कल भी मरना, आज भी मरना। यह कोई अनोखी बात है। जीवन के साथ मृत्यु भी साथ रहती है।

प्यारे ! जब ज्ञान देवी ने यह शब्द सास से कहे, तो सास के हृदय में क्षोभ सा उत्पन्न हो गया। झट पुत्र को बुलाया और कहा कि अपनी धर्म पत्नी को हवन करने की आज्ञा दो अन्यथा तुम्हारी खैर नहीं। यह तो अपने व्रत पर दृढ़ है, अपने शरीर प्राण तक न्योछावर करने वाली है। अब लड़के ने कहा, अच्छा माता जी, फिर आप उसे कह दें, हवन यज्ञ कर ले। अब सास ने कहा, बेटी ! उठो हवन कर लो।

ज्ञान देवी—माता जी ! मैं ऐसा कार्य कभी नहीं करूंगी, जिससे मेरे स्वामी को कष्ट हो। यदि मेरे जीवन से उनको कष्ट हुआ तो मेरा जीवन व्यर्थ ही हुआ। अब सास ने बेटे से फिर कहा कि तुम स्वयं पत्नी से कहो कि यज्ञ करे। अब पति ने कहा उठो, यज्ञ कर लो।

ज्ञान देवी—यदि आप सहर्ष प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा दें तो मैं यज्ञ करूँगी अन्यथा नही, मैं आप को कष्ट देना नहीं चाहती।

पति—मैं सच्चे हृदय और प्रसन्नता से आज्ञा देता हूँ कि आप नित्य कर्म सन्ध्या हवन कर लें।

ज्ञान देवी—तो आप मेरा सामान यज्ञ सामग्री दीजिये।

अब पति ने आलमारी का दरवाजा खोल कर नित्य कर्म

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का सामान दे दिया।

ज्ञान देवी—स्वामिन् ! एक प्रार्थना मेरी स्वीकार करेंगे ?

पति—हाँ, हाँ; जरूर, जो कुछ आप कहेंगी, अब जरूर करूंगा।

ज्ञान देवी—आप कृपा करके मेरे साथ यज्ञ में बैठ जाइये, मैं जो कुछ करती हूं, वह आप देखते रहें और आप घृत की आहुति और मैं सामग्री की आहुति दूँगी। केवल १०-१५ मिन्ट लगेंगे।

पति—बहुत अच्छा, कह कर हाथ मुंह धो कर साथ बैठ गया।

अब पत्नी ने बड़ी श्रद्धा से विधि पूर्वक प्रार्थना अग्निहोत्र और भजन गायन कर शान्ति पाठ किया। अब पतिदेव ने गद्गद् प्रसन्न होकर पत्नी से कहा कि मैं आज से नित्य प्रति आप के संग प्रातः सायं सन्ध्या हवन इत्यादि करा करूंगा—

परिणाम

अब इस देवी के व्रत ने वह कार्य किया कि सारे के सारे परिवारों में सन्ध्या, अग्नि होत्र वेद पाठ होना आरम्भ हो गया। वह परिवार जो पहले घृणा करता था, सभी नर-नारी देवी के गुण गाते और गुरु के सदृश मान पूजा करने लगे।

प्यारे ! इस प्रकार का धर्म प्रचार कैसे फैला ? केवल एक तपस्वी त्यागी महात्मा के उपदेश से। यदि सन्यासी महात्मा को निमन्त्रण न देते, यह ज्ञान, यह तप त्याग कैसे होता ? घर में राम राज्य कैसे होता।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

महमान आया .... भगवान् आया

कस्बा जतोई, जिला मुजफ्फर गढ़ (पाकिस्तान) के निकट एक ग्राम था। वहां पर एक सन्त महात्मा गृहस्थी के द्वार पर पहुँचे। देखा एक नवयुवक द्वार पर खड़ा है। सन्त महात्मा ने उससे कहा, "प्यारे ! पानी पिला दो"।

नवयुवक तत्काल घर के भीतर चला गया माता जी से कहा, कि द्वार पर एक सन्त महात्मा खड़े हैं। वे पीने के लिये जल मांग रहे हैं। तो माता ने तत्काल प्रेम से पुत्र से कहा, "बेटा! जाकर शीघ्र सन्त महात्मा से पूछ आओ कि आप छाछ या लस्सी पियेंगे"। नव युवक बाहर आया। सन्त महात्मा से नम्र होकर कहा, "महाराज ! क्या आप छाछ या लस्सी पियेंगे" ? तो सन्त महात्मा ने कहा, "प्यारे! तुम्हारी जो इच्छा हो लाओ"। नवयुवक ने घर में जाकर माता जी से कहा, "सन्त महात्मा कहते हैं जो इच्छा हो सो लाओ"। अब माता ने तत्काल आटा उठाया उसमें नमक-मसाला-घी मिलाकर पुराठा बनाने लगी। सन्त महात्मा प्यासे थे। जल की प्रतीक्षा में थे। दिल ही दिल में कहने लगा क्या हा अच्छा होता छाछ लस्सी के लाने से पानी ही ले आता। प्यास तो बुझ जाती।

माता ने पुराठा पकाया। थाली में परोस कर सुन्दर रूमाल से ढाप और छाछ का गिलास भर कर उस में मक्खन डाला। फिर उसे ढक कर पुत्र को देकर कहा, "बेटा ! नम्रता पूर्वक जाकर भेंट करना और पूछना और छाछ आदि पियें तो लाऊं। यदि वे कहें तो और ले जाना"।

नवयुवक साधु के सम्मुख पहुंचा। नतमस्तक हो नमस्कार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

किया। बड़े प्रेम और श्रद्धा से पुराठा और छाछ भेंट की। अब साधु देवी की श्रद्धा-भावना और त्याग और नवयुवक की सरल-कोमल नम्रता के स्वभाव तथा सेवा को देखकर गद्‌गद् प्रसन्न हो गये। पुराठा खाया, छाछ पी। तो नवयुवक ने फिर पूछा, "महाराज पुराठा या छाछ और लाऊँ"। तो सन्त महात्मा ने इनकार करते हुए, आशीर्वाद दी और कहा, "बेटा! तेरे हाथ में शफा होगी"।

सज्जनों! ये नवयुवक कौन था? गोदी राम हकीम था। जो साधारण पढ़ा लिखा। और किराने की दुकान करता था। सन्त महात्मा की निष्काम भाव से सेवा करने से, उसकी आशीर्वाद से इतना इसका नाम विख्यात हुआ कि वह रोगी के पेशाब को देख कर रोगी का रोग जान लेता था। रोगी दूर से पेशाब को डोलते थे। वह देखते ही कह देता था कि इस रोगी को असुक रोग है।

लोग रोगी का पहनावा कपड़ा लाते थे। वह कपड़ा सूंघ कर बता देता था कि इस कपड़े के पहनने वाले को असुक रोग है।

एक बार एक जमींदार अपने बैल का पिशाब लाया ताकि गोदी राम हकीम की परीक्षा करूं। जब पेशाब को गोदी राम ने दूर से नीचे फिकवाया देखा तो तत्काल ही कहा, "इस पिशाब वाले रोगी को जाकर खली और भूसा खिलाओ। यही इस की दवा है"। जमींदार उत्तर सुन कर चकित सा रह गया।

एक बार एक गृहस्थी अपनी कुंवारी कन्या को दिखलाने लाया। गोदी राम ने कन्या को देखते ही उस गृहस्थी से कहा, "इस कन्या का रोग एकान्त में बतलाऊँ या अभी बता दूँ"। तो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गृहस्थी, "यहीं बतलादें"। गोदी राम ने कहा "इस कन्या को गर्भ पात कराने से ही ये रोग उत्पन्न हुआ है"। तो गृहस्थी ने कहा, "महाराज ! ये तो कुमारी है। अभी विवाह नहीं हुआ"।

अब कन्या की माता जो साथ थी वह तत्काल कन्या को लेकर गोदी राम के घर के भीतर चली गई। और गोदी राम को भीतर बुला कर नम्रता पूर्वक रोते हुए कहा, "निस्सन्देह आपकी ये बात ठीक है। जैसा कि आप ने कहा है"। अब आप ही हमारी लाज रखो"।

गोदी राम पर्दादार स्त्रियों के रोग को जब देखता तो उन की हाथ की कलाई (नब्ज) पर रेशम की तार बन्धवाता और दूसरे सिरे को अपने हाथ में पकड़ता तो रोगी का रोग ठीक २ बता देता। एक दिन पर्दादार स्त्रियों ने बिल्ली को पकड़ कर उस की टांग में रेशम का तागा बांध कर दूसरा सिरा तागे का गोदी राम के हाथ में दे दिया। ताकि मालूम हो कि ये कैसे रोग मालूम करता है अब जब गोदी राम ने तागे को पकड़ा तो कहा, "इस रोगी को दो चूहे पकड़ कर खिला दो"।

सज्जनों ! ये दात कहाँ से गोदी राम को और कैसे प्राप्त हुई। केवल एक सन्त महात्मा के सत्कार और श्रद्धा भावना की सेवा करने का ही फल है। जो सन्त महात्मा के आशीर्वाद से प्राप्त हुई। ये थी अतिथि सेवा। कहावत है:—

॥ महमान आया। भगवान आया ॥

———

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रत्यक्ष अतिथि सेवा का फल

जैसा नाम--वैसा काम

मूढ़ बुद्धि अज्ञानी......शुद्ध बुद्धि ज्ञानी

जलालपुर जटां (पाकिस्तान) के एक सद् गृहस्थी बालक का नाम खुशहाल था। खुशहाल को ८-९ वर्ष की आयु में पाठशाला में प्रविष्ठ किया गया पर खुशहाल स्थूल बुद्धि था, न स्मृति थी न समझ। आरम्भ में तो अध्यापक ने पाठशाला में आने का अभ्यासी बनाने के लिए कुछ न कहा, मौखिक तर्जना करते रहे। अब जब वह पाठशाला में आने का पूरा अभ्यासी बन चुका और बहुत समय बीतने पर एक दिन पिता जी ने पूछा, कि खुशहाल ! अपनी पुस्तक लाओ और मुझे सुनाओ। क्या पढ़ा है ? खुशहाल पुस्तक लाया, पिता के पाठ सुनने पर पाठ शून्य ही सुनाया। पिता जी क्रोध में आ गए खुशहाल को साथ लेकर स्कूल पहुँचा और मास्टर जी से कहा कि मास्टर जी ! आप ने इस को अब तक क्या पाठ पढ़ाया है ? कृपा करो, इस का ध्यान करें। यह कितना बड़ा हो चला है, इस से छोटे २ बालक कितना पढ़े हुये हैं। पिता जी मास्टर जी को कह कर चले गये। अब खुशहाल पर मास्टर की कड़ी दृष्टि पड़ने लगी। मास्टर जी पाठ पढ़ायें, छुट्टी करने से पहले उससे पाठ पढ़ाया हुआ सुना, तो चुप। अब मास्टर जी ने खूब हाथों से पीटा और और अन्ततः रुखसत किया। अब खुशहाल की प्रतिदिन क्या दशा बनी ? स्कूल जाते ही मास्टर जी सर्वप्रथम उसे बुलायें और कहें, कल का पाठ सुनाओ पर उत्तर कुछ भी न हो तो मास्टर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बुरी तरह से ताड़ना करें और बैंच पर खड़ा कर दें। स्कूल की छुट्टी होने तक बैंच पर खड़ा रहे। अन्त में मास्टर जी पाठ सुनें तो वही दशा। मार खा कर खुशहाल को छुट्टी मिलती। घर में पिता जी और स्कूल में मास्टर जी प्रतिदिन मरम्मत करें। मां के पास जाये रोता हुआ, तो मां मारे तो नहीं, परन्तु जवानी झाड़ देवे फिर रोटी खिलावे। निदान खुशहाल के लिए यह प्रोग्राम दैनिक बन गया। खुशहाल नित्य की मार पीट से अति व्याकुल हो गया। चारों ओर अन्धेरा नजर आया। दिल में ठानी कि ऐसे जीने से तो मर जाना अच्छा है।

जलालपुर जटां में एक नाला है जो वर्षा के दिनों में खूब भर कर बहता है। अब खुशहाल को अपने मुक्त होने का यही साधन दिखाई दिया कि नाला में छलांग लगा कर मर जाऊँ यही निश्चय करके नाला पर गया, छलांग लगाई और डूब रहा था कि किसी व्यक्ति ने देखा और झट नाला में कूद कर डूबते हुए खुशहाल को बाहर निकाला और साथ लेकर उसको पिता के हवाले किया और कहा कि मुंशी जी! यह आप का पुत्र नाला में डूब रहा था। पिता जी को बड़ा क्रोध आया, खूब उसे पीटा। अब खुशहाल बेचारा बेहाल है और ज़ार २ रोता है।

कवि ने लिखा है:—

स्याह बख़्ती में कब कोई किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी जुदा इन्सां से होता है॥

प्यारे! खुशहाल के पिता जो श्रद्धालु थे। अतिथि सत्कार उदारता तथा प्रेम से करते थे। एक दिन श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज आये, उन्हें अपने वाटिका में ठहराया गया। रात

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

को खुशहाल से पिता जी ने कहा, कि कल समय पर स्वामी जी को भोजन कराना। खुशहाल प्रातः उठा, शौचादि से निवृत्त हो स्कूल गया तो मास्टर जी ने पाठ सुनाने को कहा। उत्तर न दे सका, आज मास्टर जी ने खुशहाल को खूब पीटा क्योंकि नाले में डूबने का समाचार पहले मास्टर को मिल चुका था। अब बैंच पर खड़ा कर दिया गया। जब छुट्टी का समय आया, पाठ फिर भी याद न था, फिर मार पड़ी और कहा, बस आज तुम बैंच पर खड़े रहो और सब स्कूल के लड़के छुट्टी होने पर चले गये। मास्टर जी को रजिस्टरों का कुछ काम करना था, वह अपने काम में लगे रहे। आध घण्टा बाद वह फारिग़ हुए, तो फिर पाठ सुना। पाठ न आने पर फिर पीटा और रुखसत किया।

प्यारे! घर जब खुशहाल पहुँचा तो पिता जी प्रतीक्षा कर रहे थे, क्रोध में भरे हुए थे, क्योंकि और सब मुहल्ले के लड़के आध घण्टा से पहले आ चुके थे, पिता जी ने खुशहाल के देर में पहुँचने पर न देरी में आने का कारण पूछा, बस खूब पीटना आरम्भ कर दिया। पिता जी ने घर में एक भैंस ले रखी थी, उस की सेवा तथा पानी पिलाने की डयूटी खुशहाल के जिम्मे थी। जब पिता जी मार कर थके तो फिर पूछा, भैंस को पानी पिलाया है, तो खुशहाल ने कहा नहीं। तो फिर और मार पड़ी और कहा, जाओ, पहले भैंस को पानी पिला लाओ। जल्दी वापस आ जाओ। अब खुशहाल ने हाल से बेहाल रोता हुआ भैंस को खोला, तालाब पर ले गया। भैंस ने पानी पिया। भैंस शक्ति वाली थी। पानी पी कर किसान के खेत में दौड़ गई और जाकर खेत को चरना शुरू किया। अब किसान ने देखा तो क्रोध से पूर्ण दौड़ता हुआ खेत में पहुँचा। खुशहाल भैंस को पकड़ रहा था तो किसान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ने खुशहाल को खूब पीटा। अब खुशहाल भैंस को लेकर घर पहुँचा तो पिता जी क्रोध में भरे बैठे थे कि खुशहाल ने बड़ी देर लगा दी है। जब खुशहाल आया तो देरी से आने का कारण न पूछ कर खूब पीटा और कहा, उठा रोटी, स्वामी जी को जा कर खिलाओ।

प्यारे पाठकगण ! अब तनिक स्वयं सोचो कि बेचारे खुशहाल की क्या अवस्था है। क्या खुशहाल के कान नहीं जो पाठ नहीं सुन सकता क्या आंखें नहीं जो पाठ देख नहीं सकता, हाथ नहीं जो लिख नहीं सकता। भगवान् ने तो शरीर के सब अङ्ग पूर्ण बनाये हैं और स्वास्थ्य भी अच्छा है। अब मास्टर मारे, पिता मारे पीटे, माता धिक्कारे, क्या किसी ने मारते मारते खुशहाल को पाठ याद कराया। क्या पाठ शरीर याद करता है जो प्रति दिन शरीर को पीटा जाता है ? क्या कोई वैद्य, हकीम, डाक्टर इस की औषधि कर सकता है ? क्या डाक्टरों के Injection से ठीक हो सकता है कि पाठ याद करना आ जावे । उत्तर नकार में होगा। और प्रत्यक्ष ही है। बेचारा कोमल बच्चा है बेबस है पर उसकी चिकित्सा कौन जाने ?

प्यारे ! वर्त्तमान काल में तो माता, पिता, मास्टर, डाक्टर सभी शरीर के पुजारी, भोगाहारी, स्वयं नहीं जानते कि हम संसार में क्यों आये, क्या करना है और किधर जा रहे हैं। कहावत है:—

"गुरु बिना गत नहीं"। बिना गुरु के सुख शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है कि "**मातृमान्, पितृमान्,**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आचार्यवान् पुरुषोवेद"। पहला गुरु माता, दूसरा पिता, तीसरा विद्या, ज्ञान का गुरु वह ज्ञान जो परमात्मा और आत्मा को साक्षात् कराए।

वर्तमान काल में गुरु कहलाने वाले यह तीनों असफल हैं। आत्मा और परमात्मा का साक्षात् तो वही गुरु करावेगा जिसने स्वयं साक्षात् किया हुआ होगा। विस्तार से पढ़ो मेरी लिखी पुस्तक पितृ यज्ञ प्रसाद।

प्यारे! आप पहले पढ़ चुके हैं कि अतिथि को ईश्वर का पुत्र कहा गया है, और उसको ही गुरु कहा गया है जो अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले जावे। अब खुशहाल बेचारा अन्धेरे में है उसको प्रकाश कौन दिखाये जो स्वयं प्रकाश का पुजारी हो। अब आइये! सच्चे भगवद्पुजारी और सच्चे गुरु की शरण में चलें जो इस पाठ को याद कराने वाली कला को खोले।

पाठक गण! खुशहाल ने भोजन उठाया, वाटिका में पहुँच कर श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज के चरणों में पहुंचा। नत शर हो कर नमस्कार किया। श्री स्वामी जी की दृष्टि खुशहाल के मुख पर पड़ी, आंखें लाल, हाल से बेहाल है और शरीर निढाल है।

कवि ने लिखा है:—

घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय।

———

आंकि दारद दर दिलश खौफे खुदा।
आंकि पाक, अस्त अज इनादो अज रिया॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आंकि ज़ख़मे गैर रा मरहम शवद ।
तोफ़ाए नाच्चीज़ ईं नज़रश बवद ॥

———

जिस के दिल में दर्द है इन्सान का ।
जिसके दिल में खौफ़ है यज़दान का ॥
दूर भागे जो बुराईयों से बशर ।
तोहफ़ाए नाचीज़ है उसकी नज़र ॥

श्री स्वामी जी महाराज ने खुशहाल से बड़े प्यार और प्रेम से पूछा, क्यों बेटा ! आज तेरी आंखें लाल, मुखड़ा कुम्हलाया हुआ क्या किसी ने तुम को कष्ट दिया है ? प्यारे, खुशहाल ने श्री स्वामी जी के प्यार और सहानुभूति के शब्दों को सुनते ही फूट २ कर रोना आरम्भ कर दिया। श्री स्वामी जी प्यार करें और पूछें पर खुशहाल बेचारा रोवे। अब सारी दुःख मय कथा रोने के रूप में सच्चे गुरु की शरण में बैठा हुआ प्रकट कर रहा है। आह ! धन्य हो ऋषि दयानन्द महाराज ! युग २ में तेरा भला हो। तेरह बार विष के प्याले पी कर भी विष देने वाले को अमृत पिलाया। दीन दुःखियों अनाथों, विधवाओं, अबलाओं की आवाज़ को सुना, सच्चे माता पिता बन कर उनको सन्मार्ग पर चलाया फिर क्यों न तेरे पुजारी तेरे सद्गुणों की धारणा करें।

प्यारे ! श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज तो अग्निरूप ही थे, जहां अग्नि हो वहाँ जीवन होता है, उदारता, त्याग, पवित्रता होती है पतित से पतित आये, पवित्र हो जाय । अब स्वामी जी महाराज ने खाना, खाना छोड़ दिया और खुशहाल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के दुःख में दुःखी हो गये। अब मानो खुशहाल सच्ची माता की गोद में पहुँच गया है। अब खुशहाल ने अपनी पहले की सारी अवस्था और आज की बीती अवस्था प्रकट की और फिर ज़ार २ रोना आरम्भ कर दिया। स्वामी जी ने प्यार किया, जल पिलाया और कहा, प्यारे बस अब तेरे संकट कट गये हैं अब तू सच्चा खुशहाल बन जायगा और कहा कि एक टुकड़ा काग़ज़ का लाओ। खुशहाल ने जेब में देखा तो काग़ज़ का टुकड़ा साफ मिल गया। स्वामी जी महाराज की भेंट किया। स्वामी जी महाराज ने रूल पेन्सिल उठाई, काग़ज़ पर गायत्री मन्त्र लिख दिया जो निम्न प्रकार है।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्॥

और कहा, खुशहाल! यह गुरु मन्त्र है। रात के तीन बजे उठ कर जब कि तुम्हारे माता पिता सोते हों, तुम गायत्री मन्त्र का जाप प्रतिदिन शुरू कर दो। बस तेरी बुद्धि का विकास होगा तेरी बुद्धि ज्ञान युक्त हो जायगी तेरे सर्वसंकट दूर हो कर जैसा तेरे माता पिता ने तेरा नाम रखा है, वैसा तू खुशहाल, निहाल बन जायगा।

प्यारे! खुशहाल ने मन्त्र लिखा हुआ ले लिया। श्री स्वामी जी महाराज ने भोजन किया तो खुशहाल नमस्कार कर आशीर्वाद ले कर बरतन उठा स्वामी जी से विदा हुआ और घर पहुंचा। रात को उठ कर तीन बजे गायत्री का जाप आरम्भ कर दिया। जाप करते २ दो तीन मास के पश्चात बुद्धि का विकास होने लगा और पाठ खूब कण्ठ होनेलगा। अब स्कूल की बेंच

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नीचे से निकल गई। ६ मास के बाद क्लास का मानीटर बन गया। अब माता पिता का प्यार और मास्टर भी खुश होने लगे। अब खुशहाल, खुशहाल बन रहा है, खुशहाल परीक्षा में पास होकर ३०) रु० का सेवक उप सम्पादक आर्य गज़ट समाचार पत्र का बन गया। अब खुशहाल से खुशहाल चन्द बन गये, फिर सम्पादक बने। बाद में "मिलाप" पत्र जारी किया अब लाखों रुपये के स्वामी बन गये। धर्म पत्नी मिली तो धर्म युक्त, सन्तान भगवान ने दी तो देशभक्त। संग मिला तो महान् आत्माओं का, अब लाला खुशहाल चन्द खुर्सन्द बन गए। अब तप त्याग का जीवन बिताने लगे। हैदराबाद सत्याग्रह के डिक्टेटर बन कर गये! जेल में जो सत्याग्रह करने वालों की सेवा की और रक्षा की और स्वयं तप किया, तो जेल में ही भगवान् ने 'महात्मा का अधिकार दे दिया अब महात्मा खुशहाल चन्द खुरसन्द बन गए। कहावत है 'जो जागता है, सो पाता है। अब महात्मा खुशहाल चन्द जी वेद भक्त, वेद माता के सच्चे पुजारी, अज्ञातवास करने लगे। शरणागत ने शरण में ले लिया, उसने वह सच्चा रूप दे दिया। क्या? अग्नि का बाना पहना दिया अब महात्मा आनन्द 'स्वामी जी महाराज' हो गये हैं। अब जहां जाते हैं, वेद की अमृत वाणी कल्याणी का गीत गाते २ दीवाने मस्ताने हो कर आनन्द मग्न हो जाते हैं और श्रोता नर नारी इस अमृत रस से तृप्त हो कर दर्शनों के वास्ते जहां तहां से पुकार आती है, समय प्रदान करें।

प्यारे! स्वामी जी ने यह आप बीती लाला गणेश दास जी प्रोप्राईटर भारत ग्लास कम्पनी, कुतुब रोड देहली के मकान पर जवाहर नगर में जिसका नाम प्रयाग निकेतन है, उपदेश में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सुनाई। अन्त में आप ने कहा कि तीन वेदों ने तो इस गायत्री मन्त्र का गीत गाया, चौथे अथर्व वेद ने इस मन्त्र का महात्म गान किया। आज मेरी आयु ६८ वर्ष की हो चुकी है, गोया ५८ वर्ष मुझे इस माता का पूजन करते २ बीत गये, पर इस माता ने सच मुच मेरे नाम खुशहाल को सार्थक खुशहाल बना दिया है। पर यहां तक नहीं, अथर्व वेद कां १९ सू ७१ मं० १ में जो मन्त्र आया, वह इस प्रकार है:—

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं, प्रजां, पशुम्, कीर्तिं, द्रविणं ब्रह्म वर्चसं मह्यम् दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

कि गायत्री माता अपने उपासक को आयु, प्राण, सन्तान, नौकर चाकर, पशु धन, यश, सम्पत्ति और ब्रह्म तेज प्रदान कर के प्रभु चरणों में पहुंचा देती है।

इस गायत्री माता ने मुझ मूढ़ बुद्धि अज्ञानी को शुद्धबुद्धि प्रदान की और ज्ञान मार्ग दिखाया आयु, स्वास्थ, सन्तान, पशु, गाय, दूध धन, अन्न यश कीर्ति, अपना भक्ति रस, अन्तिम इस वेद माता का जो आदेश था वह मुझे वेष पहना दिया, एक घर का पुजारी था, अब विश्व का पुजारी बना दिया।

प्यारे! आओ इस गायत्री माता की शरण में अमृत समय में जाग कर अपनी बुद्धि को शुद्ध और निर्मल बनाओ। मृत से अमृत को प्राप्त करो, यही गुरु मन्त्र है इस को वेद मुख माता तथा सावित्री कहते हैं, जो सूक्ष्म से शून्य अवस्था में रक्षा करती है। और भगवान् का साक्षात् कराती है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इस समय स्वामी जी गंगोत्री की यात्रा करते फिरते हैं, और यह गीत गाते फिरते हैं।

गीत

हो गया आनन्द दुनियां, को रिझा कर क्या करूं
दिल प्रकाशित हो तो, दीपक राग गाकर क्या करूं
जल गया अज्ञान का, वह जाल अग्नि ज्ञान से
खुद बुझा जाता है, अब इस को बुझा कर क्या करूं

खुल गया जिस पे राज़ पिन्हानी
हेच समझे वह ऐश सुलतानी

प्यारे पाठकगण—अब आप सोचें विचारें कि खुशहाल की बिगड़ी कला किस ने बनाई ? क्या स्कूल मास्टरों की मार पीट ने या मास्टरों की टियूशन रखने से, या जैसे कि आजकल स्कूल में जुर्माना लगाया जाता है उससे बना, या पिता के पीटने और माता के झाड़ झंकार से बनी नहीं, हरगिज़ नहीं, यह बिगड़ी कला अतिथि सेवा करने से बनी। ईयां रा चे बियां। 'प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्' अर्थात्—प्रत्यक्ष में प्रमाण कहां।

पाठकगण ! ऋषि दयानन्द जी महाराज जब उपदेशकों को प्रचारार्थ भेजते थे तब समाज के अधिकारियों को पहले सूचना देते थे पण्डित जो आ रहे हैं इन का स्वागत करो और उपदेशकों को यह आदेश करते कि आर्य समाज मन्दिर में जा कर पहले पहल उपासनालय की पवित्रताई शुद्धताई को देखो फिर आर्य पुरुषों, अधिकारियों के व्यवहार आचार का निरीक्षण करो और फिर गृहस्थियों के गृहपरिवार में जाकर उनके परिवार में बैठ कर उनके आहार का निरीक्षण करो, जो जो त्रुटियां हों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उनके दूर करने का साधन बताओ और देखो कि उस परिवार में सम्मिलित सन्ध्या, हवन, वेद, स्वाध्याय नित्य होता है यदि नहीं होता तो पहले यह कर्म कराओ, नित्य-प्रति पञ्चयज्ञों के करने का उन्हें उपदेश करो पश्चात् भोजन भोजनालय में करो, भोजन को भजन के वास्ते करो, तुम्हारी प्रत्येक क्रिया आदर्श रूप हो, शास्त्रकारों ने लिखा है:—

जीवन मुमुक्तं निश्चय उपदेशः

ऋषि दयानन्द महाराज जब वेदभाष्य करा रहे थे तो भाष्य लिखने वाले पण्डितों को भोजन अपने यहां कराते थे। एक दिन पण्डितों ने ऋषि से प्रार्थना की महाराज! आप जितना व्यय हमारे भोजन पर कराते हैं उसका आधा दाम हमें दे दिया करें हम भोजन अपने घर से कर आया करेंगे आधा दाम आप को बच जाया करेगा। तब ऋषि ने उत्तर दिया प्यारे! यह वेद की अमृत-पवित्र वाणी है जिस का भाष्य तुम लिख रहे हो, इस के वास्ते आहार भी सात्विक करना होता है बिना आहार की शुद्धि के बुद्धि शुद्ध नहीं हो सकती। शुद्ध बुद्धि के बिना शुद्ध विचार, शुद्ध आचार नहीं हो सकता। गधे को छान (भुसी) खिलाया जाय तो वह लीद पिशाब पैदा करेगा यदि वही छान गौ को खिलाया जाय तो वह दूध उत्पन्न करेगी।

प्यारे! अतिथि सत्कार अतिथि पूजा उत्तम पूजा कही गई है। अग्नि को अतिथि शब्द से पुकारा गया है। जैसे अग्नि में जो वस्तु डाली जाती है वह वायु को दे देती है, वायु वर्षा के अर्पण कर देती है, वर्षा पृथ्वी को अर्पण कर देती है पृथ्वी ने एक एक दाना बीज लिया अनेकों फल उत्पन्न हो गये जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्राणिमात्र के अर्पण कर दिये। ऐसे ही अतिथि को खिलाने वाला माला माल हो जाता है।

अतिथियों का सत्कार करना गृहस्थियों का परम कर्त्तव्य है। घर में आये हुए शत्रु का भी यथा योग्य सत्कार करना चाहिये। आसन, जल, अन्न, मधुर वाणी तथा ठिकाना यथा शक्ति अतिथि का सत्कार करे। प्रथम तो अन्नादि से सत्कार करे, अन्न न हो तो बैठने को आसन ही दे। यदि आसन न हो तो भूमि पर बैठने के लिए मधुर वाणी से प्रार्थना करे खाने के योग्य कोई पदार्थ देने के लिये तैयार न हो तो जल ही देकर सत्कार करो।

हमारे वेद शास्त्र अतिथि सत्कार आदि से भरे पड़े हैं। न जाने कब कौन हमारे द्वार पर आ जावे, कभी कोई विपत्ति में ग्रस्त हुआ आ जाता है। युधिष्ठर आदि की गाथायें आप ने पढ़ी होंगी। बन में मारे मारे फिरते थे, ऐसे भी महात्मा कभी कभी हमारे द्वार पर अतिथि बनकर आ जाते हैं। शास्त्र तो यहां तक कहता है कि कोई नीच भी अतिथि घर पर आ जाय तो उसका भी यथायोग्य सत्कार करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

एक फारसी के कवि ने लिखा है:—

हासिल न शवद तुरा रज़ाए, ता खातिरे बन्दगान न जोई।
ख्वाही कि खुदाये वर तो वख्शद, बा खल्के खुदा कुन निकोई॥

अर्थात् जब तक तू इन्सान की दिलजोई नहीं करता, अपने मालिक की रज़ा हासिल नहीं कर सकता। अगर चाहता है कि परमात्मा तुझ पर रहमत करे तो तू उसके बन्दों से नेकी कर।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गुरु नानक देव ने लिखा है:—

दमड़ा उसी का, जो खर्चे और खाए
देवे दिलाए, रज़ाए खुदाए ।
होता न राखे, अकेला न खाए
कहे गुरु नानक, वही बहिश्त जाए ॥ ओ३म् शम्

अन्तिम निवेदन

विद्वानों, साधु महात्माओं तथा सन्यासी महानुभावों की सेवा में

नम्र निवेदन

आदरणीय महानुभावों ! मैंने इस पुस्तक 'अतिथि यज्ञ प्रसाद' में जो कुछ लिखा है, प्रभु प्रेरणा से सत्य भावना से लिखा है। वर्तमान संसार की गति को आप स्वयं देख और अनुभव कर रहे होंगे कि किस ओर जा रही है। चारों ओर त्राहि माम्, त्राहिमाम् हो रहा है। अब इस बिगाड़ का संवार सुधार कैसे हो सकता है। उसका सुधार केवल आप महानुभावों के पवित्र जीवन से हो सकता है। निम्नलिखित विचार श्री सेवा में रखता हूँ, यदि इन पर आचरण हो जाय, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि संसार में रामराज्य ही उत्पन्न हो सकता है।

१—ब्रह्म मुहूर्त्त में जागना, जाप, संध्या, वेद स्वाध्याय, पांच यज्ञों का स्वयं करना।

२—मांस, मदिरा, ब्लैक की कमाई वाले घूंस लेने वाले, दुर्व्यवहारी के यहाँ भोजन न करना। यदि वह ऐसे दूषण का परित्याग करदें तो भोजन करलें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

३—जिस गृह में अग्निहोत्र, सन्ध्योपासना न होती हो, वहां भी भोजन न करना। किन्तु नित्य कर्म करा कर पश्चात् भोजन करना।

४—गृहस्थी के घर परिवार में जाकर पहले सदुपदेश करना, सुधार करना और फिर भोजन करना।

५—गृहस्थी अपनी सामर्थ्यानुसार जो श्रद्धा से भोजन भेंट करें। उसी को स्वीकार करना।

६—भोजन समय मौन, शान्त चित्त रहना।

७—भोजन को भजन के लिए खाना चाहिये। स्वादिष्ट भोजन आ जाने पर लोभ न करना, इससे गृहस्थी के हृदय में अश्रद्धा उत्पन्न हो जावेगी।

८—अपना व्यवहार, आहार, विचार, आचार शुद्ध पवित्र रखना, क्योंकि आप गृहस्थियों के वास्ते आदर्श गुरु हैं।

९—भोजन भोजनशाला में किया जाय ताकि गृहस्थी के घर की पवित्रता, शुद्धताई का आपको ज्ञान हो सके और त्रुटियों को आप दूर करा सकें।

१०—मंदिर में सर्वप्रथम पवित्रता का निरीक्षण करें। वेदी बनी हुई हो। जिस सद्पुस्तक की प्रतिदिन कथा हो, वह वेदी पर धरी रहे।

११—समाज मन्दिर में सिवाय भगवत् पूजा, सन्ध्या हवन, स्वाध्याय तथा सत्संग के और कोई कार्य न किया जाय, न पाठशाला न स्कूल लगाया जाय। पूजा के स्थान को पूजार्थ लगाया जाय।

१२—आचार हीन वैदिक धर्म में आस्था न रखने वाले अधर्म से अर्थ कमाने वाले मांस शराब इत्यादि सेवन करने वाले

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समाज का सभासद् न बनाया जाय।

१३—आर्य समाज का सभासद बनाने से पूर्व न्यून से न्यून एक वर्ष पूर्व सहायक रूप में रखा जाय और यह नियम प्रत्येक के लिए अनिवार्य हो।

१४—उत्सवों का कार्यक्रम केवल प्रातः और सायं हुआ करे। प्रातः ५ से ८ तक, सायं ५ से १० तक। इस अवान्तर में प्रत्येक को सन्ध्या हवन में शामिल होकर भाग लेना चाहिये। रात्रि के १० बजे बाद तो कोई भी कार्यवाही न की जाय।

१५—पारिवारिक सत्संगों की प्रथा को जारी किया जाय।

१६—प्रत्येक वक्ता को क्रियात्मक जीवन बना कर ही भाषण देने का अधिकार होगा।

१७—अधर्म से अर्थ कमाने वाले का दान स्वीकार न किया जाय। और न मांगा जाय।

१८—प्रत्येक घर में उपासना के स्थान विशेष नियुक्त किये जायें।

१९—जो अग्निहोत्र, सन्ध्या दैनिक न करें उन्हें समाज का सदस्य न बनाया जाये।

२०—सभा के अधिकारी भी इन बातों का विशेष ध्यान रखते हुये आचरण करें।

भवदीय

ब्रह्मानन्द स्वामी

C/o भारत ग्लास कम्पनी

सदर बाजार

देहली

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पुस्तक संख्या सूची

ब्रह्म यज्ञ प्रसाद	३०००
देवयज्ञ प्रसाद	६०००
पितृ यज्ञ प्रसाद	३०००
अतिथि यज्ञ प्रसाद	२०००
यज्ञ प्रसाद	४०००
ब्रह्म प्रसाद	१०००
भगवद् यज्ञ प्रसाद	१०००
नारी कर्त्तव्य प्रसाद	१०००
प्रेम सुमन प्रसाद	१०००
मौन यज्ञ प्रसाद	२०००
अमृत प्रसाद	१०००
पारिवाकि सत्संग प्रसाद	१७०००
	कुल ४२०००

पञ्च-नद प्रेस लिमिटिड अमृतसर में
मुद्रक—सुरेन्द्र कुमार कपूर द्वारा मुद्रित

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri